[राजस्थान माध्यमिक शिक्षा मंडल रै वैकल्पिक राजस्थानी साहित्य विषय
री माध्यमिक कक्षावां सारू पाठ्यपुस्तक]

राजस्थानी गद्य संग्रह

सम्पादक
डॉ० नरेन्द्र भानावत
प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

[माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान के अधिकार द्वारा प्रकाशित]

१९८२

प्रकाशक
स्टूडैण्ट ब्रादर्स एण्ड कम्पनी
भरतपुर (राज०)

प्रकाशक :

स्टूडेण्ट ब्रादर्स एन्ड कम्पनी

फोन नं० दुकान २०३६

फोन नं० निवास २३२६

द्वितीय संस्करण १००० प्रति

दो सबद

राजस्थानी गद्य रो ओ संकळन राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड रै वैकल्पिक राजस्थानी साहित्य विषय री माध्यमिक कक्षावां सारू निर्धारित पाठ्यक्रम री अपेक्षावां नै ध्यान में राख'र तैयार करीजग्यो है। इणमें राजस्थानी गद्य री प्रमुख विधावां—निबन्ध, कहाणी, संस्मरण-रेखाचित्र, लोककथा, एकांकी आदि नै समुचित प्रतिनिधित्व दियो है।

पाठां रै चुणाव में रोचकता रै सागै इण बात रो पूरो ध्यान राखीजग्यो है कै इणां रै माध्यम सूं पढ़ाई-लिखाई रा वै सगळा उद्देश्य पूरा हुई सकै जै इण कक्षावां सारू बोर्ड निर्धारित करया है। इण सकळन मे अैड़ा पाठ लिरीज्या है जै छात्र-छात्रावां में ज्ञान री बढोतरी रै सागै-सागै युग-चेतणा रा भाव जगावै अर राजस्थानी लोकजीवण तथा भारतीय संस्कृति सूं गाढ़ी ओळखाण करावै।

संकळन रा पाठ रूप अर शैली री द्रिस्टि सूं भांत-भंतीला है। इणां रै अध्ययन सूं छात्र-छात्रावां नै राजस्थानी रै प्रमुख गद्य लेखकां री शैली सूं परिचय प्राप्त करणै रो औसर मिलसी। निबन्धां मे 'अळी रो मेवो-मतीरो' (श्री तेजाराम स्वामी) अर 'पीपल रो गट्टो' (श्री विद्याधर शास्त्री) ललित, 'लगन' (श्री श्रीलाल नथमल जोशी) विचारात्मक, 'हाडौती में गणेस-पूजा' (डॉ० नाथूलाल पाठक) 'राजस्थान री लोककळावां' (डा० महेन्द्र भानावत) अर 'राजस्थान अर उण रो जीवण दरसण' (श्री सुमेर सिंह शेखावत) सांस्कृतिक-भावात्मक 'तत्वां री कथा' (श्री पुरुषोत्तमदास स्वामी) वैज्ञानिक, 'साहित्य रो प्रयोजन' (श्री नरोत्तमदास स्वामी) अर 'कवि अर कविता' (संकलित) साहित्यिक तथा 'मुंसीजी रो सुपनो' (डा० मनोहर शर्मा) अर 'देसळाई' (श्री बुद्धिप्रकाश पारीक) व्यंग्यात्मक निबन्ध है। 'धरती रा फूल : गिगन रा तारा' (श्री श्रीलाल मिश्र) वीर चरित अर 'म्हारी जापान यात्रा' (राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत) यात्रा वरणन रा उदाहरण है। निबन्धां रै अलावा बीजी विधावां में 'बरफ आळो' (श्री शिवराज छंगाणी) अर 'रुच्यो खल्ला मांजणियो' (श्री मुरलीधर व्यास) संस्मरणात्मक रेखाचित्र है। मुरलीधर

री ईमानदारी' (श्री शिवचन्द भरतिया) 'कनक सुन्दर' उपन्यास री अंश है। 'देस भगत नामासा' (डा० लाराचन्द्र मंडारी) एकांकी अर 'उडीक' (श्री नृसिंह राजपुरोहित) कहाणी रा उदाहरण है।

राजस्थानी रो गद्य साहित्य लोककथावां रै रूप में मोकळो मिलै। इण साहित्य अर लोक संस्कृति सूं परिचय कराणै रै उद्देश्य सूं संकलन में 'पाव सीख' (संकळित) अर 'लेग्या वोय नै ल्याऊं चार' (श्री विजयदान देथा) जैडी लोक कथावां भी लिरीजी है। 'विरमाजी रानै डेपुटेसन' (श्री भवरलाल नाहटा) रूपकात्मक कथा रो उदाहरण है। 'गळगचिया' (श्री कन्हैयालाल सेठिया) गद्य-काव्य है।

राजस्थानी रो पुराणो गद्य इतिहास रो घणकारी बातां अर घटनावां री जाणकारी देवै। इण गद्य रै रूप अर विषय सूं छात्र-छात्रावां नै परिचय करणै रै उद्देश्य सूं इण संकलन मे दो पाठ दिया है—'हाडै सूरजमल री बात' (मुहणोत नैणसी) अर 'वचनिका राठोड रतनसिंघ-महेसदासोत री' (खिड़ियो जग्गो) रो अंश।

अै पाठ जों रूप में छप्योड़ा मिल्या उणो रूप में संकळित करीज्या है। आपणी तरफ सूं कोई विशेष फेरबदल नी करी है। राजस्थानी भाषा अलग अलग क्षेत्रां में आपणी बोल्यां में बोली जावै। इण कारण सूं वर्तनी में जे एकरूपता नीं मिलै तो कोई अचरज री बात कोनी।

पाठां रो क्रम बोर्ड रै निर्देशां मुजब सरळपणां सूं कठिनाई कानै राखी-ज्यां है। सरुआत में सरळ पाठ है अर हौलै हौलै वै कठिन हुवता गया है। अध्यापकां नै चाहिजै कै पढावती वगत वै पाठां रै ऐतिहासिक क्रम री जाणकारी भी छात्र-छात्रावां ने देवै।

हरेक पाठ रै सरु मे लेखक रो संक्षिप्त जीवण अर साहित्यिक परिचय तथा संकळित पाठ रो मूल भाव दियो है। इण रै पढ़ण सू पाठ्यविषय नै समझण मे मदद मिलसी।

हरेक पाठ रै आखिर में अभ्यास सारू प्रश्न दिया है। अै प्रश्न तीन भागां में बंटियोड़ा है-भाषा सम्बन्धी, विषयवस्तु सम्बन्धी तथा रचना, समालोचना अर अनुभव-विस्तार सम्बन्धी प्रश्नां में सबद-रचना, अरथ-भेद अर व्यावहा-

रिक व्याकरण सम्बन्धी प्रश्न है। इणां में कुछेक प्रश्न वस्तुनिष्ठ भी है। विषय-वस्तु सम्बन्धी प्रश्नां में हरेक पाठ पर विषय सूं सम्बन्धित ८-१० वस्तुनिष्ठ, लघु-उत्तरात्मक अर निबन्धात्मक प्रश्न है। अैं प्रश्न ज्ञान, अभि-व्यक्ति, अर्थग्रहण आदि विभिन्न उद्देश्यां नै ध्यान में राख'र बणायोड़ा है। इणा सूं पूरो विषय स्पष्ट हुई जावै। रचना, समालोचना अर अनुभव विस्तार सम्बन्धी प्रश्नां में हरेक पाठ पर ४-५ प्रश्न दिया है। अै प्रश्न समालोचना अर मौलिकता रै उद्देश्य नै ध्यान में राख'र बणायोड़ा है। मौलिक अभ्यास कार्य करणै में इणां सूं मदद मिलसी।

पुस्तक रै सरू में एक भूमिका दी है, जिणमें राजस्थानी साहित्य अर राजस्थानी गद्य रो परिचय दियो है। गद्य रै परिचय में इण रै पुराणै अर नूंवे साहित्य री ओळखाण कराई है।

पुस्तक रै आखिर में दो परिशिष्ट दिया है। पैलो परिशिष्ट राजस्थानी कहावतां अर-मुहावरा सूं सम्बन्ध राखै। राजस्थानी साहित्य लोकजीवण रो साहित्य है अर उणमें कहावतां तथा मुहावरां रो वेसी प्रयोग हुवै इण प्रयोग सूं विषय घणो स्पष्ट अर प्रभावी बण जावै। कहावतां अर मुहावरां रै सागै उणां रा अरथ भी दिया है। आप अरथ समझ'र आपरै लेखण अर जीवण-व्यवहार मे उणा रो प्रयोग करणरी कोसिस करो। दूजै परिशिष्ट में पाठवार कठिन सबदां रा अरथ अर टिप्पणीयां दी है। इण सूं पाठ नै समझण में मदद मिलसी।

भूमिका, कहावतां-मुहावरा अर कठिण सबदां रै अरथ रै आखिर में सदर्भ ग्रंथां री सूची दियोड़ी है। जै आप विस्तार में जाणकारी चावो तो इण ग्रंथा सूं मदद मिलसी।

संकळित पाठां रै लेखकां अर प्रकाशकां रै प्रति म्है घणी मान सूं आभार प्रगट करूं जै आपरी रचनावां इण संकलन मे लैण खातर मंजूरी दी।

म्हनै पूरो विश्वास है कै औ संकळन बोर्ड रा निर्धारित लक्ष्यां नै पूरा करण में मददगार बणसी अर राजस्थानी रै पठण-पाठण मे काम आसी।

— सम्पादक

विगत

भूमिका

परिशिष्ट

भूमिका

क. राजस्थानी साहित्य :

राजस्थानी साहित्य घणो पुराणो, भांत-भंतीलो अर मोकळो है। आठारा साहित्यकार आपणै अनोखे आतमबळिदान अर त्याग-तपस्या सूं इण नै सिरज्यो है। बी कोरा लिखार ही नीं हा, तरवार रा भी घणी हा। अठारी कुदरत अर सांस्कृतिक परम्पराँवां सूं इण साहित्य में वीर, भगति अर सिणगार भावनावां री त्रिवेणी बैंवती रैयी है। नूंवे युग में आ'र इण साहित्य में सामाजिक चेतना अर आर्थिक संघर्ष सूं उत्पन्न समस्यां रो-अंकन हुयो।

राजस्थान साहित्य सिरजणा मे ईज योग नी दियो। साहित्य री रूखाळी करण खातर अठै अनेक पोथियां रा भडार भी थरपीज्या। इणं भण्डारां में अणगिणत हाथ री लिखियोड़ी पोथियां वस्ता मांय बंध्योडी है। आज भी घणकरा कवि अर लेखक उजास मिलण री बात उड़ीकै है।

शिष्ट साहित्य रै सागै-सागै राजस्थान रो लोक साहित्य भी खासा मोटो अर भांत-भंतीलो है। औ लोक जीवण रै अणभवां रो नीचोड़ है। लोक गाथां, लोकगीतां, लोक-कथावां अर कहावता रे रूप में ओ लोक साहित्य मोटा आदर्शां खातर जीवण-मरण री प्रेरणा देवे है। शिष्ट साहित्य नै इण सूं घणी मदद मिलीं है।

ख. राजस्थानी रो गद्य साहित्य :

राजस्थानी साहित्य रै पद्य री जियां उण रो गद्य भी घणो समृद्ध पुराणो अप भांत-भांत रो है। भारत री बीजी भाषावां में इतो पुराणो गद्य नी मिलै जितो राजस्थानी मे मिलै।

१. पुराणो गद्य :

राजस्थानी रो पुराणो गद्य धार्मिक! ऐतिहासिक अर लोककथावां (वातां) रै रूप मे मिलै।

राजस्थानी रो सबसूं पुराणो गद्य धामिक गद्य है ' ओ जैन विद्वानों रो लिखियोडो है। जैन साधु लोगां नै उपदेस देवण खातर घणकारी धरमकथावां लिखी। राजस्थानी गद्य रै विकास मे इण धरम कथावां रो बडो हाथ है। अै कथावां ज्यादातर जैन धरम रा प्रमुख धार्मिक ग्रंथां री व्याख्यावां रै सागै, मूळ पद्यां मे आयोडी सिद्धान्तिक बातां नै स्पष्ट करण खातर उदाहरण रूप मे लिखिजगी। अैडी रचनावां 'बालावबोध' नाम सूं प्रसिद्ध हुई।

राजस्थानी रो ऐतिहासिक गद्य घणो महत्व रो है। ओ गद्य ख्यात, बात, गुर्वावली, पट्टावली, वंशावली दफ्तर वही, पट्टापरवाना, आदि विविध रूपां मे मिलै। ख्यात इतिहासपरक गद्य रो प्रोढ रूप है। इतिहासपरक ख्यात मे किणी एक राजवंश रै राजावां रो जनम सूं ले'र मरण तांई कालक्रम सूं वरणन हुवै। 'दयालदास री ख्यात' इण वरग री प्रतिनिधि रचना है। बारतापरक ख्यात री प्रतिनिधि रचना 'मुहता नैणसी री ख्यात' है। इणमे राजस्थान रै विविध राजवंसां सूं सम्बन्धित बातां दियोडी है। अै बातां विसुद्ध ऐतिहासिक बातां है। जिणरो उद्देश्य विचित्र घटनावा रो चित्रण अर मनोरंजन नी होय'र तथ्य-निरूपण अर इतिहास लेखण है। गुर्वावली में गुरु-परम्परा रो वरणन हुवै। पट्टावली मे गच्छ विशेष रै पट्टधर आचार्य रो जनम, दीक्षा, साधनाकाल, विहार, संथारो तथा उणां रै शिष्यां रो विवरण हुवै। वंशावलियों में राजावां, जागीरदारां, श्रावकां आदि रै वंश रो परिचय हुवै। दफ्तरवही मे रोजनामचे जिया दैनिक घटनावां रो लेखो-जोखो हुवै। राजावां कानी सूं जागीरी रो अधिकार पत्र अर उण रो विवरण 'पट्टो' तथा उणरो राजकीय आज्ञा-पत्र 'परवानो' कहीजै।

लोक कथावां (बातां) रे रूप में राजस्थानी रो घणो समृद्ध गद्य मिलै। इण बातां री मोटी खासीयत स्थानीय वातावरण री रंगत है। अै कथावां टाबरां सूं लगाय नै बडेरा री अवस्था अर रुचि मुजब मोकळी मिलै। इणमें रोचकता अर सीख दोन्यूं हुवै। जीवण रै सगळा पक्षांमाथै अै बातां मिलै। तीज तेवार अर व्रतां सूं सम्बन्धित कथावां भी मिलै। इणा मे परवार अर समाज रै जीवण री मंगल कामना व्यापोडी है। जै शास्त्रां री कथावां सूं

न्यारी है। इणां मे लोकजीवण रो अणभोव बोलै। अै कथावां गांव रै चोपाळ में अर धूणी रै ओळै-दोळै कहीजै सुणीजै। इणा रै कैवण री खास विधि हुवै। कई बात-कैवणियां इण कळा मांय माहिर हुवै। इणांरी कथणी मांय प्रवाह अर चितारणा रो खास गुण हुवै जिकै सूं सांभळणिया रो ध्यान आदि सूं अंत ताई एक सो बणियो रैवै। इण वातां में ठौड-ठौड प्रसग रै मुजब पद्य रो प्रयोग भी होवतो रैवै जिकै सूं घणी सरसता आय जावै। घणै पुराणै वगत सूं अे वातां लिखजती रैयी है पण फेरूं ई मुखजबानी वातां मोकळी है।

२. नूंवो गद्य

पेलो चरण :

राजस्थानी रो नूंवो गद्य पुराणे गद्य सूं रूप अर शैली मे न्यारो है। नूंवे गद्य रो प्रारम्भिक विकास राष्ट्रीय भावना, आर्यसमाज रै सुधारवादी आन्दोलण अर पच्छिमी देसां सू लगाव री पृष्टभूमि मे हुयो। इण गद्य री सरुआत करणिया हा—श्री शिवचन्द्र भरतिया अर इणा रा सहयोगी श्री ब्रिजलाल वियाणी, सत्यवक्ता, धनुर्धारी, अनंतलाल कोठारी आदि। अै ज्यादातर महाराष्ट्र, बंगाल, गुजरात आदि परदेसा मे आपरो वारैवार चलावता हा। उठै रैय'र आ लोगां महसूस कियो कै इणारो सामाजिक जीवण बीजा लोगां री तुलणा में पिछड्योड़ो है अर घणकारी कुरीतियां सूं जकड्योड़ो है। समाज नै सुधारण री भावनां सूं प्रेरित होय'र इणाँ राजस्थानी भाषा में उपन्यास, नाटक अर निबन्ध लिखण रो श्रीगणेस कर्‌यो।

उपन्यासां मे श्री भरतिया जी रो कनकसुन्दर अर श्री श्रीनारायण अग्रवाल रो 'चम्पा' उलेखजोग है। अै दोन्यूं सामाजिक उपन्यास है अर सुधारवादी भावना सूं लिखियोड़ा है। नाटका मे सामाजिक, ऐतिहासिक अर पौराणिक नाटक लिखिजग्या। सामाजिक नाटका में प्रमुख है—श्री शिवचन्द भरतिया रा 'केसर विलास', फाटका जंजाल', 'बुढापे री सगाई', श्री भगवतीप्रसाद दारूका रा 'वृद्ध विवाह', बाल विवाह', 'ढलती फिरती छाया।' ऐतिहासिक नाटका मे श्री श्री ब्रिजलाल बियाणी रो 'विजया दसमी' तथा श्री श्रीनारायण अग्रवाल रो महाभारत रो श्री गणेस' उलेखजोग है। निबन्धा

री सरुआत भी श्री भरतिया जी कनक सुंदर अर 'फाटका जजाळ' री भूमिकावा लिख'र करी। 'मारवाडी वधु', मारवाडी' 'मारवाडी हितकारक', 'पंचराज', 'आगीवाण' आदि पत्र-पत्रिकावा निबन्ध री गति तेज करी। इण चरण रा प्रमुख निबन्ध लेखक हा — श्री ब्रिजलाल बियाणी, धनुर्धारी, सत्य-वक्ता गुलाबचन्द नागोरी, अनन्तलाल कोठारी आदि।

दूजो चरण :

राजस्थानी रै नूवै गद्य रै बीजे चरण रो आरम्भ भारत री आजादी अर राजस्थान रै एकीकरण रै सागै हुवै इण काळ मे साहित्यकारा री द्रिस्टि देस रै नूवै निरमाण अर जीवन संघर्ष पर आय'र टिकी। समाज रो बिचले दरजे रो आदमी, करसो अर कमतरियो उणा रो साहित्य-सिरजणा रो विषय बणियो। समाज रै उपेक्षित लोगा कानी भी इणा री नजर गई। ओ गद्य साहित्य कहाणी, उपन्यास, संस्मरण-रेखाचित्र, नाटक-एकाकी, गद्यकाव्य, निबन्ध आदि विविध विधावा मे मिलै।

कहाणी साहित्य :

कहाणीकारां मे श्री मुरलीधर व्यास, श्री नृसिंह राजपुरोहित, राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत, श्री बैजनाथ पँवार, श्री नानूराम सस्कर्ता, डा० मनोहर शर्मा, श्री विजयदान देथा आदि प्रमख है। श्री मुरलीधर व्यास, 'बरसगांठ' कहाणी सग्रह मे समाज रै उपेक्षित पात्रां नै विषय बणायो है—जियां 'मतीरा आळो', ल दे आळो', कहाणियां रो अत आदर्शवाद मे हुयो। बीजै सग्रह 'इक्केआळो' मे लघु हास्य कथावां है। श्री नृसिह राजपुरोहित री कहाणियां मे आदर्शवाद सूं लगाव नी है। अमर चूनडी' कहाणी-सग्रह में राजस्थानी अर लोक सस्कृति रो आछो चित्रण है। राणी लक्ष्मीकुमारी चूडावत री कहाणियां राजस्थानी लोकगाथावां सूं प्रभावित है। मध्य युग रै सामन्ती जीवण रा भांत-भांत रा चित्र उतारण मे राणी जी नै खासी सफलता मिली है। वरणनात्मकता, रोचकता, वातावरण सिरजण री अनोखी खमता, ठौड-ठौड औसर मुजब लोकगीत अर दूहा रा उद्धरण, ओपती उपमावां अर सरल प्रवाह-पूर्ण भाषा राणी जी री कहाणियां री मोटी-मोटी विशेषतावा है। लोककथावां

नै ई आधार बणा'र घणकारी कहाणियां रा लिखार है श्री विजयदान देथा। इणां री द्रिस्टि ऐतिहासिक पक्ष पर नी टिक'र समाज-शास्त्रीय विवेचन वाली गई है। 'बातां री फुलवाडी' नाम सूं इणां रा केई कहाणी संग्रह प्रकाशित हुआ है। अंधविसवासा अर कुरीतिया रै जाळ मे फंसियोड़ा गांवा नै विषय बणा'र कहाणियां लिखण आळा है—श्री नानूराम संस्कर्ता अर श्री वैजनाथ पंवार। मनोविज्ञान अर व्यंग रे धरातल सूं कहाणिया लिखण आळा मे श्री जगदीससिंघ सिसोदिया, श्री विश्वेसर शर्मा, श्री माणक तिवारी, श्री मूळचन्द 'प्राणेश', श्री रामदेव आचार्य, श्री नृसिंह राजपुरोहित, श्री रामनिवास शर्मा आदि प्रमुख है।

उपन्यास साहित्य :

कहाणिया रै सागै-सागै राजस्थानी भाषा में उपन्यास भी लिखी जग्या है। इणां री पृष्ठभूमि खास तौर सूं सामाजिक अर सांस्कृतिक रेयी है। लोककथावां रै शिल्प सूं भी अै प्रभावित रह्या है। सामाजिक उपन्यासा मे श्री श्रीलाल नथमल जोशी रो 'आभै पटकी' उपन्यास विधवा-विवाह अर अणमेल विवाह सूं सम्बन्धित है। श्री अन्नाराम सुदामा रा महकता काया 'मुळकती धरती' आदर्शवादी उपन्यास है जिणमे देस प्रेम री भावना हिलोरा लेवै। श्री मूलचन्द प्राणेश रे 'परदेसी री गोरड़ी' उपन्यास मे नूंवी व्याही बीनणी रै माध्यम सूं नववधुवां री बेबसी अर परिवार री पीड़ावां री कथा मांडीजगी है। श्री यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र रो 'हू गोरी किण पीव री' राजस्थानी रो एक सफल मनोवैज्ञानिक दार्शनिक उपन्यास है। इणमें जीवण सूं सम्बन्धित केई चिरन्तन प्रश्ना रा उत्तर ढूंढोज्या है। श्री रामदत्त सांकृत्य रो 'आमळदे' उपन्यास सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर लिख्योडो है। 'धोरा रो धोरी' श्री श्रीलाल नथमल जोशी रो जीवनीपरक उपन्यास है। ओ राजस्थानी भाषा अर साहित्य रा खास प्रेमी अर विद्वान इटली रा रैवासी डा० एल. पी. टेसीटोरी रे जीवण नै आधार बण'र लिखिजग्यो है।

संस्मरण-रेखाचित्र :

कथा साहित्य रै सागै-सागै जे संस्मरणात्मक रेखाचित्र राजस्थानी में

लिखीजग्या है जी नाम [illegible] गिणा है । '[illegible]' मे श्री [illegible] नथमल जोशी रा रेखाचित्र नमकीन है उणां में [illegible] पाण रो मार्मिक, [illegible] अर संस्मरण रो आणन्द मिलै । टीप-टोट [illegible] व्यंग री चिलकारियां छूटती वैरै । अठा रा चरित समाज रा मोटा लोगां री [illegible] छोटा लोगां नै ईज समदर्शी री आख्या सूं देख्या है । श्री शिवराज छंगाणी रै 'ओळखाण' मे भी औहा ही रेखाचित्र है । श्री मुरलीधर व्यास अर मोहनलाल पुरोहित रा 'बुना जीवता चितराम' नाम सूं रेखाचित्र छप्या है । इणमे समाज रा छोटा-छोटा काम करणिया लोगां रै मिनखाचार रो चितराम मंडीज्यो है । श्री नवरलाल नाहटा रा संस्मरण अर रेखाचित्र 'बानगी' संग्रह मे छप्या है । नाहटा जी इयां नै घणो अपणायत भाव सूं लिख्या है । जै इणा' रै सागै-सागै रमता चालै, इणा री खास खूबियां नै उभारै अर टीड-टीड व्यंग्य री तीखी मार पण करै ।

नाटक-एकाँकी :

कथा साहित्य री तुलना मे नाटक साहित्य कम लिखीजग्यो है । पूरा नाटक लिखणियां मे श्री भरत व्यास, श्री गिरधारलाल शास्त्री अर आज्ञाचन्द भंडारी रो नाम लिरीजै । इण नाटका री पृष्ठभूमि सामाजिक अर ऐतिहासिक रैयी है । श्री भरत व्यास रा 'ढोला मरवण' अर 'रँगीलो मारवाड़' नाटक खेलवा में घणा सफल रैया है । श्री शास्त्री जी रो 'प्रणवीर प्रताप' अर डा० भंडारी रो 'पन्नाधाय' नाटक चरित्र प्रधान नाटक है । सिनेमा रै प्रचार अर जीवण री भागदौड़ मे समै री कमी रै कारण अबै नाटकां रो स्थान एकाकी लियो है । स्कूलां में भी अबै एकाकी खेलीजै । आकाशवाणी सूं भी झलकियां प्रसारित हुवै है । राजस्थानी भाषा में भी समै री माग पूरी करण नै अठारा लेखक एकांकी लिखरिया है । एकांकी नाटक लिखणियां मे प्रमुख है—श्री गोविन्दलाल माथुर, श्री नागराज, डा० मनोहर शर्मा, डा० नारायणदत्त श्रीमाली, श्री दीनदयाल ओझा, डा० आज्ञाचन्द भण्डारी आदि ।

गद्य काव्य :

गद्य काव्य रै कानी भी राजस्थानी लेखका री निजर गई । श्री चन्द्रसिंघ रा कुछेक गद्य काव्य 'सीप' नाम सूं प्रकाशित हुया । श्री मुरलीधर व्यास

सामाजिक समस्यावां माथै गद्यकाव्य लिखिया । डा० मनोहर शर्मा रा गद्य-काव्य तिमाही पत्रिका 'वरदा' में छपिया । गद्यकाव्य रै क्षेत्र में श्री कन्हैयालाल सेठिया रो नाम विशेष उलेखजोग है । 'गळगचिया' संग्रह में लोक जीवण अर प्रकृति रै तत्वां नै माध्यम वणा'र श्री सेठिया जीवण रा मोकळा अणुभव अर सत्य व्यजित करिया है । अै गद्यकाव्य बातचीत, सम्बोधन अर कथा रे ढंग सूं लिखियोड़ा है ।

निवन्ध साहित्य :

राजस्थानी भाषा रै निवन्ध लेखण नै वढ़ावो देवण रो काम अठारी पत्र-पत्रिकावां कियो । इणां मे प्रमुख है— मरुवाणी' (जयपुर), 'ओळसो' (रतन-गढ़, 'हरावळ' (वम्बई) 'लाडेसर' (कलकत्ता), 'जागती जोत' (वीकानेर) आदि । आकासवाणी सूं विविध विषयां माथै वारतावां प्रसारित होणै सूं भी निवन्ध साहित्य री वढ़ोतरी हुई । राजस्थानी रा अै निवन्ध मोटे रूप सूं चार प्रकार रा है—(१) वरणनात्मक-विवरणात्मक' (२) विचारात्मक, (3) भावात्मक, (4) हास्य- व्यंग्यात्मक :

वरणनात्मक-विवरणात्मक निवन्ध सांस्कृतिक अर साहित्यिक धरातल सूं लिखीजग्या है । सांस्कृतिक धरातल सूं लिखियोड़ा घणकरा निवन्ध व्रत, तीज तैवार अर यात्रा-वृत्त सूं सम्बन्ध राखै । साहित्यिक धरातल सूं लिखियोड़ा घणकरा निवन्ध पुराणै कवियां अर ग्रथां री जाणकारी देवै । विचारात्मक निवन्धां में चिन्तन री प्रधानता हुवै । सामाजिक साहित्यिक आर्थिक, राजनीतिक आदि किणी भी मसला पर लेखक आपणो विचार राख सकै है । भावात्मक निवन्धा में हिवड़ै री कोमल भावनावां रै सागै कल्पना रो मेल अर कवित्व पूर्ण शैली रो होणो जरूरी है । अै ललित निवन्ध भी कही जै । इणां में प्रतीक पद्धति रो भी प्रयोग हुवै । हास्य-व्यंग्यात्मक निवन्धां में युग री कमजोरियां अर विकृतियां रो खाको खीच्यो जावै । कथात्मक अर प्रतीकात्मक शैली रे प्रयोग सूं अैड़ा निवन्ध खासा असरकारी वणै । इणां मे लेखक खुद नै हास्य रो आलम्वन वणा'र आपरी दुर्वलतावा अर असफलतावां रै व्याज सूं युग री कड़वास नै उभारै ।

ऊपर रै विवरण सूं स्पष्ट है कै राजस्थानी रो गद्य युग रै मुताबिक आपणी जरूरतां पूरी करतो थको आगै वधतो रैयो है। इण में नवा विचारां नै वहन करण री आछी क्षमता अर भाषा री सहजी पकड़ है। 'पंचतन्त्र', शैक्सपियर अर रवीन्द्रनाथ ठाकुर री रचनावां रा अनुवाद भी राजस्थानी गद्य में हुया है। राजस्थानी लोक जीवण अर भारतीय संस्कृति री विशेषतावां राजस्थानी गद्य री विविध विधावां में अपणायत लियां निजर हुई है।

—डा० नरेन्द्र भानावत

अध्यापकां सारू संदर्भ-ग्रंथ

१. राजस्थानी गद्य साहित्य उद्भव और विकास : डा० शिवस्वरूप शर्मा 'अचल'

२. आधुनिक राजस्थानी साहित्य, प्रेरणा-स्रोत एव प्रवृत्तियां : डा० किरण चन्द्र नाहटा

३. आधुनिक राजस्थानी साहित्य : श्री भूपतिराम साकरिया

४. राजस्थानी भाषा और साहित्य : डा० मनेतीलाल मेनारिया

५. राजस्थानी भाषा और साहित्य : डा० हीरालाल माहेश्वरी

६. राजस्थानी साहित्य : कुछ प्रवृत्तियां : डा० नरेन्द्र भानावत

७. राजस्थानी गद्य : विकास और प्रकाश : डा० नरेन्द्र भानावत, डा० लक्ष्मी कमल
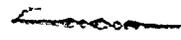
१. बरफ आळो

(श्री शिवराज छंगाणी)

श्री शिवराज छंगाणी रो जनम संवत् १९५५ में बीकानेर में हुयो। आप एम. ए. (हिन्दी अर बी. एड. री परीक्षावां पास करी। अबार आप श्री सादूल पुष्करणा उच्च माध्यमिक विद्यालय, बीकानेर में प्रधानाध्यापक है अर पी. एच. डी. री उपाधि सारू शोध-कार्य में लाग्योड़ा है।

राजस्थानी रा युवा लेखका मे आपरो घणो नाम है। मोकळी पत्र-पत्रिकावा मे आपरी कविता, कहाणी, रेखाचित्र, अनुवाद आदि रचनावां छपती रैवै है। आपरी छप्योड़ी पोथियां में प्रमुख है—'उणियारा' (रेखाचित्र), 'सरजणा' (सम्पादन), थे लीठा घणा' (सम्पादन।

संकळित अंश 'उणियारा' सूं लियोड़ी है। इण संस्मरणात्मक रेखाचित्र मे लेखक बीचली दरजा रै लोगां रै प्रतिनिधि मूळपा री व्यावसायिक सजगता, घर-गिरस्ती री जवाबदेही, साफ नीयत, संनती सुभाव अर हिवड़ै री कोमळ वृत्ति रो स्वाभाविक बरणन कियो है।

बरफ आळो

(१)

'बरफ ऽऽ अे ठंडीठार बरफ मजेदार बरफ, लच्छेदार बरफ' ज्युं ही आ पतळी-तीखी अवाज सुणीजती टाबर-टीगर रमता-खेलता थम जावता। नाठ'र अठीनै-बठीनै सूं बरफ आळै रै गाडै कनै पूग जावता। छोरां रो घीघारियो मड जावतो। कोई पइसै आळो, कोई दो पइसा आळो छतो बणावण सारू कैवतो: कोई छोरो सरबत री सीसी मचकावतो अ'र कोई बरफ रा उछळता टुकड़ा खावण नै हाथ पसारतो। गाडै आळो उथफतो कोनी। वो अेक-अेक टाबर नै मुळकतो देखणो चावतो। ईखातर बरफ रो छतो त्यार कर'र कैवतो- लो बाबू सा'।

दूजोड़ा छोरो इत्तै में बोल'र कैवै, "ओ अेत पइसो लो सन्नै जल्दी घतो दै, मीठो सरबत दै। घणो सारो, मीठो।"

'ह्णो हूं अबार हूं मुसा।' गाडीआळो उथळो देवतो।

ध्यान टाबरा मानी अ'र हाथ बफ करणी माथै गाडो-गाडो चालतो।
पाछ ई मिण्टा मे बाळका री भीड नै आपरै बग मे कर लेवतो।

बाळक देवता सरूप हुवै। आ बात मानण आळो हो मूळसा।

(२)

कद रो ठिगणो, ओछो टागया अ'र मोटी टाग्यां, तीखो नाक अ'र मूछ्यां सफाचट्ट। दाढ़ी तो आवण रो सुवाल ई कोनी उठतो। माथो मतीरै ज्यूं, धोळी टोपी, धोळा गाभा मोटी खादट रा। पगरखी जेट रपियै आळी छाप। घर नूं गरीब अर भोलै सभाव आळो हो मूळसा।

ईरी मीठी बोली सूं टाबरा री टोळी लारै लाग्योड़ी ई रैवती।

गरमी रै दिनां मे ही टाबरां नै मूळसा रा दरसण हुवता। बाको जाणै ओ कठै रैवै, कांई काम करै, ई बात रो टाबरा नै ध्यान राखण री जरूरत कोनी रैवती।

जेक दिन गळी रै वणै ई आदमी इण नै बूझ्यो-अरे मूळसा गरमी-गरमी तो गाडो करै फेरू सरदी अ'र वरखा रै दिना में काई धन्धो-मजूरी चाले ?

मूळसा उथळो देवतो-हा, बाबासा, मैनत अर मजूरी तो पेट खातर करणी ई पड़ै। नई तो म्हारै भी परवार मोकळो है। खेती-बाड़ी खातर म्हारै गाव चल्यो जावूं। वठै दो दाणा-धान निपजै जद ई परवार अ'र गिरस्त रो पालण करीजै।

मूळसा जद आपरै परवार रो नाव लियो बी वखत गळी रै बूढियै पूछ्यो-मूळसा थां रै कित्ता टाबर टींगर है ?

"पामजी राजी है बाबाजी, भगवान रा दियोड़ा तीन छोरा अ'र दो छोर्‌यां है।

-मा-बाप भी अठै है क्या ?

'नई····बाबासा।'

'वै सगला कठै रैवै ?

'उतर परदेस में ।'

बूढ़िये कैयो-चोखो रामजी राजी हवणा ई चाइजै ।

मूळला मुळक'र उथळायो, आपरी किरपा अर माइतां रै पुन रो ई फल है बाबाजी ।

मूळसा बूढ़ा बडेरां नै भी घणो आदर मान सूं देखतो । इयै सैर मे मूळसा रै आ बात कोनी ही के मां-मां रो जायो न देसड़लो परायो ।

मूळसा गिरस्त रो पालण करणो आपरो पैलड़ो फरज समझतो । अण-कारथ बोलण या ठालो बैठणै री बात तो माथै मे ई कोनी लावतो ।

जद कदै इण नै बराबरी आला ठाला बैठ्या या अठीनै-बठीनै डोला मारता दीखता, मूळसा विण नै उपदेश देणो सरू कर देवतो । चोखी अर मन भावती सीख देवतो ।

मिरचियो बड़ो मसखरो हो । बो मूळसा री सीख नै मजाक ई मानतो ।

बी मूळसा नै अेक दिन कैयो मूळसा ! जिको आदमी रोजीना कमा-वण अर खावणो ई सोचै बो मिनख थोड ई होवै, बो तो पसु... .... । हमेसा तो बळध ई बूमता रैवे । थूं भी आ ढोळ जूणी ई भोगे है ।"

मूळसा आ बात सुणर मधरो सीक मुळक्यो अर बोल्यो—"बो मिनख क्या जिको मिनखजमारो लेयर ठालो बैठ्या माख्या मारै । बा सूं तो पसु चोखो जिको आपरै वाछां रो ध्यान पूरो राखै । मालक नै देख'र हुरकै अर आप सारू फायदो बा नै पूगावै ।"

मिरचियै रा होसहवास उडग्या । बो भी उण दिन सूं आपरै धन्धे मे लागग्यो ।

पैंडो करण मे मूळसा कम कोनी उतरतो । रोजीना च्यार-पांच मील चक्कर तो काढतो ई । घर सूं हमेसा आपरै जचियोड़ै रस्ते सूं ईज ढोवतो । रस्तो भी असो जिकै सूं सगळै सै'र रै खास-खास गळियां री परिक्रमा निवळ जावती ।

मूळसा मजूर पक्को । रोजीना रा छः सात रुपियो रै नैड़ा टक्का भेळा कर'र घर में बड़तो ।

बेटां रै ब्याव री जिती चिन्ता कोनी ही उत्ती वेट्यारी । ई रै खुद रै

होवै यानि उत्तर परदेस में दायजे री कुरीत लागी । जिण सेठी रा हाथ पीळा करण सारू ओळा सूं ओल्हा ल्याय पाण हजार कविया रावण करणा ई पड़ै । जवाई ने पलंग, रेडियो, साईकिल, हाथघड़ी अर घर गिरस्ती रो सामान भी देवणो पड़ै । मूळगा आप रै बेटां री सगाई ब्याव खातर दायजो आपरै सगां सूं कोनी लेणो चावता ।

मूळगा ने खावन तो दाळ रोटी रै उपरांत किणी बात री कोनी हो । भणीजवोडी नई हो तो अनुभव सूं गुणीज्योड़ी जरूर हो । सादो खावणो अ'र सादो पैरणो ई जिकै रै जीवण रो नेम । सरदी अर बरखा में आपरै गौर अर गरमी मे बीकानेर री गळियां में टाबरा नैं राजी करण, खेलण कूदावण अर मजूरी करण सारू आवतो ईज ।

पोतीणी कूवैसूं कोट दरवाजे तीरू-बाजार, अ'र पेळ सारूं गैं'र री चक्की निकाळतो आपरी आ पतली अ'र मीठी आवाज सुणावतो 'बरफ ठंडीठार बरफ, मजेदार घरम, लच्छेदार बरफ''''।' बी बगत खेलता-कूदता, रोवता-हसता अ'र नींद लेवता नन्हा बाळक मूळगा री बोली सुण'र गाई कानी भागता ।

हाल भी कदै-कदास बाळकां रै मूंढा मायनूं भी आ सुरीली आवाज सुणीजे "ठण्डीठार बरफ, लच्छेदार बरफ, मजेदार बरफ ।" मिनखांरी माया अ'र बिरखा री छाया ई चोखी लागै, बाकी ससार में कई सार कोनी ।

अभ्यास रा प्रश्न

भाषा सम्बन्धी :

१. नीचे दियोड़ा सबद युगमां री बणघट पर ध्यान दो । लेखण में ऐडा सबद युगम-घणा प्रयोग में आवै । ई मिलता-जुलता अरथ बतावै । आप इसा दो सबद-युगम और बतावो—

पतली-तीखी, टाबर टीगर, रमता-खेलता, खेती-बाड़ी, मैनत-मजूरी, बूढा-बडेरा ।

२. नीचे दियोड़ा सवद 'दार' प्रत्यय जोड़ण सूं वणा है।
आप 'दार' प्रत्यय लगा'र दो नुंवा सवद और वणावो—
ठण्डोदार, मजेदार लच्छेदार, ईमानदार।

३. इण सवदां मे किसो सवद उपसर्ग सूं वण्योड़ो नीं है?
(क) परिक्रमा। (ख) कुरीत।
(ग) अनुभव। (घ) अणकारथ।
(ङ) आदमी। ( )

४. नीचे दियोड़ा मुहावरा नै आपणा वाक्यां मे इण भांत प्रयोग करो कै अरथ स्पष्ट हुई जावै—
हाथ पसारणो, माख्यां मारणो, होस हवास उड़णो, ठाली बैठणो।

५. 'हाथ पीळा करणा' मुहावरै रो सही प्रयोग किण वाक्य में हुयो है—
(क) डाक्टर रै इन्जैक्शन लगाणै सू मरीज रा हाथ पीळा हुयग्या।
(ख) केवळा रा फूल मसलण सूं म्हारा हाथ पीळा दिसण लागा।
(ग) हरद पीसण सूं रामी रा हाथ पीळा पड़ग्या।
(घ) फाकोजी टाबरपणा मांय बापू रा हाथ पीळा कर दीना।
(ङ) पुलिस चोर नै पीळै हाथां अपड़ लीनो। ( )

विषय वस्तु सम्बन्धी :

६. मूळसा आपरो पैलड़ो फरज कीनै समझतो?
(क) घर-गिरस्त रो पालण करणो।
(ख) अठीनै-वठीनै डोलणो।
(ग) बीजां नै उपदेश देवणो।
(घ) टावर टीगर नै वरफ वेचणो।
(ङ) वेट्यां रो व्याव करणो।

७. 'मूळसा आप रै वेटां री सगाई-व्याव खातर दायजो आपरै सगासूं कोनी लेणो चावतो।' इण कथन सूं काई बात प्रगट हुवै?
(क) मूळसा घणो अमीर हो।
(ख) वीनै धन रो लोभ कोनी हो।
(ग) वो आपणी वेट्यां खातर दायजो नी देणो चावै हो।

(ध) वां दायजे री कुरीत नै मेटण चावे हो ।

(ङ) वीरा सगा-सोई कनै पइसा कोनी हा ।

८. बरफ आळै री आवाज सुणतांई टावर-टींगरां पर कांई असर हुवतो ?

९. इण पाठ सूं वी ओल्या छांटो जिण सूं टावर-टींगरां री स्वाभाविक बोली री ओळखाण हुई सकै ।

१०. बरफ आळो एक-एक टावर नै मुळकतो देखणो चावतो । क्यूं ? ३० सबदां में लिखो ।

११. गरमी रै दिनां में ईज टावरां नै मूळसा रा दरसण क्यूं हुवता ? ५० सबदा मे लिखो ।

१२. मूळसा रो टावर-टींगरां नै राजी करण रो कांई तरीको हो ।

१३. "मिरचियो वड़ो मसखरो हो ।" उण री मसखरी रो एक उदाहरण दो ।

१४. 'वां सूं तो पसु चोखो ।' पसु किण मिनखां तूं चोखो कह्यो ? ३० सबदां मे लिखो ।

रचना, समालोचना अर अनुभव-विस्तार सम्बन्धी :

१५. मूळसा रो सबद-चितराम आपणा सबदां मे लिखो ।

१६. नीचे दियोड़ा वाक्यां रो आशय स्पष्ट करो—

(१) बाळक देवता सरूप हुवै ।

भणीज्योड़ो नई हो नी अनुभव सूं गुणीज्योडो अवस हो ।

(३) मिनखां री माया अर बिरखा री छाया ई चोखी लागै बाकी संसार मे कई सार कोनी ।

१७. मूळसा रै चरित री विशेषतावां री एक तालिका बणावो ।

१८. दायजे री कुरीत माथै एक लेख लिखो ।

१९. 'बरफ आळै' नै ध्यान मे राख'र किणी 'कळआळै' अथवा 'दूधआळै' पर एक छोटोसोक लेख लिखो ।

२. पांच सीख
(संकलित)

लोकजीवण में प्रचलित आ लोक कथा घणी शिक्षाप्रद है। इण में दियोड़ी सीख रै सांचे मरम नै समझ'र जे जीवण मे चालै वै कदै ई दुखी नी हुवै पण जै इण रो मरम नी समझै अर ऊंधा चालै वै दुखी हुयां बिगर नी रैवै।)

पांच सीख

(१)

एक मालदार सेठ हो। इण रै एक ई ज बेटो हो जिको सोरो सुखी रंयोड़ी अर अंग रो भोळो हो। सेठ मरती वगत बेटै नै पांच सीख दीनी जिकी वै पक्की याद कर ली। सेठ रै मरयां पछै बेटो बाप री सीख रै मुजब चलणै रो नेम लियो जिकै सूं जिन्दगी सुख सूं बिता सकै। बाप री पहली सीख ही—'रोजीना मिष्ठान्न आरोगणो।' घर मे कोई बात री कमी तो ही कोनी। बेटे रै घर मे रोजीना कड़ायलियो चढ़तो, मालमलीदा उड़ता। गरिष्ट भोजन सूं इण रो पेट खराब रैवण लाग्यो। दूजी सीख ही—'छैयां आए छैयां जाए, दुकान जाता तावड़ो नही लागै।" बेटै एक सागीड़ो छत्तो बणवा लियो जिको ताणर दुकान जावतो जिकै सूं दुपारै घू तावड़ै मे ई वैरै माथै छैयां रैवती। तीजी सीख ही—'उधार देवर पाछो नही मांगणो'। बेटो इण सीख रै अनुसार गाहकां नै उधार तोलतो अर पाछो हिसाब तकादो को करतो नी। आवै तो जमा कर ले नी आवै तो खावो-पीवो। चौथी सीख ही-"लुगाई नै बांध'र राखणी।" ओ लुगाई नै रसड़ी सूं बांध देवतो। लुगाई कुळवान ही, पण दुख कठै तांई झेले वा आपरै पीरै गई परी।

बाप री चार सीख मानर बेटो घणो दुखी हुयग्यो। सरीर बीमार हुयग्यो, रकम लोग खायग्या, नौकर-चाकर सूकै ठूठ री तरै छोडर आप-आपरै लेखे लाग्या, लुगाई पीरै गई। अबै वो बाप नै घणी गाळ्यां काढ़तो

रा प्रश्न

अर बैठतो थारी सीख मान'र हूं तो बरबाद हुग्यो। [illegible] सीख, बाद आई- धन जोईजै तो गंगा-जमना रै बिचाळै खोदर निकाळ लिजै।" उण रै गंगा-जमना रै नाम सूं पाणी [illegible] सीख री, अठै आयर [illegible] खुदाई पण मिनत फालतू गई। अब [illegible] सूं ओ [illegible] हुग्यो।

बाप री आखरी सीख ही—"[illegible] सारै भायलै री पूछ लिए।" बेटो जावक दुखी हुयर [illegible] भायलै [illegible] अर [illegible]— "काकाजी! हूं तो आपजी री सीख मुजब चालर सफा बरबाद हुग्यो।" बो उणा रै आगे सारी बात खोलर राखी।

(२)

भायलो हकीगत सुणर उण री बुद्धि पर रीस हुयो। बो सोच्यो-अणाड़ी दिमाग सीख रा अनर्थकारी हुग्या। बो कैयो-बेटा! थारै बाप तनै लाख-लाख रुपियां री एक-एक बात कैयी, पण तूं बी रो मरम नी समझर ऊंधो चाल्यो, जिकै सूं दुखी हुयो। अबै समझर बिचार कर उणां री सीख माथै।

पहली सीख ही 'रोजीना मिष्ठान्न खावणो'। इण रो मतलब ओ है कै आकरी भूख लागै जद जीमणो, इण बगत सूखी रोटी ई मीठी लागै। दूजी सीख ही तावड़ै मे जाणो आणो नई।' इण रो मतलब ओ नी कै छत्ता लगार जावणो। उणा रो मतलब साफ है कै भोर-भोर मे जल्दी दुकान जावणो अर सिझ्या पड्यां पाछो आणो, सारा दिन दुकान माथै रैवणो। तीजी सीख रो मतलब ओ है क उधार-न्योहार इसै आदमी सू ई ज राखै जिको घर बैठ्यां बिना तकादै रकम पूगती कर दे और तनै तकादो करणो ई नी पड़ै। चौथी सीख स्त्री नै बांधर राखणे रो अरथ ओ कोनी कै बीनै रस्सी सूं बांधर राखणो। इण रो अरथ है कै प्रेम रै बन्धण मे बान्धर कोई ओळमो हुवै तो देणी, जिकै रो फल घणो मधुर मिलै। पांचवी सीख 'धन री जरूरत हुवै तो गंगा-जमना रै बिचाळै खोदर काढ लिजै' इण रो अरथ ओ कोनी कै त्रिवेणी किनारे जायर खोदै, पण थारै घर मे गंगा-जमना दो गायां है जिकारै ठाण बिच लै बाखळ मे धन रा चरू दूरयोड़ा है। जिका निकाळ लिये।

भायलै रै बताये मुजब बेटे बाखळ मे दूरयोड़ा धन निकाल लियो अर बाप री सीख रो परमार्थ जाणर मे उतार, घणो सुख हुयो।

अभ्यास रा प्रश्न

भाषा सम्बन्धी :

नीचे दियोड़ा सबदां रा हिन्दी रूप लिखो—

नेम, छैयां, दुपारै, पीरै, मैनत, व्यौहार, ओळमो ।

२. नीचे लिख्योड़ा वाक्यां में रेखांकित सबदां रो भाव स्पष्ट करो—

(i) उण रै एक ई ज बेटो हो जिको सोरी सुखी रैयोड़ी अर अंग रो भोळो हो ।

(ii) बेटे रै घर मे रोजीना कड़ायलियो चढ़तो मालमलीदा उड़ता ।

३. 'मन जोइजै तो गंगा-जमना रै बिचाळै खोदर निकाळ लिये ।

इस वाक्य में रेखांकित सबद 'गंगा-जमना' रो सांचेलो अरथ काई है अर बेटो काई अरथ समझ्यो ?

विषय-वस्तु सम्बन्धी :

४ सेठ मरती बगत बेटे नै काई दियो ?

(क) घणो सारो जेवरात ।

(ख) लाम्बो चौड़ो मकान ।

(ग) पेठआळी दुकान ।

(घ) पांच सीख ।

(ङ) लाख रुपिया । ( )

५. 'बापरी सीख मुजब चालर बेटो बरबाद हुयग्यो ।'

बेटा री बरबादी रो मूळ कारण हो—

(क) रोजीना मिष्ठान्न आरोगणो ।

(ख) छैयां जावणो छैयां आवणो ।

(ग) उधार देयर पाछो नहीं मांगणो ।

(घ) लुगाई नै बांधर राखणी ।

(ङ) बाप री सीख रो मरम नी समझर ऊंधो चालणो । ( )

६. 'आकरी भूख लागे जद जीमणो'। इण कथन सूं कांई भाव प्रगट व्है।

(क) लूखी रोटी ई मीठी लागे।

(ख) खायोड़ो जल्दी पचे।

(ग) घणो खावण मे आवे।

(घ) नाज री किफायत व्है।

(ङ) चोखो स्वाद आवे। ( )

७. ताबड़ै मे जाणो-आवणो नीं' इण रो सही मतलब है—

(क) धूप मे नी हालणो-चालणो।

(ख) छत्तो लगार जावणो।

(ग) रात पड़्या घूमणो-फिरणो।

(घ) सारो दिन दुकान माथै रेवणो।

(ङ) सारो दिन विसराम करणो। ( )

८. नीचे दियोड़ा प्रश्ना रा उत्तर ५० सबदा मे लिखो—

(क) बाप री चार सीख मानर बेटो घणो दुखी किया हुयग्यो!

(ख) बाप री आखिरी सीख कांई ही?

(ग) मायलै. बेटे री हकीगत सुणर कांई सोची।

९. बेटो घणो सुखी कब हुयो? ३० सबदां मे उत्तर दो।

१०. 'उधार देयर पाछो नही मागणो।' इण सीख रो साचो मरम २५ सबदां मे लिखो।

११. 'लुगाई नै बांधर राखणी।' इण कथन सूं स्त्री रै सागै कैड़ो व्योहार करण री बात प्रगट व्है?

रचना, समालोचना अर अनुभव विस्तार सम्बन्धी :

१२. जे आप बाप री ठौड़ हांवता तो बेटै नै कांई सीख देवता?

१३. बाप री दियोड़ी पांच सीख मांय आपने सबसूं चोखी सीख किसी लागी?

१४. इण पाठ सूं आपनै कांई सीख मिलै?

१५. इण भांत री और पण केई लोक कथावां राजस्थानी साहित्य मे मिलै। उणां नै जाणवां री कोसिस करो।

३. थली रो मवो–मतीरो

(श्री तेजाराम स्वामी)

(श्री तेजाराम स्वामी चुरू जिलै रे सरदारशहर रा रैवासी है। आप री फोटोग्राफी में गैरी रुचि है।

संकळित निबन्ध 'ओळमो' वरस १, अंक १ सूं लियोड़ो है। इण में लेखक थळी रै मेवै मतीरै री विशेषतावां री आछी ओळखाण कराई है।)

थळी रो मेवो–मतीरो

(१)

मतीरो, नांव सुणतां ही ल्याळ पड़णै लाग जावै। मतीरो, थळी रो मेवो, बीकानेरियां रो इमरत, देवां नै शी न मिलै। तरस-तरस रै जावै, पण भागहाळा ही खावै।

च्यार वरस री फूलां रो काको कालै ही बीकानेर सूं आयो। एक मतीरो ल्यायो। घरहाळा सै खायो। पण मळै जीभ चाटता हीज रैग्या। मु: री ल्याळ होठां सूं नीचै नी पड़ै। फूलां लाणटावर, इसी चीज पैला कद देखी? मळै मतीरै खातर रोवण लागगी। हठ पकड़ लीन्यो। जद वी ो काको वोल्यो :—

काकड़, बोर, मतीरा थळ मे, सिरज्या है कोई पूरा नै;
दूध'र दळियो खा म्हारा फूलां, मत ना झूर मतीरा नै।

साची ही कैयी है। वै थळी रा किरसाण, जका बापड़ा जेठ री तपती लाय में पचै, वै ही वणां रो मोल समझै। बीजा बापड़ा कांई जाणै? लाल गिरी देख'र ल्याळ टपकाता हा रै जावै, कांई जोर करै। आज कालै थळी मे जा'र देखो—थळीरा खेतां मे जा'र देखो—चारूमेर भोड़क्या सी चिलकती दिसै—मतीरा रा ही मतीरा। थळी खनला सै'रां रै बजारां मे मतीरी रा ढिगळा लाग्या रै वै। गावां रा घर-घर मतीरा सूं छळम छोळ मतीरा-ही मतीरा।

चोखा मतीरा पण कठै नीपजै ? थळी रै रोही में। बीकानेर री भोमी मायँ। देश रो भूगोल बणाणिया लिख्यो है के बीकानेर री धरती जाबक उजाड है, अठै की कोनी निपजै। आंधी'र मतूळिया, लूवां'र तावड़ै री बळतेड़ चालै।

पण वा लिखण हाळां नै एकर, ईं समै अठै तो पकड़'र ल्यावो, जो चरड़-कैदेई सी आंख न खुल जावै तो म्यानै कैया जर जो विचली गिरी रो एक गपकोस खाली तो वांनै आ लिखणी पड़ै के आज म्हे अम्बरफळ चाख्यो। पण बां बापड़ां रो कांई दोस, बै तो नकसा'र वायरै रो रुख देख'र लिखी दिसी। बै कद सुरगे सावण में बीकानेर री हरियाळी देखी ? बै कद ईं इमरत फळ नै चाख्यो ?

मतीरो जिसो चोखो'र खांवण में इमरत है विस्यो ही दोरो ओ नीपजै। किरसाण बैसाख-जेठ री ताती लूवां में आपरी खाल बाळ'र बूजा काढ़ै, मतीरै तांई धरती त्यार करै, आंख्या फाड़तां-फाड़तां, साड-सावण मे जद इन्नरियो बरसै-हळ ले'र खेतां मे नीसरै। सारै दिन तैस्यां मरै, भूख काढ़ै, खेत बावै'र बीज रोपै। सांप सळोट्या'र रोही रै जिनावरां सूं मुकावलो करै। मींगसर तांई खोड़ा मे डेरा रालया राखै, जणा जा'र मटकी सो मतीरो मूळांरे पड़ालां मे गुडतो दीसै !

मतीरा, काकड़िया'र टींढस्यां रा गुण कुण जाणै ? किरसाण-धरती रा सांचा सपूत। भरयो पड़्यो है गुणां सूं मतीरो (अे गुणां वाणिया रा गुणां कोनी जको ४ नै पांच सूं गुणा करया तो २० होग्या) कठै तांई गिणांवा।

(२)

एक दिन री बात। सूण्डियो जाट दो घड़ी रै झांझरकै उठ्यो'र जेली'र गडासी खूंणै माथै धरो। खेत रो गैलो पकड़्यो। कोसेक खेत। घड़ीक नै जापूग्यो। ऊंची टीबड़ी माथै खड़्यो हु'र खेत नै भर नीजर देख्यो। छाती चार हात री हूगी। पण कठैई मोठिया बळण लागरया हा। मन में बिचारयो वलेड़ा मोठिया उपाड़ ल्यूं ? इतरै मे नीरज पड़ाल माथै पड्यौ मतीरै खानी गयी। खनै जा'र तोड़्यो। दे कुणी री ढबरी दो कर नाखी। लाल चिरमी सो, ठडो हेमजाळ सो, मीठो मिसरी सो। खातां ही आमतां तिरपत।

डकार ले'र मोठा नै लागयो। भाती तांई काम में झूझतो रैयो। पण पेट में कुरळाट मेलण लाग्यो। आंख्यां गैले खानी फेरी। राम धनियेरी मा आती दीसी कोनी। मन में झुझळायो, बडबड़ाण लाग्यो। पण खनै पड्यो मतीरो जाणै बोल उठ्यो मतिरो—(रोवै मत) सूण्डियो चिमक्यो। ओ कांई सागो ? खनै पड्यो मतीरो दीस्यो। फोड़्यो'र खायो। पेट देवता सांयत हुग्यो। भूख भाजगी। आतमा तिरपत। इतरै में रामधनियै री मा आगी। रामधनियो हेलो पाड्यो 'काका ऊ''''''रोटी जीमल्यो'। सुण्डियो बोल्यो—'आयो' अर घड़ी एक तांई और मोठ उपाड़तो रै यो। घड़ी-पाछै डेरै जीमण पूग्यो। सागै दो मतीरा लेग्यो। पैली मतीरो खायो। फेर, राबड़ी'र रोटी धिगाणै सी कंठा नीचे उतारी। कुण नैं भावै राबड़ी'र रोटी ? मतीरा सूं आछी है कांई ? जीम्या पछै मतीरो और जीम्यो। खपरी रो पाणी पीवतो-पीवतो बोल्यो-

'बावली, देख भगवान आपणे खातर किसीक चीज बणाई है। कांई करै, थांरा मेवा मिसरी ई रै आगै ? नीरोग चीज है नीरोग।

सामैं हो खेमो दादो लाठी रै टेकै खों-खों करतो आयो। चार बरस सू दमै रो रोग लागरयो। आ'र बोल्यो—अरे, सूण्डिया, थारला मोठिया ले बळण लागग्या म्हारा।

सूण्डियो—'हां, दादा ! कात्ती उतरै लागी अबै भी बळला'के नी ?' इती कै'र आपरै छोरै रामधनियै नै हेलो पाड्यो—"जा, रै, दोलड़ती खेजर्ड रे सारलै मुळ में सूं बो मतीरो लिया, बाबै खातर।"

खेमो – नां रै भाया मैं मतीरो कोनी खाऊं। तू जाणै कोनी कांई : मेरे दमै रो रोग है। काल सूं ही डागधरजी खणै सूं दवाई लेणी सरू करी है

सूण्डियो – "थे जाणों हो दादा, आ डागधर री दवाया सूं की होब थोवण रो कोनी। म्हारा बेटा पइसा ठग्गी रो खेल रोप मेल्यो है। अर इ सो बाबा खेती करता-करता बूढ़ा होग्या, पण मतीरा रा गुण हाल ताई के जाणो नी। म्हारै कणा सूं हीज एक पखवाड़ै परहेज सूं मतीरा खावो। थार रोज कटजासी। डागधरां रै फेर में मतां पड़ो। मनै एक गेलै बग्तो साधू बाबा बताई हैकै मतीरो से रोगां री दवाई है।"

खेमो—"[illegible] ।'

सूण्डियो—"हां, [illegible] ?"

खेमो—"[illegible]"

सूण्डियो मतीरो फोड्यो, फोड्यां ही मतीरो [illegible] बोल्यो—'मती रो । मती रो !! मती रो !!!' (मत रो) खेमो [illegible]—'आ कांई [illegible] ?"

सूण्डियो—"सुण्यो के दादा । मतीरो [illegible] के मती रो ।"

खेमो—'सुण्यो, अब मनै [illegible] के रोग [illegible] ।"

ज्यूं ही मतीरो पेट में पूग्यो'र मानखे नूं बोल्यो- मती रो ! मत रो !! मती रो !!! (मत रहो) ।

सूण्डियो—"दादा । मतीरो रोग नै [illegible] 'मत रहो' सुण्योक नी ?"

खायां फेर दादै री आतमा तिरपत हुगी'र जणा कैवण लाग्यो म तीरो । म तीरो !! मतीरो !!! (मैं तीरियो !!! मैं तीरियो !!!)

सूण्डियो—"देख्यो'क दादा । मतीरा रा गुण । थे दोजीनां एक मतीरो खायो करो । पछै देखो मजा ।"

खेमो—"सांची बात है । मेरो तो खाता ही जीव सोरो हुग्यो । काळजो ठुकण लागरियो । सागै ही तिरपत हुग्यो ।"

सूण्डियो—"दादा । साधू महाराज रा वचन झूठा नी जावै । ओ मतीरो दम हाळा रामबाण दवाई है । खून नै साफ करै । थे जाणो ही हो के खून र कफ साफ होयां फेर सैं रोग चल्या जावै ।

खेमो—' भगवान री माया । ई धरती रा धन भाग !! सागै आपां रा मो, वाह रै , मतीरा कुण नै मिलै ।"

सूण्डियो—"वाह रे, मतीरा वाह रै मतीरा ।"

अभ्यास रा प्रश्न

भाषा सम्बन्धी :

१. इण रा दो, दो पर्यायवाची सबद लिखो—

रोही, गैलो, परभात, वायरो ।

२. नीचे तीन वाक्य दियोड़ा है । इणां नै पढर बतावो के रेखांकित 'मतीरो' सबद किण अरथां में आयो है ?

(क) सूण्डियो मतीरो फोड़यो, फोड़ता ही मतीरो जाणै बोल्यो मती रो ! मती रो!! मती रो !!!

(ख) ज्यू ही मतीरो पेट में पूग्यो'र माय नै सू बोल्यो—मती रो ! मती रो !! मतीरो !!!

(ग) खायां फेर दादै री आतमां तिरपत हुगी'र जणा कैवण लाग्यो—म तीरो ! म तीरो !! मतीरो !!!

३. 'छाती चार हाथ री हूगी' मुहावरे रो सही अरथ है—

(क) हिम्मत बढ़गी । (ख) आतमा तिरपत होयगी ।

(ग) सांस चढ़गी । (घ) जवानी रो जोर आयग्यो ।

(ङ) उमंग अर उछाह सूं दिल भरयो । ( )

विषय-वस्तु सम्बन्धी :

४. लेखक मतीरा रै स्वाद, रंग अर परस री ओपती उपमावां दी है । आप उणां नै छांट'र लिखो—

गुण उपमावां

(क) स्वाद

(ख) रंग

(ग) परस

५. 'वै थळी रा किरसाण जका बापड़ा जेठ री तपती लाय मे पचै, वै ही इणां रो मोल समझै ।'

इण कथन सूं किरसाण रैं चरित री कांई विशेषता प्रगट हुवै—

(क) दीनता । (ख) मैनतपणो ।

(ग) मिनखपणो । (घ) ईमानदारी ।

(ङ) चतरता । ( )

६. 'वाह रै मतीरा, वाह रैं मतीरा' सूण्डिये रै इण कथग सूं उण रैं मन री किसी भाव प्रगट हुवै ?

(क) खुसी । (ख) सावासी ।

(ग) अचरज । (घ) हाजरजवाबी ।

(ङ) सरळपणो । ( )

७. मतीरो पाळी रो मेवो क्यूं कहीजै ?

८. मतीरो दोरो कियां नीपजै ? ५० सबदां मे लिखो ।

९. बीकानेर री मायण सुरगो क्यूं कहीजै ? ५० सबदां मे लिखो ।

१०. 'राबड़ी' र रोटी पिगाळै मी कंठा नीनी उतरै ।' इण स्थिति सूं मतीरै री कांई विशेषता प्रगट हुवै ?

११. नुंव्हिरो आट अर नेमा दादै री वारता आपणा सबदां मे लिखो ।

१२. किरसाण धरती रा साचा सपूत क्यू कहीजै ? ५० सबदां मे उत्तर दो ।

रचना, समालोचना अर अनुभव-विस्तार सम्बन्धी :

१३. पीलमपीत मतीरो देख'र थार वरग री लुगाई रै मन मे कांई भाव उठ्या वेला ? ५० सबदां मे लिखो ।

१४. "भरयो पड़यो है गुणा सू मतीरो । अं गुणा बाणियां रा गुणा कोनी ।' आ बात कैर लेखक कांई भाव प्रगट करणो चावै ?

१५. 'मतीरो मूळा'र पड़ाला मे गुडतो दीसे !' अँडो मतीरो आपने किसो लागै ? कोई दो उपमावां दो ।

१६. मतीरा, काकड़िया अर टीढस्या रा अलग-अलग गुण जाण'र उणा री फेरिस्त वणावो ।

१७. इण पाठ नै ध्यान मे राख'र 'अन्न रो राजा बाजरो' विषय पर २०० सबदां में एक लेख लिखो ।
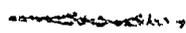
४. धरती रा फूल : गिगन रा तारा

(श्री श्रीलाल मिश्र)

(श्री श्रीलाल जी मिश्र रो जनम सं० १९६७ मे झुंझुनूं जिले रै बिसाऊ गांव मे हुयो। आप हिन्दी में एम० ए० अर बी० टी० री परीक्षावां पास करी। आप लम्बे समय तांई डूंडलोद हाईस्कूल मे प्रधानाध्यापक रैया। अबार आप आदर्श बाळ निकेतन झुंझुनूं मे प्रधानाध्यापक है।

श्री मिश्रजी राजस्थानी रा विद्वान अर गवेषक है। डूंडलोद ठिकाणै रै हस्तलिखित संग्रह रो लाभ उठा'र आप कैई पुराणा-कवियां अर ग्रंथां पर शोध लेख लिख्या। आप 'साधना' पत्रिका रो सम्पादन भी घणी कुशलता सूं कर्‌यो। 'राजस्थान साहित्य समिति' बिसाऊ रा आप सभापति भी रैया अर 'ईसरदास आसण' सूं आप 'अर्वाचीन राजस्थानी काव्य' विषय मथै अभि-भाषण दियो। पृथ्वीराज आसण' रा भी आप अभिभाषक रैया। आप आजादी रै शहीदां पर भी प्रेरणादायक लेख लिख्या।

संकलित निबन्ध 'मरुवाणी' बरस ७, अंक ७ अर ९ (जुलाई अर सितम्बर, १९६७) में प्रकाशित हुयो है। इण में लेखक आजादी री वेदी पर शहीद हुवणिया वीर-वीरांगनावां—रामगढ़ री राणी, मैना बाळक राजा अर राजकुंवर सरजूदास-री जीवण-घटनावां रो परिचय दियो है। अै वीर चरित आजादी री रक्षाखातर मर मिटण री प्रेरणा देवण आळा है।)

(१)

रामगढ़ री राणी

मध्यप्रदेश में मंडला जिले में रामगढ़ नांव रो एक छोटो सो राज हो। बी रै राजा लक्ष्मणसिंह रो सुरगवास १०५० मे हुयो। गद्दी रो हकदार राजकुमार विक्रमजीतसिंह हो, पण अंग्रेजां बीं नै पागल करार देयर एक तहसीलदार रै हाथ राज री देखभाळ सूंपदी। राणी विरोध कर्‌यो, पण लैर

कुण ? राणी रै तन-मन में आग लागगी अर वा विद्रोह कर दियो। आस-पास रा जागीरदार-जमीदार अर ठाकरां रो वीं नै साथ मिल्यो। विद्रोह में खीगसिंह, ना तहसीलदार नै काटर नाख्यो। कमिश्नर री तरफ सूं हुकम हुयो कै वेंट हुया राणी हाजर हुवै। पण वगत राणि री आव [illegible] रो मगन जोरां पर हो। मंडल सूं लेफ्टिनेन्ट वार्टन री कमाण में ब्रिटिश फौज रामगढ़ पुचर शहर नै दो कानी सूं घेर लियो। राणी मुकाबलै खातर त्यार ही। वा घोड़ै असवार होर आपरै सिपायां नै साथ लेयर [illegible] अंग्रेजी फौज पर धावो बोल दियो अर दुश्मनां नै चीरती [illegible] घेरे सूं निकलगी। पास रै जंगलां मे रैयर अंग्रेजी फौज पर छापा मारै लागी। वार्टन साथ लग ग्यो। वो राणी रै सिर पर इनाम रो ऐलान कर्यो, पण की रै दो सिर हा, जिको ई रै सिर जाती घालै।

एक दिन राणी रै साथ विश्वासघात हुयो। वीं रै तम्बुआ मे सूं वीं रो घोड़ो चुरग्यो अर बाकी घोड़ा नै जैर दे दियो अर लारू घेर लिया। राणी दूसरो घोड़ो लियो, पण जैर खायोड़ो घोड़ो चाल्यो कोनी। सिपाही नजदीक आग्या अर राणी नै घेर ली। राणी पैदल तरवार सूं जूझण लागी। वार्टन नै ललकारयो कै कमीणपणो करर तूं जीत सकै है पण मनै कोनी हरा सकै। वीं पर वार कर्यो। पण वो टावरी रै भाग सूं बचग्यो। वार्टन कुल्हाई-म्हारी मरण ल्यो। राणी बोली-यो काम कायरां रो है, मनै जलमभोम पर मरणो आवै है। राणी नै जावता पकड़ण खातर कपट सूं वीं री तरवार काट दी। वा झट आपरै सिपाही री तरवार लेयर लड़ण लागगी। लड़ती रैयी पण जद आखरी टेम देखी जद वी ईं तरवार सूं आपरो पेट चाक कर न्हाख्यो अर आंतड़ा बारै आ पाड़्या। डाक्टरां मोत उपाय वीं नै जिवाणै सारू कर्या, पण वा जीणं खातर थोड़ी मरी हो। रामगढ़ री राणी री वीरता झांसी री राणी सूं कम कोनी कहीजा, चाये साधन उतणा न हो। वा भी मरर अमर हुगी।

(२)

वीरांगना मैना

सन् १८५७ री बात है। मैना, नाना साहब पेशवा री बेटी ही। कानपुर भी दिल्ली ज्यूं क्रान्ति रो केन्द्र हो। नाना साहब कानपुर रो भार मैना पर

छोड़र बारै गयोड़ा हा। तांत्यां टोपे अर बाला साहब भी अठै ई हा। जनरल आउट्रम बहोत बड़ी फोज लेयर कानपुर नै घेर लियो। तांत्या भी घिरग्यो। मैंना सोची जे तांत्या मरग्यो तो सेना कुण सम्हाळै लो। ई री उमर तेरा साल री ही पण घिर्‌यां थकां भी सिपायां री अलग-अलग टोळ्‌यां बणायर हमलै रो सामनो बहादरी सूं कर री ही। वा तांत्या नै सला दी कै मैं एक बहोत जोर रो हमलो पूरी त्यागत सूं करस्युं जी सूं अंग्रेजां री एकर आंख मिच ज्यासी। ई हड़बडी में थे निकळ ज्याग्यो। या ई करी अर तांत्या निकळग्यो। मोको पायर आप भी निकळगी अर तांत्या सूं गंगा किनारै जा मिली। इतरे में ई तीन अंग्रेज घुडसवार आं कनै आ पूग्या। तांत्या तो गंगा में कूदर परली पार चल्यो गयो अर मैंना तीन्या नै ई तरवार सूं सुख री नींद सुवा दिया। मैंना घोड़ै चढ़र चालण आळी ही कै आर घुडसवार आग्या अर बीं नै कैद करर सिपाग्गं सेनापति रै सामनै हाजर करी। सेनापति कैयो, 'छोरी, ज नाना साहब रो पतो-ठिकाणो बतादे तो तनै इनाम देस्यां, नईं तो जीवती नै ई बाळ देस्यां।' मैंना बोली, 'ई देस री वीरांगना तो सदां ई आग में आपरी मरजी सूं बळती आई है। मनै या काईं धमकी देवै है? ई ढंग सूं मैं दुसमण नै म्हारो भेद कदे भी देणै सूं रही।'

आउट्रम साहब हुकम दे दियो कै ई नै जीवती नै ई आग मे झोक द्यो। मैंना बोली, ई सूं आछी कांई मौत हो सकै है, पण तू भी याद राख जो, यो म्हारो खून दीयोड़ो अैळो कोनां जावैलो। थांरा जुलम थानै ले डूबैला।'

दूसरै दिन मांखपाटे सूं पहलां अवेरे-अवेरे ई मैंना नै खंभै सूं बांधर आग लगा दी। मैंना रै मूं पर तेज हो, होठां पर मुळक ही जी में खुसी ही कै मैं भी क्या लायक हूं जिको आज देस रै काम आई। मैंना मर अमर हुयगी।

(३)

देसभगत बाळक राजा

सत्तावन री क्रांति रा दिन हा। हैदराबाद रो दीवान सलारजंग अर निजाम अफजुलदोला अंग्रेजा री भगती दिखावण नै कई हिन्दू-मुसळमान नेतावां नै पकड़वा दिया अर धोखै सूं मरवा दिया।

हैदराबाद रै पास एक 'जोरापुर' नांव री छोटो सो गाम हो। राजा मरग्यो हो अर नयो राजा बाळक हो। दीवान अर निजाम रो ई राज पर दांत हो, वै ई राजा नै हटपणो चावै हा। बाळक राजा पर नाना, तांत्या, लक्ष्मीबाई, कुंवरसिंघ री कहाण्यां सुणर देसभगती रो पूरो रंग चढग्यो। वो भी रहेळां अर अरबां री एक सेना बणायर अंग्रेजां रा छक्का छुडाणा सरु कर्या। एक बार वो हैदराबाद गयो। वीं नै वेरो कोनी हो—अठै दीवान देसद्रोही है। वो तो समझ्यो सै राजावां री एक ई भावना है—अंग्रेजां नैं देस सूं निकाळना। सालारजंग वीं नै धोखै सूं गिरफ्तार करवायर अंग्रेजां रै हवाले करयो। एक अंग्रेज अफसर 'मिडोज टेलर' राजा नै माफी मांगण री अर आपरै साथियां रो भेद बताण री कही। राजा बोल्यो 'टेलर साहब, मेरै ई नासवान सरीर नै बचावणै खाई मैं देसवासियां रै साथ विस्वासघात कोनी करूं। थारी दासता सूं मरणो आछ्यो। कुछ दिनां बाद वो ई टेलर राजा नै मौत री सजा सुणावण नै जेळ मे गयो, राजा री बहादरी सूं टेलर प्रभावित हुयो अर मांय सूं वी सूं प्रेम करतो। वो राजा नै पूछ्यो 'मैं तेरी काई मदद करूं?' राजा बोल्यो, 'एक वीनती है कै मनै फांसी न देयर तोप रै मूंडै उड़वाद्यो, क्यूं कै फांसी तो कळंक है, जिकी चोरां नै दी जावै। मेरो कसूर तो खाली देसभगती है।

टेलर कोसिस कर र ई बाळक नै फांसी री जगां कालेपणी री सजा कायम कराई। वी नै यो वेरो कोनी हो कै यो बालक काळै पाणी री सजा मे कोटड़ी में सिड़नो भी फांसी जितणो ई अपमान समझै हो।

बाळक राजा नै जदजेळ सूं काढ़र काळै पाणी लेज्यार्‌या हा जद वो एक सिपाई सू मांगर एकर देखण नै पिस्तौल ले ली अर वां सगळा रै देखता आपरै हाथ सूं आपरै ई गोली मार र मुगती पाई। पंछी उड़ग्यो अर पींजरो पड्यो रैग्यो।

(४)

बहादुर राजकुंवर सरजूदास

सत्तावन री आग सारै देस मे धधक री ही। विजयराघोगढ़ से नाबाळकी

ही। राज रो हकदार सतरा बरस रो राजकुंवार सरजूदाससिंघ हो। नाबाळकी में जबलपुर रै डिप्टी कमिश्नर कैप्टन कलार्क रै हुकम सूं सहसीलदार मीर साबितअली राज रो काम देख्या करतो। क्रांति री लपट सरजूदास रै भी लागी अर वो अंग्रेजां रै खिलाफ तरवार उठाणै रो इरादो कर लियो। हथियार निकाळर वांरी सफाई करणी सरू कर दी। मीर रै सक हुयो। वो वीं नै समजायो के क्यूं वो अंग्रेजां री आंख्या पर चढ़ै है, सिकायत हुयां रियासत खुस ज्यासी। राजा बोल्यो–आजादी नई खुसणी चाये, या रियासत सूं भी ज्यादा कीमती है। बात बढ़गी। सरजूदास साबितअली रो काम तमाम कर र बगावत रो झंडो थाम लियो। खबर जबलपुर पूंची अर कलार्क साहब घुड़सवार भेज्यां वां नै रस्तै में ई ठिकाणै लगा दिया गया। कमिश्नर अर्सकिन साब घेराबन्दी करदी। सरजू जबलपुर-मिरजापुर सड़क पर कब्जो कर लियो, जीं सूं कलकत्तै-बम्बई रो रास्तो बन्द हुयग्यो। अर्सकिन ऊपर खबर करी। सरजू छापामारी करतो रैयो। ईंया करतां-करतां पूरा सात बरस हुयग्या। सरजू चौबीस बरस रो हुयग्यो। एक दिन एक साथी धोखे करर ईं नै पकड़ा दियो। सरजूदास जबलपुर जेळ में बंद कर दियो गयो। बहोत दिनां ताईं न मुकदमो चाल्यो, न सजा हुई। कारण यो हो के अर्सकिन री बेटी सरजू री वीरता पर सँजोगता अर अलावदीन री साहबजादी री ज्यूं मोहित हुयगी ही। सरजू नै हथकड़ी-बेड़ी मे देखर वींरी आंख्यां में आंसू आग्या। वा सरजू नै बोली, 'थे माफी मांगल्यो, थांरो राज भी थानै मिल ज्यासी अर मैं भी थांरी हो ज्यास्यूं। सरजू बोल्यो, मैं कांई बात री माफी मांगूं। थे म्हारो देस तो खोस ई लियो, मैंने भी खोसणो चावो हो थे ? मेरै देस में तेरै जिसी भी छोरी कोनी होसी कांई ? जा तेरो काम कर।'

जद अर्सकिनी री बेटी सरजू रो दिल कोनी जीत सकी तो हारर अर्सकिन सरजू पर मुकदमो चलायो अर काळैपाणी री सजा सुनाई। फांसी न होणै में भी लड़की रो हाथ हो। वा फेर सरजू कनै आयर बोली, 'थांरी ज्यान बचगी। आपां कलकत्तै चालर रैस्यां। मेरे पास पीसा है अर थारै कनै बहादरी।' सरजू बोल्यो मैं गुलाम देस में कोनी जीणो चाऊं। मनै तो चाये फांसी री सजा दिवादे, चाये तोप सूं उड़वादे।' लड़की बोली, 'जे या बात

फेर कह्यो तो थांरे सामनै या पिस्तोल मारर मरज्याऊंली । नई तो थे आपरै हाथ सूं पेला मनै ई पिस्तोल सूं मारद्यो, फेर थारी मोज आवै सो करो।' सरजू पिस्तोल खाली । लडकी बोली थे राजपूत हो, लड़की पर पिस्तोल चलास्यो ?' सरजू या कैयर कै 'नई, मैं मरद नै मार स्यूं'' पिस्तोल आपरै सीनै पर छोड़र ई बंधड़ सूं सदा रै वास्तै मुगती पाई ।

अभ्यास रा प्रश्न

भाषा सम्बन्धी :

१. इण पाठ मे कई उर्दू वा अंग्रेजी सबद आया है, जिया — इनाम, हुकम, दीवान, कैप्टन, कमिस्नर ।
आप अैडा सबदां री अलग-अलग फैरिस्त वणावो ।

२. पंछी उड्‌ग्यो अर पीजरो पड्‌यो रैग्यो ।
अठै 'पंछी' अर 'पीजरो' सबद किण अरथ मे आया है ?

३. नीचे दियोड़ा मुहावरा नै आपणा वाक्यां मे इण भांत प्रयोग करो कै अरथ स्पष्ट हुई जावै ।
बात वढ़णी, रंग-चढ़णो, धावो बोलणो, तन-बदन मे आग लगणी, सुख री नींद सुवणी ।

विषय-वस्तु सम्बन्धी :

४. 'बार्टन नै ललकारयो कै कमीणपणो कर'र तूं जीत सकै है, पण मनै कोनी हरा सकै ।'
इण कथन सूं रामगढ़ री राणी रै मन री किसी भावना प्रगट हुवै ?
(क) वीरज । (ख) हिम्मत ।
(ग) बहादुरी । (घ) आतमविसवास ।
(ङ) निडरता । ( )

५. तांत्या टोपे नै घेरे सूं बाहर निकालण खातर मैना कांई उपाय काम मे लियो ?
(क) तांत्या टोपै री जगां बा आप धिरगी ।
(ख) बी सिपायां रा अलग-अलग टोळा वणाया ।

(ग) वी तांत्या टोपे ने भाग निकलण री सला दी ।

(घ) वी पूरी तागत सूं जोर रो हमलो कियो ।

(ङ) वी खुद आपरो जीवण होम दियो । ( )

६. 'एक बीनती है कै मनै फांसी न देयर तोप रै मूंडे उड़वाद्यो ।' बाळक राजा फांसी री जगां तोप सूं उडण री बीनती क्यूं करी ?

(क) फांसी सूं डर लागणै रै कारण ।

(ख) फांसी सूं मरण मे घणी तकलीफ होवण रै कारण ।

(ग) झट सोरो मरण रै खातर ।

(घ) देस भगत ज्यूं शहीद हुवण खातर ।

(ङ) वदनामी सूं वचण खातर । ( )

७. 'अंग्रेज अफसर टेळर बाळक राजा नै माय सूं प्रेम करतो हो ।' उण रै प्रेम रो कारण हो, बाळक रो—

(क) सरल सुभाव ।

(ख) रूपाळो उणियारो ।

(ग) हाजरजवाबी ।

(घ) देस-भगति ।

(ङ) सांचपणो । ( )

८. अर्सकिन री बेटी सरजू रै किण गुण पर मुग्ध ही ?

(क) देसभगति ।

(ख) बहादुरी ।

(ग) अमीरी ।

(घ) सुन्दरता ।

(ङ) समरपण । ( )

९. नीचे दियोड़ा प्रश्नां रा उत्तर ५० सबदां मे दो ।

(i) 'ईसूं आछी कांई मौत हो सकै है ।' मैना आछी मौत कीभै क्यो है ?

(ii) मरती वखत मैना रै मूं पर तेज अर होठां पर मुळक होवण री कांई कारण है ?

१०. देस-भगत बाळक अर टेलर साहब री बातचीत आपणां सबदां मे लिखो ।

११. अर्सकिन री बेटी सरजू सूं प्रेम करती ही । सरजू उण प्रेम नै क्यूं ठुकरा दियो ?

रचना, समालोचना अर अनुभग-विस्तार सम्बन्धी :

१२. 'ई देस री वीरांगना तो सदां ई आग में आपरी मरजी सूं बळती आई है।' वीरांगना मैना रो ओ कथन आपणै देस री किण परम्परा री ओर संकेत करै? ५० सबदां में उत्तर दो।

१३. बाळक राजा आपरै हाथ सूं गोली मार'र न मरतो अर कालेपाणी री सजा भुगत वापस आवतो तो टेलर उण रै सागै किसो बरताव करतो? आपरी कल्पना सूं लिखो।

१४. रामगढ़ री राणी री वीरता री तुलना झांसी री राणी लिछमी बाई सूं करो।

१५. सन् १८५७ री क्रांति रै केन्द्र रै रूप में दिल्ली अर कानपुर रा नाम इण पाठ में आया है। आप किणी दो केन्द्रां रा नाम और बतावो।

१६. आजादी री वेदी पर कुरबान हुयोड़ा बाळ शहीदां नै 'धरती रा फूल : 'गिगन रा तारा' कैणो कठातांई ठीक है? सकारण उत्तर दो।

१७. इण पर टिप्पणी लिखो—

(i) सन् १८५७ री क्रांति। (ii) कालेपाणी री सजा।

५. बिरमाजीखनै डेपुटेसन

(श्री भंवरलाल नाहटा)

(श्री भवरलाल नाहटा रो जनम सं० १९६८ मे बीकानेर में हुयो। यूं तो आप देश रा नामी बैपारी है पण साहित्य सूं भी आपरो घणो लगाव है। आप राजस्थानी रा मानीजात शोध-विद्वान श्री अगरचंद जी नाहटा रा भतीजा अर साहित्यिक कामां में उणा रा सहयोगी है। धार्मिक अर सामाजिक प्रवृत्तियां मे आपरी खासी रुचि है। आप केई संस्थावां रा ट्रस्टी अर सभापति है। आप किणी विश्वविद्यालय में पढाई नी करी पण आपणै लगन अर अभ्यास सूं संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, गुजराती, बँगला, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषावां

री आछी जाणकारी करी है। आपरो पुराणी लिपि, भाषा विज्ञान, इतिहास; पुरातत्व अर कला में गहरी रुचि है। इण रुचि रै कारण ईज आप पुराणी पोथियां, शिलालेख अर कलात्मक वस्तुवां रो विशाल संग्रह करियो है।

पुराणै ग्रंथां रै सम्पादन अर खोज में आपरो गहरो लगाव है। आप श्री अगरचन्द नाहटा रै सागै मिल'र केई ग्रंथ सम्पादित करिया है, जिणांमें प्रमुख हैं—युग प्रधान श्री जिनचन्द्रसूरि, ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह, दादा जिनकुशल सूरि, ज्ञानसार ग्रंथावली, बीकानेर जैन लेख संग्रह समय सुन्दर कृति कुसुमांजलि, सीताराम चौपई, रत्नपरीक्षा आदि। आप खुद स्वतन्त्र रूप सूं हमीरायण पद्मिनी चरित चौपाई, विनय चन्द कृति कुसुमांजलि, समयसुन्दर रास पंचक आदि ग्रंथ सम्पादित करिया है। आप मौलिक साहित्य सिरजणा भी करी। 'वानगी' इण रो उदाहरण है। इण में आपरा लिखियोड़ा संस्मरण रेखाचित्र अर लघु कथावां संगृहीत है।

सकळित अंश 'वानगी' सूं लियोड़ो है। एक रूपात्मक कथा रै माध्यम सूं इण में ओ सत्य व्यंजित करीज्यो है कै जीणो नहीं आणणै सूं जीवण भारभूत हुयजावै। मिनख री मरदगी अरथ अर काम रै उपजाणै सारू ई कोनी। मिनख नै धरम अर मोक्ष री दिसावां में भी लगोलग प्रयास करणो चाहिजे। बळध, कुत्ते अर बुगळे रो जीवण तो करम विपाक रै खाते मडे। असल में जीवण तो एक सगति-साधना है। सिमरथ रैवतो आपणो जीवण परमारथ चिंतण में बीताणो चाहिजै। आ कथा इण बात पर जोर देवै है कै जिनगाणी रा लारला साठ बरस पसु जीवण जियां नहीं बीता'र परिपक्व अणुभवां रै जरियै सात्विक दैविक जीवण में परिणत कर देना चाहिजै।

विरमाजी खनै डेपुटेसन

(१)

विरमाजी माराज सिस्टी'री रचना करी जद सगळै जीवां नै ऊमर एक सिरखी चाळीस बरसां-री दीनी। आ मरजाद कई पीढ़िया तांई चाली। लोग आपरा खारा-मीठा अणभोव ले'र विरमाजी खनै डेपुटेसन लाया। मिनख अरज करी-माराज। वीस बरस तो टाबर पणे में बीत्या, लारला बीस बरसां

मे घरगिरस्ती गिडी अर जावण री त्यारी । तो इत्ती थोड़ी ऊमर में मानखा देही पा'र कंई सार ? आप ऊमर वधावो । विरमाजी कैयो-वैठजा । इत्तै में ई वळद आयो अर कैयो—माराज । मनै थे चालीस वरसां-री ऊमर दी, हूं तो उथप-ग्यो । गाड़ी में जुत'र हजार मण भार ढोऊं, तेली'री घाणी में जुतूं तो आखया आड़ी पाटी बांध'र चक्कर काढूं । कणै-ई हळ चलाऊं तो कणै ई कूओ बाऊं । मनै तो कठैई खास खावण नै वेळा कोनी, ऊपर सूं डंडा पड़ै पाखती मे । भूख-तिस री तो गिणत-ई कोई कठै सूं करै । अबै आ अरज है कै बूढ पै-रा वरस तो थारा पाछा लो । विरमाजी वळध रा बीस वरस ले'र मिनख नै दे दिया ।

(२)

विरमाजी दरीखानै में विराज्या हा । वानै फुरसत कठै ही । कुत्तौजा पूंछ हिलावता आ'र लटवा करण लागा । क्यों भई श्वानराज । कई सला है ? कुत्तै कैयो— माराज । थां जुलम कर दियो जिको मनै चालीस वरसां-री ऊमर दे दी है। हूं तो लोगां रा तळिया चाटतै-चाटतै अर भसतै-भसतै तंग आयग्यो । लोक मनै नीची निजर-सूं देखै है। कोई दिरकारै, कोई भाठा मारै तो कोई डांग'री ते'र कमर भांग दै । हू तो आखी रात रुखवाळी करुं पण लोक मनै पेट भर टुकड़ो ई को घालै नी दिरकार-दिरकार काढ़ै। माराज ! थाँरा बीस वरस तो पाछा लेओ जिको कंई तो दुख ओछो होवै। विरमाजी बीस बरस कुत्तै रा ले'र मिनख नै दे दिया ।

(३)

अबै बुगलो जी पग रया । बां अरज करी माराज ! म्हारो धोळो डील देख'र लोक मनै कोई हंसै, कोई जोगीराज समझै पण म्हारी तो सगळी ऊमर धोखा धड़ी, मायाजाळ अ'र फरेब में पूरी हुवै । नदी-रै किनारै एक पग-रै ताण जोगीराज री दाई ऊभो रेऊं । ज्यों-ई मछी भोळप मे नैड़ी आवै बीनै गिट'र पाछो बियांई ध्यान में खड़ो हुय जाऊं । जळ-जीव बापड़ा जोग समाधि में मनै लीन देख'र फेर धोखो खावै । इण तरै हूं म्हारो पापी पेट पूरो कर'र नरग जाणैरी त्यारी करूं । माराज ! म्हारी ऊमर कई तो कम करो, चाळीस

रा बीस, करो जिको सातवीं नारगी री जगां तीजी नारगी तो मिळै । विरमाजी वुगळै'रा फेर वीस बरस ले'र मिनख नै दे दिया ।

(४)

इण-तरै मिनख रो पूरो सौ वरस-रो आऊखो हुयग्यो । पण आ वात कदास ध्यान में रेवै कै आपां री असली ऊमर तो चालीस वरसा-री ई है वाकी तो वळध, कुत्तै अ'र वुगलै खनै लियोड़ी है । इयै कारण लारली तीनूं बीसी वांरी तरै ही वीतै है तो मिनख गाफळ को रैवेनी ।

पैला चालीस वरस-तो पढ़णै-लिखणै, होस-हवास, ज्ञान-विज्ञान, सोच समझ रै साथै गिस्ती रा वीतै । फेर वीस वरस वळध रै जीवणा है—जिकै घाणी अर गाड़ी-रै वळध री दाई कार-बार, व्यापार, घर रै धंधे-में बीतै । वेटां, पोतां रा व्यांव-सावा, कमावण-कजावण, सुख-दुख; कुटुम्व-रा कांटा सुळझाणै में साठ वरसां रो हुवै । दूजा वीस वरस कुत्तै'ड़ा लियोड़ा हुणै-रै कारण साठ सूं अस्सो वरस तांई री ऊमर कुत्तै री दाई विताणी पड़ै । घर री रुखवाळी करै, टावरां नै रमाणै जद वीने टुकड़ा मिळै । लारला बीस वरस वुगळ खनै लियोड़ा है । वावाजी अस्सी रा हुयां पछै घर-री काम-काज हुवै कोयनी । बीनण्यां वैनै सारो दिन खसूं-खसूं खाली करतै, झेर्‌या लेतै, माळयां सेडो नाखतै देख'र ऊथप जावै । जव कैव-वावेजी नै दो घडी दुकान ले जायां करो जिको अठै घर मे बीनण्यां तो सुख सूं टुरै-फिरै । अवै वासोजी दुकान माथै आ'र तकियोरै सारै विराजै । वुगळै-रै जीवण रा वीस वरस वुगळै-री तरै लोगां-नै गायकां नै फसावण-में वीतै । वावो जी गायकां नै वारै दादा-पड़दादां रा नांव वता'र कैवै-अरे वे-तो म्हारा खास मायळा हा भाई, वखत को रहीनी । वानै तो म्हे लाखू रुपिया रा माळ वेचता । वे तो म्हारी दुकान छोड़'र दूजै री दुकान माथै पग ई को देता नी । इण तरै गायकां नै फसाणै अ'र ऊजळै वुगलै री तरै आपरो आऊखो पूरो करै ।

इयै कथा मे सांचो सार ओ-ई है कै मिनख रा चाळीस वरस वड़ै काम रा है । इयै ऊमर मे भावी जीवण-री रूप-रेखा जिसी कर सकै आगळो जीवण वेरै माफक ई वणै तथा वीतै । इयै वास्ते आगळै जीवण री त्यारी इण ऊमर में ई कर लैणी जोइजै ।

अभ्यास रा प्रश्न

भाषा सम्बन्धी :

१. नीचे दियोड़ा सबदां रा हिन्दी रूप लिखो—
बिरमाजी, सिस्टी, मरजाद, अणमोव, बळध, आऊखो ।

२. नीचे लिख्योड़ा सबदां में किसो सबद द्वन्द्व समास रो उदाहरण कोनी है?
(क) खारा-मीठा । (ख) भूख-तिस ।
(ग) जळ-जीव । (घ) ज्ञान-विज्ञान ।
(ङ) सोच-समझ । ( )

३. 'इण तरै हूं म्हारो पापी पेट पूरो कर'र नरग जाणै री त्यारी करू ।' बुगळै रै इण कथन मे पेट नै पापी केवण रो कांई अरथ है ?

विषय वस्तु सम्बन्धी :

४. बिरमाजी माराज सिस्टी री रचना करी जद सगळै जीवां नै कित्ता वरसा री ऊमर दीनी ?
(क) चाळीस (ख) बीस
(ग) साठ (घ) अस्सी
(ङ) सौ । ( )

५. इण पाठ री सांची सीख कांई है ?
(क) कळध ज्यूं जीवणो ।
(ख) कुत्तै ज्यूं जीवणो ।
(ग) बुगळै ज्यूं जीवणो ।
(घ) मिनख रो सात्विक जीवण जीवणो ।
(ङ) सगळा रो मिल्यो-जुल्यो जीवण जीवणो । ( )

६. 'हूं तो आखी रात रुखवाळी करूं पण लोक मनै पेट भर टुकड़ो ई को घालै नी ।' कुत्तै रै इण कथन सूं लोक री किण मनोवृत्ति री ठा पड़ै ?
(क) सुवारथपणो ।
(ख) कंजूसपणो ।
(ग) घ्रिणा ।

(घ) नाराजगी।

(ङ) गरीबी। ( )

७. मिनख आपरी उमर बधावणी अर दूजा जीव आपरी ऊमर कम कर वणी क्यूं चावता ? ७० सबदां में लिखो।

८. 'मिनख नै साठ सूं अस्सी बरस तांई री ऊमर कुत्तै री दांई बिताणी पड़ै।' किण भांत ?

९. मिनख रे अस्सी बरस सूं लेर सौ बरस तांई रे जीवण री तुलना बुगळै रे जीवण सूं करण री कांई कारण है (

रचना, समालोचना अर अनुभव-विस्तार सम्बन्धी :

१०. इण पाठ सूं बळध री उपयोग बतळावण आळी ओळयां छांटो।

११. 'पण आ बात कदास ध्यान मे रैवै कै आपां री असली ऊमर तो चालीस वरसां-री ई है—बाकी तो बळध, कुत्तै अर बुगळै खनै लियोड़ी है।' इण कथन मे छिप्योड़ा भाव स्पष्ट करो।

१२. आप इण डेपुटेसन मे सामळ होवता तो ब्रिरमाजी सूं कांई मांगता ?

१३. नीचे तीन जीवां रा नाम अर उणरे सामै कोष्ठक मे उणा रा दो-दो गुण दियोडा है। जिण गुण नै आप सांचो समझो उण माथै सही री निसाण लगावो।

जीव	गुण
बळध	(स्वामिभगति, मेनतपणो) ?
कुत्तो	(मेनतपणो, स्वामिभगति)
बुगळो	(भोळा-बड़ो, मेनतपणो)

१४. डेपुटेसन कांई व्है ? किण खनै कुण डेपुटेसन ले'र जावै ?

१५. कल्पना करो आप आपां रे गांव में अस्पताल खोलण खातर एक डेपुटेसन लेर राज्य रे स्वास्थ्य मन्त्री सूं मिल्या। उठै हुयोड़ी बात-चीत रै आधार पर 'स्वास्थ्य मन्त्री खनै डेपुटेसन' विषय पर एक लेख लिखो।

६. रुघो खल्ला गांठियां
(श्री मुरळीधर व्यास)

(श्री मुरळीधर व्यास रो जनम सं० १९५५ मे बीकानेर में हुयो। आप लगभग आधी सदी सूं राजस्थानी मे लिखता आया है अर आज रै राजस्थानी लेखकां रा प्रेरणा-स्रोत रह्या है।

आप सादूळ राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट रा संस्थापक सदस्य अर 'राजस्थान भारती' रै संपादक-मण्डल रा सदस्य है। 'राजस्थान भासा प्रचार सभा' जयपुर रै परीक्षा विभाग रा अध्यक्ष अर राजस्थानी भाषा साहित्य संगम' (अकादमी) बीकानेर रा सभापति है।

श्री व्यासजी राजस्थानी रा प्रौढ़ गद्य-शिल्पी है। हिन्दी कहाणी में समै-समै पर जे नूवां प्रयोग हुवा उणां नै राजस्थानी में लावण रो श्रेय व्यासजी ने है। आप लघु कथावां, संस्मरण अर रेखाचित्र लिखण में घणा माहिर है। आपरी रचणावां में राजस्थान रो आंचलिक जीवण घणी खूबी सूं मंडीज्यो है। आपरी भाषा सरल अर मुहावरेदार तथा शैली घरेलू हुवतां थकां भी साहित्यिक है।

आप राजस्थानी अर हिन्दी दोन्यूं भाषावां में रचना करी है। आपरी राजस्थानी भाषा री छप्योड़ी पोथियां है—'वरसगांठ' (कहाणी संग्रह) 'इक्केवाळो' (हास्य), 'जूना जीवता चितराम' (रेखाचित्र), 'राजस्थानी कहावतां' दो भाग 'सह संपादित) 'राजस्थानी धूमरें' 'सह-लेखन) 'दाढ़ी पर टैक्स' अर 'उज्ज्वल मणियां' आपरी हिन्दी में छप्योड़ी पोथियां है।

संकळित रेखाचित्र 'जूना जीवता चितराम' सूं लियोड़ो है। इण में राजस्थानी लोक जीवन रो, चितराम है। सगळा आप-आपरी जूण-खोळ में मस्त अर सुखी सोरा है। सामाजिक अर आर्थिक स्थिति में भेद होवतां थकां

सी सगळा आपस में प्रेम भाव राखै अर कोई आपरै श्रम नै हीण नीं मानै। ऊंचे घराणे री बऊ-बेटूयां भी खल्ला गांठणियै रुग्घै नै आपरै परिवार रो सदस्य समझ'र उणनै काका, बाबा, नाना, दादा ज्यूं मान देवै। ओ चितराम मिनखाचार री भावनावां रो सांचो दरपण है।)

रुग्घा खल्ला गांठणियौ

(१)

आंख्यां काढ़तै वैसाख-जेठ रै तावड़ै में इग्यारै वजी रै आसरै, दवां-में खालड़ै रो थेलो लटकायां खांधै ऊपर लीगलियोड़ो अर स्यांळ आयोड़ो दूणियो लियां बोटी री भागी-टूटी अर चीथ्या लपेटियोड़ी लकड़ी र सायरै खाथो-खाथो पग उठांवतो, रुग्घो, म्हांरै चौक में आया करतो।

तुवकी सुक्की करड़-कावरी दाढ़कली काळो दराय डणियारो, माथै ऊपर विदरंगी लीरा लटकतो पाग लपेटियोड़ो, टांट उघाणो मैलो कुच गुढ़यां चायरी चीळो पैरियोड़ो, आंख्यां नीचै छोटी छोटी रेखावां अर कान टिरियोड़ा देख'र, सैज में ई, इदाजो लाग जांवतो, कै, रुग्घो मोकळा सीयाळा-ऊनाळा देखियोड़ा अर घडी तातो सैयोड़ो है।

चौक तावड़ै सूं भरीज जांवतो। जणै सेठ गोमदरामजी रै पाट रै नीचै, मैलै पाणी री कूंडी खनै, धुरै विछाणां ऊपर ई, अवधूत दाई- रुवो, टांगड़ा पसार'र थोड़ो विसराम करतो। पछै सेठां रै घरसूं, पाणी रो दूणियो भराय'र, आंख्यां छांटतो, पाणी पीवतो अर चिलमड़ी चेताय'र दम लगावंतो। फेर, थेले मांय सूं, बोदी खाल रा टुकड़ा, नवी खाल, सूत री गेड़ी, जाड़ी सूई, सूवो, खाल चीरण री सीग्वी मूठदार पातो, छोटी चौकोर माठी अर खाल भिजोवण माळू पाळसियो काढ'र ठौड़ री ठौड़ जचांवतो। एक पसावाई दूणियो अर टूटोड़ी चिलमड़ी मेलतो।

(२)

छोकरा सगळै, रुग्घै री माप-काण राखता हा। लुगायां वैरै आगे सूं; अगरखी पैरियां को नीसरती ही नी। कदास भूल'र अणजाण में कोई नीसर जांवती तो रुग्घो कैवतो आ तो उसम रै माथै ऊपर खल्ला ले जासी। डायण, काळजाणी होय'र झट ई, पगरखी, हाथ में उठाय लेंवती।

चोकवाळा, क्या साईना क्या छोटा, सगळै वैनै; 'रुग्घो दादो' कैय,र वतळांवता हा। मरणै-परणै, जिलमणै-खूटणै ओणरी, वैरै, पूरी-पूरी ठा रैवती ही।

वीनण्यां अर टावरां री, फाटीपगरखी, देखती जद, टोकर कैंवतो-खोलजा पगरखी, हुणै गांठ देऊं'ला, कदास पग मे, कई खुभ जावै जाणै। वां री पगरखी री गंठाई को लेंवतो हो नी। वड़ा बूढ़ा, आपेई, आपरां पगरखी री गंठाई देय जोवता तो ठीक, नही जणै, दादो, तगादो को करतो हो नी।

कदेई, दादो, वातां में लाग जांवतो अर सिज्या पड़ जांवती, तो, कई न कई घर सूं, ऊनी दाळ-रोटी आय जांवती। टूकै मे, चौक में, वैरो, माईनां जिसो माण हो।

जीमण-जूठण में, कारू-कमीणां नै, बोदो निवड़ियै पछै, नेग परसै है। पण, दादै नै तो माण सं वैगोई जीमाय देवता अर टाबरियां बगां कंई घाल देंवता।

सीयळै में, मदरसै री छूट्टी रै दिन, तावडै में, छोरा, दाडै खनै बूझ बूझाकड़जी रा चुटकेला अर काण्यां सुणता अर घणा राजी होंवता।

साईनां, दादै सूं, गिरस्ती री वातां मे, सलासूत लिया करता।

(२)

एक वार, गोमदरामजी रै घरै, छोरी रो व्यांव हो। मिठाई बणावणै अर जान जीमावण सारू कोटड़ी जोयीजती ही। एक कोटड़ी, सगां री ही, पण वे, हां-नां रो खुलासा उथलो नही देय'र. टरकांवता हा। कदे, कंवता-मुनीम जी मांय कोई नी, कदै कैवतां कूंची फलाणै नै दियोड़ी है, मंगावणी पड़सी।

एक दिन गोमदरामजी, पाटै माथै बैठा, आई बात कर रया हा। इत्तै मे, रुग्घो बोलियो-इसा ई क्या सगा-सोई जिको कोटड़ी को देवैनी। क्या कोटड़ी घसी जै है? क्या कोटड़ी री कानों तोड़ लैसा? क्या कोटड़ी लारै ले जावेला? माईत ई म्हारी-म्हारी करता, अठै ई छोडग्या। आज, म्हारै सागै, कई नै भेजो, देखां कांकर कूंची को देवैनी। बात रा टका लागै है, गोमदरजाई।

गोमद, एक जणै नै, दादै रै सागै कर दियो। दादो, लै ठाकुरजी रो

नांव'र जाय खटकियाँ। जै रामजी री कीनी अर चावी मांगी। सागी ई टरकाऊ उथळो मिळलो-मुनीमजी चौवटै गयोडा है।

कदसीक आसी ?'

'आ कूण जाणे।'

भला माणसां ! कूंची री खातर क्या नित-नित गोता घालो हो ? म्हारे फोड़ा पड़ रया है।

'फोड़ा तो पड़ता ई होवैला। मुनीमजी नै आय जांवण दो। चावी पूगाय देसां, थे भलाई सिधागो।'

'हूं अठै ई बैठो हूं। इयै मिस, मुनीमजी रा सरसण तो हुय जावेला।

'मरजी थांरी'

सेठसा किठै विराजै है।'

'वे क्या करैला ?'

'मालकां। थे, वाने, म्हांरे आगां री, खड़क ता पूगाय दो।

'इतैई, सेठ सावरी बग्घी री घंटी सुणीजी। दादै, जै रामजी री कीनी। सेठांई पाछी जै रामजी री कर'र पूछियो-बोलो, कांकर आवणो हुयो ?

गोमदरामजी री बाई रो ब्यांव है। आपरी कोटड़ी री कूंची मगाई है।'

'खुसी सूं ले जावो। वांरी'ज कोटड़ी है। पण थोड़ा ठैरो, मुनीमजी नै आय जावण दो।

'मालकां। मोकळा दिन फिरता हुयग्या। आजतो, आप, कांकर ई कर'र चावी दरायई देवो तो ठीक रैवै।

घणा दिनां सूं फिरो हो अर चावी को मिळी ना ?

अबो ई किरपा कराय दो तो घणी आछी, मोटां सिरदारां।

सेठ सा, फट ई मइस नै, चावी लावण री कैयो। मिनटां मे ई, चावी आयगी। दादै लाय'र गोमदरामजी नै सोंप दी।

कदै-कदे, पोतो आड़ी करतो जद, दादो बीनै, सागै टोर लांवतो। चोक वाळा लाड सूं बीनै दुपारो देंवता। घर जाती वेळा थोड़ो मीठो-चूंठो अर टाबरां रा उतारू गाभा देंवता।

आज वै वात नै मोकळा वरस हुयग्या । दादो अर दादै रा भाईना सगळै घरगापुर सिधारग्या । पण हाल ई, जद हरिजन आंदोळण री बातां छिड़ै, जद, रुग्घै दादै रै मीठै मेळरो चरचा चतियां विना को रैवैनी ।

अभ्यास रा प्रश्न

भाषा सम्बन्धी :

१. नीचे दियोड़ा सबद-युगमां रो अरथ-भेद स्पष्ट करो—

(i) खाळ । खल्ला ।　　(ii) चीक । चीकरा ।

(iii) गांठ । गठाई ।　　(iv) सईस । मूनीम ।

(v) चुटकला । कहाणी ।

२. इणा रा दो-दो पर्यायवाची सबद लिखो—

पगरखी, खसम, कूंची, गाभा ।

३. नीचे दियोड़ा सबदां री बणघट पर ध्यान दो । लेखण मे अैड़ा सबद घणा काम आवै । आप इसा चार सबद-युगम और बतावो—

माण-काण, जीमण-जूठण, काठ-कमीणा, सगा-सोई, मीठो-चूठो-फरड-काबरी ।

४. 'रुग्घै मोकळा सीयाळा-ऊनाळा देखियोड़ा अर ठडी-तती सैयोड़ी है ।' इण वाक्य मे ठडी-ताती' सैयोड़ी है रो अरथ है—

(क) सीयाळा री ठंडी सैयोड़ी है ।

(ख) ऊनाळा री गरमी सैयोड़ी है ।

(ग) ठड अर गरमी दोन्यूं सैयोड़ी है ।

(घ) जीवण रा सुख-दुख भोग्योड़ा है ।

(ङ) भांत भांत रा अणुभव करयोड़ा है ।　　(　　)

विषय वस्तु सम्बन्धी :

५. सेठ गोमदरामजी रै पाटै रै नीचै बैठयोडै रुग्घै नै लेखक अवधूत दाई क्यूं बतायो ?

(क) डरावणी सूरत रै कारण ।

(ख) भोळा सुभाव रै कारण ।

(ग) मस्ती अर बेपरवाही रै कारण।
(घ) घर-बार नीं हुवण रै कारण।
(ङ) भूखो तिसो रैवण रै कारण। ( )

६. लुगायां रुघ्घै आगै सूं पगरखी पैरियां को नीसरती हीं नी। इण रो कारण हो—
(क) रुग्घा रो घणो रोब हो।
(ख) लुगायां उण सूं डरती हीं।
(ग) वो लुगायां नै छेड़तो हो।
(घ) वो लुगायां री जूतियां खोस लेतो हो।
(ङ) लुगायां उण रो गाण-काण राखती ही।

७. 'रुग्घो वीनण्यां अर टाबरां सूं पगरखी री गंठाई को लेवतो नी।' इण कथन सूं रुघ्घै रै चरित्त री कांई विशेषता प्रकट हुवै?
(क) प्रेम। (ख) दया।
(ग) भोलापो। (घ) अपणायत।
(ङ) निरलोभपणो। ( )

८. 'जद हरिजण आन्दोळन री वातां' छिड़ै, रुघ्घै दादै री चरचा चलियां बिना को रैवै नी।' रुग्घै दादै री चरचा चलण रो कारण है—
क) आन्दोळण में उण री मौत।
(ख) उण रो मीठो-मेळ मिलाप।
(ग) उण रै मिनखपणा री याद।
(घ) चौक रै टाबरां सूं उणरो प्रेम।
(ङ) उण री उल्ला गांठण री चतराई। ( )

९. चौक आळा रुग्घै नै 'रुग्घो दादो' कैय'र क्यूं बतळावता हा? ५० सबदां में लिखो।

१०. वीनण्यां अर टाबरां री फाटी पगरखी देख'र रुग्घो उणा नै क्यूं टोकतो?

११. 'रुघें रो हूकै में माईतां जिसो माण हो।' इण कथन नै सिद्ध करण आळो एक उदाहरण दो।

१२. इण पाठ सूं बी ओळयां छांटो जिणसूं रुघा रो चितराम मंड जावै।

रचना, समालोचना अर अनुभव-विस्तार सम्बन्धी :

१३. खल्ला गांठण रो काम करण सारू किण-किण वस्तुवां री जरूरत पड़ै? इण पाठ रै आधार सूं उणां री एक फेरिस्त बणावो।

१४. 'रुघैं सगा-कोई सूं कूंची लाय नै गोमदरामजी नै दी।' इण घटना सूं किण भांत री समाज-व्यवस्था री ठा पड़ै? ८० सबदां मे लिखो।

१५. आपरै गांव मैं जद सादी-ब्याव व्है तद लोग परस्पर किण भांत मदद करै? दो उदाहरण देय'र समझावो।

१६. 'हरिजण आन्दोळण पर एक लेख लिखो।

१७. 'बरफआळो' पाठ इण पाठ रै सागै पढ'र दोन्यूं पाठां मे आपनै जे समानता-असमानता दीसै, उण री एक तालिका बणावो।

१८. जे आपने ओ पाठ रुचिकर लाग्यो हुवै तो आप' 'जूना जीवता चितराम' पुस्तक मे छप्योड़ा लेखक रा बीजा संस्मरण भी पढ़ो।

७. मुरलीधर री ईमानदारी

(श्री शिवचन्द्र भरतिया)

(श्री शिवचन्द्र भरतिया रौ जनम सं० १६१० मे हुयो। आप रा बडेरा जोधपुर राज्य रै डीडवाणा सूं हैदराबाद रै कन्नड गांव में जा बस्या हा। बठै ही भरतिया जी जनमिया। पारिवारिक कारणां सूं आप व्यौपार छोड'र वकालत करण लाग्या, पण वकालत में आप रो जी नी लाग्यो अर इन्दौर में आर सरकारी नौकरी कर ली। इण काम माथै भी आप ज्यादा कोनी रैया

अर नौकरी छोड'र साहित्य-सिरजण में लागग्या। जींवण रै छेकड़ला दिना में आप योग साधना कानी मैं प्रवृत्त हुया। स० १९७१ में सग्रहणी रोग सूं आप रो सुरगवास हुयो।

श्री भरतियाजी विद्याव्यसनी अर अनेक भाषावां रा जाणकार हा। हिन्दी, मराठी, संस्कृत, राजस्थानी अर गुजराती पर आपरो जबरदस्त अधिकार हो, अर इण सगळी भाषावां में आप पुस्तकां लिखी। श्री भरतिया जी पक्का देस भगत, स्वेदेसी प्रेमी अर राष्ट्रभाषा हिन्दी रा समर्थक हा। मारवाड़ी समाज में फैल्योड़ी कुरीतियां नै मिटावण खातर आप राजस्थान में नू वी-नूंवी विधावा में साहित्य सिरजणा सरू करी। इण दृष्टि सूं आप राजस्थानी रा भारतेन्दु कहीजै।

श्री भरतिया जी राजस्थानी में नाटक अर उपन्यास लिखण रो सूत्रपात कियो। 'केसरविलास', 'वुढ़ापा री सगाई', अर 'फाटका जजाळ' आपरी प्रमुख नाटक-कृतियां है। 'कनकसुन्दर' उपन्यास है जिण में लेखक राजस्थानी जीवण अर सस्कृति रो सुन्दर चित्र अंकित कियो है। भरतियाजी री बीजी रचनावां इण भांत है—गीतार्थ पद्यावली (मराठी), प्रवास कुसुमावली गुच्छ भाग १, लड़की की वहादुरी, जापानी मारवाडी (हिन्दी), विश्रांत प्रवासी, वड़ा वजार, मोत्यां री कंठी (राजस्थानी); सिद्धेन्दु चन्द्रिका, राज्यारोहण प्रशस्ति (सस्कृत)।

संकळित अंश भरतियाजी रै 'कनकसुन्दर' उपन्यास रो एक अश है। इण मे उपन्यास रै प्रमुख पात्र मुरळीधर री व्यावसायिक ईमानदारी रो रोचक वरणन है।)

मुरळीधर री ईमानदारी

(१)

दोपहर दिन-को वखत। च्यारा कानी लू चाल रही छै। हवा का जोर-सूं वालू अठी-की उठी-नै उड-उड-कर वी-का नवा-नवा टीबा हो रहया छै। और भीजण भी रहया छै। मुंह ऊंचो कर सामनै चालणो मुस्कल छै। लू कपड़ा मांहे वड़-कर सारा सरीर-नै सिकताव कर रही छै। धूप इसी जोर की

रहता। बैपार सवो-सो थो नही तो-भी मेहनत-मजूरीवाला-नै निभाव-की जगा थी। मुरळीधरजी उठै अेक छोटी-सी कोटड़ी भाड़ा-सूं लेकर रहवा लाग्या। चार्‌यां कानी फिरकर गाव देख्यो। फेरी-सूं कपड़ो बेचवा-को इरादो कीनो। फिरकोळ कपड़ो छींटा-का टुकड़ा वगैरा दस-पंधरा रुपिया-का घणी जांच कर-नै फायदा-सूं लीना फेरी देणी सरू कीनी। विचार कीनो कै कपड़ा ऊपर थोड़ो नफो रखकर गिरायक-नं अेक-जबाव बोलणो, माल बिको अथवा मत बिको। पहले दिन सारा गांव माहे फेरी दीनी, पण अेक भाव बोलणै-सूं कुछ बिकरी हुयी नही। मुरळीधरजी दिल-का पक्का और हीमत-का पूरा। अेक निश्चय कर लीनो कै झूठ तो बोलणो-ज नही, क्यूं भी हो, सचावट राखणी; देखां, भलां कांई परिणाम हुवै ? दो-तीन दिन इण तरहै ही गया। फेर थोड़ो-थोड़ो कपड़ो बिकवा लाग्यो। लोगां-नै मालम हो गयी कै ओ वाण्यो अेक वात बोलै छं, फेर उण मांहे कमी-ज्यादा करै नहीं। महिना पंधरा दिनां पाछै बिकरी आछी होवा लाग गयी। ऊपर-को-ऊपर माल बेच-कर जका-को कपड़ो लाता बी-नै पैसा चुका देता। इण तरहै थोड़ा दिनां मांहे मुरळीधरजी-की साख खंडवा माहे आछी पड़ गयी। चार-छं महिना मांहे तीन तीन चार सौ-की पूंजी हो गयी।

'सांच-नै आंच नही'—सचावट दुनियां मांहे मोटी चीज छै। सच्चा आदमी पर सरां-को विश्वास बैठ जावै। विश्वास बैठयां पीछै कोई बात-की कमती नही। सांच-नै कठै भी डर नही, धोको नही और खराबो नही। सांच ऊपर सूर्य, चन्द्र, तारा, पृथवी चल रह्या छै। सांच ऊपरी सारी दुनियां-को कारबार छै। सांच ही सगळां को जीवण छै। सांच ऊपर राज्य-को पायो छै। सांच ऊपर बैपार-की इमारत छै। सांच की लछमी बधी हुई छै। जिण आदमी के पास सांच छ। उण-कै सामनै अष्टसिद्धि नवनिधि हाथ जोड़-कर खड़्यां छै। सांच-के वशीभूत प्रत्यक्ष नारायण छै। सांच पुण्य-को मेरु, धर्म-को सागर, नीति-की गंगा और बाणी-को पवित्र क्षेत्र छै। सांच बिना शोभा नहीं, आबरू नही, धन नही, मान नही, कुछ भी नही। किसी-भी विपत पड़ो, किसी-भी परसग आवो—सांच-नै छोड़णो नही राजा हरिश्चन्द्र सांच-कै वास्तै राज

गमायो,लुगाई-बेटां-नै गमाया, आप बिक गयो, नाना प्रकार-का संकट भोग्या, पण सांच छोड़ी नहीं। नळ राजा महा-संकट भोग्यो पण सांच छोड़ी नहीं। पांडवाँ राज गमायो, वनवास भोग्यो पण साच छोड़ी नहीं। इण तरूहै ही म्हा-का मुरळीधरजी सांच ऊपर कमर बांधकर सांच-को पूरो पूरो आश्रयलीनो।

इण सचावट-सूं खंडवा मांहे सारा-ही मुरळीधरजी-की शोभा करवा लाग गया। उण पर सारां-को पूरो-पूरो विश्वास बैठ गयो। अब कपड़ा-कै तांई बराणपुर, भुसावल, जळगांव तोड़ी ज वा-आवा लाग गया। हजारां रुपियां-को माल उधार मिलबा लग गयो। दुकान पर हर कपड़ा-का थान ऊपर कीमत-की चिट्ठियां मार दीनी। अेक फरदी करनै बार-सूं हर थान-का भाव नमूद कर दीना। इण तरूहै-की साख वधी कै भाव बोलणै-की कोनै जरूरत रही नहीं।

कोई भी गिरायक सावत थान लेवै तो थान पर रुपिया मड्योड़ा देखकर विना बोल्यां दे जावै और किरकोळवाला फरदी मांहे भाव देखकर दाम दे जावै। देढ-दो वरस मांहे मुरळीधरजी आठ-दस हजार-का मालक बण गया।

उत्तम खेती, मध्यम वैपार. कनिष्ट चाकर और भीक निदान' कहवत छै। खेती ऊपर तो आपणो सारो ही देस छै। वैपार मध्यम कह्यो छै पण पराशर ऋषि-को कहणो छै कै वैपार माहे लक्ष्मी पूरी वसै छै, बी सूं आधी खेती मांहे, बी-सूं आधी राजा की नौकरी मांहे और भीख मांहे तो कुछ भी नहीं। इसी वास्तै वैपार सारां-सूँ घणो ऊंचो और श्रेष्ठ छै, बी-को पार नहीं। अंग्रेज लोगां इत्ती बड़ी सत्ता और वैभव वैपार-का कारण-सूंज सपादन कीना छै। वैपार-को मुख्य पायो तथा आधार सांच, उद्योग और नियमित-पणा पर छै। टापटीप, व्यवस्थितपणो, अेक वात, वखत-की वखत भुगतावण मीठी वात, नरमाई और गिरायक-को आदर-सत्कार अै वैपार-का अग छै। अंग्रेज लोग मट्टी-को सोनो कर रह्या छै। वै लोग कोई काम मांहे फस भी जावै तो बी-को पीछो छोड़कर निराश होकर बैठै नहीं, पूरो पीछो लेकर बी काम-नै शेवट ले जावै। आज सारो दुनिया-भर-को वैपार इण लोगां-कै हाथ मांहे छै।

(३)

अेक दिन उठै-का बड़ा साहब कानी-सूं कपड़ा-लत्ता और फिरकोल माल-की फेरिस्त आयी। तिको मुरळीधरजी आप-का भाई-नै दीनी और कह्यो कै फेरिस्त मुजब सारो माल आपणा आदमी-कै साथ देकर, मांल-की कीमत बराबर लगाकर, बीजक साथ देकर, भेज द्यो। तिका परवाणै हजारीमलजी सारो माल निकळकर गुमास्ता कनै सूं बीजक लिखाय-नै भेज दीनो। शाम का मुरळीधरजी जमां-खरच देखवा लाग्या। साहब-का नाव सूं माल नोंध्योड़ो देख्यो। सारा माल-की कीमत बराबर थी परन्तु काळी बनात-को थान, जका-की कीमत खरच-नफा सूधा नौ रुपया वार-की थी सू हजारीमलजी जाण-बूझ-कर बारा रुपिया वार-को भाव लगा दीनो थो। मुरळीधरजी देखकर चौक उठ्या। और भाई-नै बोल्या कै ओ कांई कीनो? नौ-कै ठिकाणै बारा कियान लगाया? आ बात आछी कीनी नही, बात-नै बट्टो लगायो।

हजारीमलजी सुणकर बोल्या कै कांई हुवो? चार-पान-सौ-को माल गयो जका मांहे अेक बनात-का दाम ज्यादा लगाया तो कांई हरकत छै? साहब लोगां-को काम बै किसा देखै छै?

मुरळी०—(दोरा होकर) बै किसा देखै छै।—नही, नहीं। नारायण तो देखै छै ना? आदमी-सूं तो चोरी कर लेवां, पण श्रीजी-कै आगै चोरी हो सकै कांई? और इसी चोरी-सूं, फायदो भी कांई?

लाभ न होवै कपट-सूं, जो कीजे व्योपार
जैसें हांडी काठ-की चढै न दूजी बार

ओ काम आछो नही हुवो। आज तांई म्हारो नेम पूरो निभ्यो पण आज बी-को भग हुवो। मरजी नारायण-की।

हजारी०—(नीचै झांककर) भाया। इण मांहे दोरो होवा-को काम कांई छै? साहब-नै चिट्ठी लिखकर भूल-सूं ज्यादा कीमत लागी सू दाम कमती करा ल्यो; साहब तो उळटो खुसी होसी; आगे इण मांहे कोई आछी बात होणी छै, जरां ओ इसो काम हुवो छै; भूल-चूक-को कांई? भूल-चूक तो सदा लेणी-देणी छै।

मुरळी०—(विचार मांहे) ठीक छै; आज तांई श्रीजी इण तर्‌हे की म्हारा हाथ सूं भूल करायी नहीं आज वडेरां-का हाथ-सूं हुयी छै, सू वो-ही नारायण सुधारसी ।

इण तर्‌हे वोलकर मुरळीधरजी झट अेक अंग्रेजी लिखवावाळा-नै वुलाकर घणी नम्रता-सूं अेक चिट्‌ठी साहेव-कै नाम लिखाकर भेजी कै म्हां-का भाई-भूल-सूं काळी वनात नौ रुपिया वार थी सू वारा-को भाव लगायो गयो छै, सू वीजक दुरस्त कर-नै उता रुपिया भेज दीजो ।

साहव-कै फास माल पूग गयो थो । दो-चार साहव और-भी था । उणां की मेम साहेव भी थी । माल सारां-कै पसंद आयो । कीमत भी ठीक नजर आयी । काळी वनात देख रह्या था । आप-कै पास-की वनात इण वनात-सूं मिलायी; अेक वणाणै-वाळो, अेक कारखानो अेक नंवर, अेक रंग और अेक कपडो । मेम साहेव-नै भाव पूछ्यो तो वै वोल्या कै तेरा-का भाव-की ममोई-सूं आयी छै । जरां साहव-नै वड़ो अचरज आयो कै चीज ममोई मांहे तेरा-का भाव-की विकै सूं अठै वारा-का भाव-की कियान मिलसी ? इण तर्‌हे सारो-ही माल किफायतवार छै, जाण-वूझकर वाण्यो कठै कीमत तो कमी लगायी नहीं छै ? आजू-वाजू-का सारा ही लोग वोलवा लाग्या कै साहव । नहीं, वाण्यो घणोज ईमानदार आदमी छै, वी-कै पास अेक वात छै, आप माटा साहव छो तो-भी वो-ही भाव और कोई गरीव जासी तो-भी वो-ही भाव; कमती-ज्यादा-को हिसाव वीं-कै पास छै नही; वी-को सचावट-पर-सूं दूर-दूर का लोग आकर वीं-कै अठै सूं माल ले जावै छै; की-सूं पाई अेक-को फरक नहीं; देसी लोगां मांहे इसो वैपारी दूजो कोई देखणै मांहे छै नहीं । इण तर्‌हे वातां हो रही छै ।

इत्ता मांहे मुरळीधरजी-की चिट्‌ठी लेकर उण-को आदमी आयो । साहव नै चिट्‌ठी दीनी । साहेव चिट्‌ठी वांचकर अचंभै रह्या : और समज्या कै मनै खुशी करवां-की वाण्या-की आ चालाकी दीसै छै, इण मांहे कोई शक नहीं । फेर आप-का सईस-नै वुलाकर वोल्या कै तूं अै नौ रुपिया थारै पास रख; और मुरळीधर सेठ-की दुकान ऊपर जाकर ऊंची-सूं ऊंची काळी वनात अेक वार

माग : चार-का नौ रुपिया मागे तो देकर ले आ, ज्यादा दाम बोलै तो पाछो आकर म्हानै कैतो तू रुपिया ले जाकर फेर ले आ। तूं म्हारो सईस है जिको पिछाण दीजे मती, पूछै तो मसू-की छावणी छूं कर-नै बोलजो।

सईस झट मुरलीधरजी-की दुकान-पर जाकर ऊंची-सूं-ऊंची काळी वनात मांगी। चार-गज-का दाम दी-की नौ रुपिया माग्या। वनात फाड दी और रुपिया नौ ले लीना। वनात-को टुकड़ो लेकर सईस साहब-कै पास आयो। साहब पहली-की वनात-सूं मिला लीनी। उण-की खातरी हो गयी। घर माहे-सूं सरकारी वार मंगाकर नापी। बराबर भरी। साहब झट आप-की डायरी माहे मुरलीधरजी-को नांव नोंध लीनो, और निस्चय रख्यो कै 'रायबहादुर' की खिताब देणै माफक ओ वाण्यो छै। फेर कित्ती ही वार इण कै अटै-सूं माल मंगायो पण पाई-को फरक पड्यो नही। सरकारी काम-काज मांहे भी मुरलीधरजी-नै बुलाया परंतु सारी बात-सूं उण-की सचावट पायी गयी : और सारा-लोगां का मूं-सूं इण नर-की वार-वार जठै-कठै सोभा-ही सुणी। साहब की वाल-वाल खातरी हो गयी। और 'रायबहादुर' की किताब देणे-कै वास्तै सरकार मांहे मुरळीधरजी-की सिफारिस कर दीनी।

अभ्यास रा प्रश्न

भाषा सम्बन्धी :

१. नीचे दियोड़ा सबद-युगमा री बणघट नै ध्यान सूं देखो। अै युगम मिळता-जुळता अरथ देवण आळा सबदां सूं बण्योड़ा है। आप अैड़ा दो नुंवा युगम और बणावो।

   जीव जिनावर, सगा-सोई, काम-काज, आजू-बाजू, भूल-चूक।

२. नीचे दियोड़ा मुहावरां रा अरथ समझर, आपणा वाक्यां मे उणरो प्रयोग करो—

   हवा खाणो, बात नै बट्टो लगाणो; मट्टी नै सोनो करणो।

३. इण पाठ मे केई अरबी-फारसी सबद आया है। उणारी एक फेरिस्त बणावो—जियां-मुस्कल; साबास, दुनिया।

विषय-वस्तु सम्बन्धी :

४. वैपार रो मुख्य पायो है—

(क) सचावट (ख) सजावट
(ग) चतराई (घ) नरमाई
(ङ) लछमी ( )

५. 'मनी थाळी पर सूँ जीमता नै उठाकर घर छुड़ायो।' मुरळीधर सूँ घर कुण छुडायो ?

(क) भाई। (ख) भाभी।
(ग) मां। (घ) बाप।
(ङ) दोस्त।

६. 'साहब लोगां को काम। वो किसा देखे छै।' इण कथन सूँ साहब लोगां री कांई खूबी प्रगट व्है ?

(क) बड़प्पन। (ख) लापरवाही।
(ग) अमीरी। (घ) व्यस्तता।
(ङ) मस्ती। ( )

७. 'आदमी सूँ तो चोरी कर लेवां, पण श्रीजी कै आगै चोरी हो सकै कांई ? इण कथन सूँ मुरळीधर रै चरित्र री कांई खूबी प्रगट व्है ?

(क) ईमानदारी। (ख) सुजनता।
(ग) धार्मिकता। (घ) निरलोभता।
(ङ) निश्छलता। ( )

८. 'इतना मांहे वंसीलालजी को मिलाप हो गयो, और मन दुगध्या मांहे पड़ गयो।' वंसीलालजी रै मिलण सूँ मुरळीधरजी दुविधा मे क्यूं पड़ग्या ?

९. 'इण तरहे का विचार करतो हुवो अजमेर की टेसण ऊपर दाखल हुवो।' मुरळीधर-रा-अे विचार किसा हा ? ५० सवदां में लिखो।

१०. 'मुरळीधरजी की साख खंडवा मांहे अछी पड़ गयी।' आ साख किण बात री ही ? २० सवदां में लिखो।

११. 'आज तांई म्हारो नेम पूरो निभ्यो पण आज वीको भंग हुयो।' मुरळीधर रो ओ नेम कांई हो अर वो किण भांत भंग हुयो ?

१२. इण पाठ रै आरंभ रा वरणन नै ध्यान में राख'र 'रेगिस्थान री दुपहरी' रो वरणन करो।

१३. आपणा सबदां में मुरळीधर रो रेखाचित्र खींचो।

१४. नीचे दियोड़ा वाक्यां नै ध्यान सूं पढो—

(क) उत्तम खेती, मध्यम वैपार कनिष्ट चाकरी और भीख निदान।

(ख) वैपार सारा सूं घणो ऊंचो और श्रेष्ठ है, वीको पार नहीं।

(क) में वैपार नै मध्यम और (ख) में वैपार नै श्रेष्ठ बतावण री कांई कारण है ?

१५. वंसीलाल अर मुरळीधर री दोस्ती रो वरणन ७० सवदां मे करो।

१६. 'साहब चिट्ठी वांचकर अचवे रह्या'। साहब रै अचंवै रैवण रो कांई कारण हो ?

१७. 'साहब' रायवहादुर 'की खिताव देणै कै वास्तै सरकार मांहे मुरळीधरजी की सिफारस कर दीनी।' साहब आ सिफारस क्यूं करी ?

रचना, समालोचना अर अनुभव विस्तार सम्बन्धी :

१८. 'सांच नै आंच नहीं, विषय पर १०० सवदां में एक लेख लिखो।

१९. 'राजा हरिश्चन्द्र अर नळ राजा री सांच रै विषय में जाणकारी करो।

२०. जे आपने अचाणचूक आपरो पुराणो दोस्त मिळ जावै तो आपरै मन मे कांई भाव उठै ? १०९ सवदां में लिखो।

२१. 'रायबहादुर' खिताव सरकार री तरफ सूं किण लोगां नै क्यूं दियो जावतो ?

२२. आजादी रै बाद भारत सरकार 'पद्मश्री', 'पद्मभूषण', 'पद्मविभूषण' अर 'भारतरत्न' रा खिताब देणा सरू करया है। मालम करो कै अै खिताव लोगाँ नै क्यूं दिया जावै ? अबार तांई 'भारतरत्न' खिताब जिण लोगा नै मिल्या, उणाँ री एक फेरिस्त बणावो।

८. म्हारी जापान-यात्रा

(राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत)

(राणी लक्ष्मीकुमारी जी रो जनम देवगढ़ (मेवाड़) में सं० १९७३ में हुयो। राजस्थानी रै साहित्यकारां में आपरो स्थान अग्रणी है।

राणीजी साहित्य-सेवा रै सागै-सागै सामाजिक, सांस्कृतिक अर राजनैतिक कामां में भी सदा आगे रह्या है। कई वरसां तांई आप राजस्थान विधान सभा री सदस्या रही। लारले चुनाव रै समय आप राजस्थान कांग्रेस कमेटी री अध्यक्षा भी रैया। अवार आप राज्य सभा री सदस्या है। 'अफ्रो-एशियन सोलिडेरिटी' राजस्थान री उपाध्यक्षा अर 'इंडो सोवियत कल्चरल सोसायटी' राजस्थान री अध्यक्षा रै रूप में करयोड़ी आपरी सेवावां घणी मूल्यवान है। आप केई प्रसिद्ध संस्थावां री सदस्या अर पदाधिकारी भी है, जियां राजस्थान साहित्य अकादमी री प्रतिष्ठापक सदस्या, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी री सदस्या।

विदेसा मे कई कान्फ्रेंसां में राणीजी भारत रो प्रतिनिधित्व करयो। सन् १९५९ में जापान में होवणवाळी 'ऍन्टी एटम हाइड्रोजन बम्ब वर्ल्ड कान्फ्रेंस' मे आप भाग लियो अर सन् १९६० में उठै री साहित्यक संस्थावां रा अध्ययन करण नै गयोड़े भारतीय महिला शिष्टमण्डल री आप सदस्या रैयी। रूस में भारत रै साहित्यकारां रै गयोड़े प्रतिनिधिमंडल मे भी आप सामल हुयी।

राणीजी हिन्दी अर राजस्थानी दोन्यूं भाषावां री कुशल लेखिका है। आपरी हिन्दी में 'अन्तर्ध्वनि', 'स्वान्तः सुखाय', 'राजस्थान का हृदय' आदि पोथियां छपी है। राजस्थानी पोथियां में 'मांझलरात', 'गिर ऊंचा ऊंचा गढ़ा', 'कै रै चकवा वात', 'मूमल' 'अमोलक वातां', 'हुंकारो दो सा', 'टाबरां-री वातां आदि कहाणी-संग्रह है। 'राजस्थानी लोकगीत', 'राजस्थानी दोहासंग्रह', 'कवीन्द्र

कल्पना', 'जुगनिकास', 'नीरनाण' आदि आपरी सम्पादित पोथिया है। आप रवीन्द्रनाथ टाकुर री कविता रो अनुवाद भी 'रवि ठाकुर री वाना' नाम सूं राजस्थानी मे कियो है। आप घणी मैनत सूं राजस्थानी लोक काव्य 'बगडावत' रो संग्रह अर सम्पादन भी कियो है। यात्रा वरणन-लेखण मे आपनै आछी सफलता मिली है। 'हिन्दू कुश के उस पार' पोथी इण री उदा-हरण है।

संकळित अंश अेक यात्रा वर्णन है। लेखिका सन् १९५९ मे हिरोशिमा मे आयोजित 'अणुबम विरोधी विश्व सम्मेलन' मे भारत रै प्रतिनिधि मंडल री सदस्या रै रूप मे शामिल हुयी ही। ओ वरणन रोचक अर प्रवाहमयी शैली मे लिख्योडो है। इण नै पढ़ता पण जापान री जन-जीवण, शांति स्मारक म्यूजियम, हिरोशिमा री विध्वंसक लीला शांति मार्च री रंगीली दृश्यावली आदि री अेक तसवीर सी मंड जावै।)

म्हारो जापान यात्रा

(१)

जापान-रो असली नाम जापान नी है। उण-रो असलीनाम निप्पोन है। जापानी आप रा देश-नै निप्पोन कैवै। परदेसिया-रा अशुद्ध उच्चारण—सू निप्पोन जापान बण गयो।

जापान देस चार टापुवां-सूं बणियोडो है। आं-मे होन्श टापू सब-सूं मोटो है। टोकियो, ओसाका, क्योटा, हिरोशिमा वगैरा जापान-रा खास-खास सहर इण-हीज टापू-मे बसियोडा है। बीकिनी-रा तीन टापू इण-सूं चिपियोड़ा है। उतराद-में होकायड़ो टापू है दिखणाद-में सिकोकू अर क्यूसू। इणा-रै अलावा जापान-रै समंदर-मे छोटा—छोटा हजारा टापू बिखरियोड़ा बसिया है।

टोकियो-रै हेनेड़ा हवाई-टेसण पर उतरता-ई घड़ी साम्ही झाकी। कळकत्तै-रै बठै-रे टेम-मे तीन घंटा—रो फरक हो। आ बात कैवणी पडैला के अठै—रा कस्टमवाळा भला आदमी हा। कांई आता, कांई जाता सामान-रै हाथ—ई नी अड़ायो, काई पूछताछ ई नी करी। पासपोर्ट देख झटपट छाप लगा देख दे दी।

म्हां-नै प्रिंस-होटल-में उतारिया। ओ तो मैं टोकियो-में पूगतां-ई देख लियो कै अठै नकसां-रो जोर है। म्हा-रै कमरै- में नकसो टंगियोड़ो हो। कान्फ्रेंस-री ओर-सूं म्हां-नै कागजात दिया हा उणां-मे-ई नकसो नत्थी हो। गेले-मे जिण-किणीं नै-ई मैं गैलो पूछियो उण झट कागद-पेंसिल काढ़ नकसो मांड मनै गैलो बतायो। टेक्सी-ड्राइवर-नै कठै-ई जावा-नै कहियो तो झट-देसी नकसो जेबसूं काढ म्हा-रै मूंडागै राखियो जिण जागां जावणो हुवै, नकसै में बता देवो। बठै नकसै सिवाय कोई बात-ई नीं। रेलां- मे सफर करवावाळां लारै-ई नकसा मौजूद।

(२)

उण-ईज दिन सांझ री गाड़ी-सूं म्हां-नै हिरोसिमा जावणो हो। टोकियो टेसण पर पूगिया। टेसण-री इमारत-में बड़िया पण बठै नीं तो 'प्लेटफारम-ई दीख्यो, नीं गाड़ी दीखी, नी इंजन नजर आयो। अचंभे-में पड़गी—च्यारूं पासी दुकानां-ई-दुकानां।

जापान कौंसल-वाळा म्हा-नै कयो हो कै आप-नै हिरोसिमा तक पुगावा-नै म्हां-रो आदमी साथै दे देवांला। वो आप-नै सांझ-नै टेसण पर मिल जावैला। गाड़ी छूटण-री वेळा नजीक आयगी। म्हे उडीकता उकतायीजग्या।

टेसण पर भीण घणी ही। नीं तो गाइड म्हां-नै ओळखै। नी म्हे गाइड नै ओळखां। अैन वक्त पर गाइड हांफ तो थको आयो। आंवतां-ई मनै देख बोलियो—भलो हुवो थां-री इण साड़ी रो जो इण-नै देखमैं थां-नै ओळखिया।

गाइडां म्हां-नै लेय ऊपर चढियो। हूं सोचण लागी-आपां-नै तो गाड़ी चढ़णो है; ओ ऊपर कठै ले जावै है? ऊपर आंवतां-ई देखियो कै प्लेटफारम पर आ गया हां। गड़ी मूंडागै ऊभी ही। समझ-मे नही आयी कै ऊपर चढ़ियां गाड़ीं किण तरै आयी। नीचै झांकी। बाजार, सड़क, दुकानां नीचै ही। टोकियो-में आबादी घणी गहरी होवा-सूं रेल दुकानां-री छतां पर चालै। टोकियो सहर-मे रेलां-रो जाळ-सो गूंथियोड़ो है—आगै-पाछै, डावै-जीमणै, ऊंचै-नीचै धड़धड़ करती रेलां चालती रैवै।

जापानियां-नै आप-री रेलां-री पाबंदी-रो घणो आंजस है। बठै रेलां लेट नीं हुवै, कदेई हुवै तो कुछ सैकंडा सारू-ईज। म्हा-री गाडी हिरोसिमा आडी

मागी जावै ही । रेल-री पटड़ी-रै दोनां आडी-नी खेतां-में अर जंगल तक-में बिजळी-रा तारां-रा खंभा रुपियोड़ा बतावै हा कै अठै उद्योग-रो कितो विस्तार है । घरां माथै टेलीविजन-रा अेरियळा-रा खंभा साम्ही आंगळी दिखाता जापानी सज्जन श्री फूकुसिमा बोलिया—अै अेरियलां-रा थोक देख-नै आप अंदाजो लगा लिरावोकै जापान-में कितरा टेलिविजन है ।

सैकड़ां कोसां-री मुसाफरी-में वेग्यियो कै जापान-में एक आंगळ धरती बेकार कोनी पड़ी । मान लो कठै-ई जमीन खेती-रै लायक कोनी, पाणी रो खाडो-ई है, तो उण-नी-ई काम-में ले राखियो है । वी खाडै में कमळ-ई बाय दिया । कमळ-री डाडी, बीज,पत्ता, पांखड़ियां-रो साग वण.वै ।

(३)

ता० ३१ जुलाई, १९५९ नै सुबह १० वजियां हिरोसिमा-मे विश्वसम्मेलन सरू हुयो । प्रनिनिधि टैम-सूं पहलां-ही भेळा हुवण लागा ।

हूं व.रै वरामदै-मे ऊभी ही । अचाणक अेक लांबी वाढ-रा सरदार टाप उतार माथो झुकाय मुजरो करियो । बोलिया-आप जरूर हिंदुस्तान-सूं आया हो, मे आस्ट्रेलियन हूं, पांच व.स दक्खण-भारत-मे रयोड़ो हूं । आप किसै प्रदेश-सुं आया हो ?

मैं कैयो—मैं राजस्थाने-री हूं ।

'आछो । आछो । उदेपुर तक में-ई गयोडी हुँ. म्हारो नाम अेंड्रयूज हयूज है मनै मराठी वोलवा-री घणी मन-मे आय रयी है, आप-रै साथ-वाळा-मे कोई मराठी बोलणियो है क'नी ?'

दूजे दिन मैं उणां-नी म्हां-रै प्रतिनिधि-मडल-रा नेता श्री हिरे-सूं मिलाया । ह्यूज बां-सूं मराठी-मे धड़ाधड़ वात करबा लागा । मराठी-रै 'ळ' आखर रो उच्चारण गै घणो शुद्ध करता । मनै उणां-रै 'ळ'-रै उचारण पर खुसी हुयी, और अचंभा-ई आयो । आपको अठै-रा हिंदी बोलणिया मायां-सूं खासकर उत्तर-प्रदेश अर बिहार वालां-सूं ळ बोलणी नी आवै, 'ळा'-रो प्रयोग राजस्थानी, पंजाबी, गुजराती अर मराठी-मे तो खूब-हुवै ।

इण'ळ'-नै लेय-नै मनै अेक जूनी वात याद आयगी। वीकानेर-राज में महाराज गगासिंहजी-रै वगत-में महाजन-रा राजा हरीसिंह जी ठावा सरदार हा। वीकानेर राज-में उण दिनाँ अेक हुकम निकाळियो कै राजा-री नौकरियां-मे वीकानेर-रा लोगां-नै-ई राखिया जावै। फलाणो आदमी वीकानेरी है क नी—इण-रो इम्तिहान घणी विरियां महाजन राजा साहव लिया करता। इण इम्तिहान-री जरूरत यूं आयी कै घणा जणा नकली सर्टीफिकेट ले वीकानेरी वण जावता। उम्मेदवार-री जांच करवा-नै राजा साहव उण-नै पूछता—वोलो खळळ-खळळ। वाहरवाळां सूं शुद्ध उच्चारण नी करणी आवतो और वै वोलता खळळ-खळळ। उण-ई वगत राजाजी आप-रो फैसलो सुणा देता-था-रै वीकानेरी होवण-में खलल है भाया।

श्री ह्यूज महाराष्ट्र-री मांयली वातां—री घणी जाणकारी राखै। वठै-री जनजातियां-रै वारै-में उणां-रो घणो ज्ञान है। जद वै महाराष्ट्र-री जनजातियां-रै जीवण अर संस्कृति-री वातां सुणावा लाग्या तो मन-में मनै घणी सरम आयी। मैं तो वां जन-जातियां-रो नाम-ई नीं सुणियो।

(४)

कान्फरेंस-हाल-रै वारे ऊभा प्रतिनिधि लोग गप्पां लगाय रया हा। गर्मी तेज पड़ री ही। जापान में छातां-रा पंखा तो हुवै-ई नीं। सव जणा हाथां-मे जापानी कागज-रा पंखा लीयां हिलाय रया हा। सूडान-रा प्रतिनिधि इजिप्ट-री लुगाई-प्रतिनिधि मिस करम-नै वतळायी—गर्मी तो अठै इ आपां जिसी पड़ै है पर जापानी आपां जिसा काळा क्यू कोय नीं ?

पश्चिम जर्मनी-रो प्रतिनिधि हाफूं-हाफूं करतो फूकां देतो फिर रयो हो—मर गयो गरमी आगो, में तो काले परो जावूंला।

यूरोप-री अेक जवान लुगाई-प्रतिनिधि घड़ी-घड़ी आप-रै वटवै-सूं काढै यूडीकोलन री सीसी, नै छांटै माथै पै। हूं भड़ै वैठी, म्हारै-ई ललाट-रै उण यूडीकोलन लगायो। मैं कहियो—मनै इसी ज्यादा गरमी कोनी लागै। हूं राजस्थान-री अर वा-ई तपतै वीकानेर-री रैण-वाळी, जठै इण—सूं वैसी गरमी पड़ै।

जिण भवन-मे कान्फरेंस हुयी उण-रै मठै ऐक शांति-स्मारक म्यूजियम हो। सणवारा म्हे वो म्यूजियम देखण लाग गया। इण म्यूजियम-में हिरोसिमा-मे जी ऐटम बम-सूं तबाही हुयी ही उण-री तसवीरां, नक्सा अर आंकड़ा जमाय राखिया है। पूरो विवरण उण प्रळै-रो देखाब्रियो है। उण महानाश-रा राखसी बर्मा-नै देख वजर-री छातीवाळां-रै-ई आंसू आयां बिना नी रैवै। भीत-पै ऐक मोटी-सारी तसवीर लाग री। उण-मे धूंवै-रो नंगरो-रो-मगरो लपकतो लगो ऊंचो चढ़ग्यो है। ऐटम-बम-रै फटता-ई हिरोसिमा-नै आप-रीकाळी छाया-मे ढांकतो ओ फोटू चार हजार मीटर दूरां-सूं खेंचियो हो। १९४५-री छै अगस्त-री सुबह ऐन आठ बज'र १५ मिनट पै ऐक अमेरिका-रै विमाण बम फेंकियो। वो सत्यानासी विमाण बम फेंकतां-ई नटाटूट पाछै पगां भागियो। वो इतो तेज भागियो के बम फूटै-फूटै जो-रै पैलां १६ किलोमीटर भाग-नै दूरो निकळ गयो।

बम जमीन-सू ५७० मीटर ऊंचो अकास-मे फूटियो। धरती-पर पड़'र फूटबा-सूं इतरो नास नी हो सकै क्यूंके बम-मे जितरी ताकत ही कै जमीन-मे धंस जावतो। जां मिनखां बम-नै आकास-मे फटतो देखियो वां बतायो कै बम फूटतां-ई इसो लागियो जाणै परचंड सूरज धरती-पै उतर रयो है। बम फूटियो जिण वेळा-उण-सूं गरमी निकळी, वा दो लाख सेंटीग्रेड ही। सौ सैंटीग्रेड गरमी-में पाणी उकळबा लाग जावै। वा गरमी ही दो लाख। भूंगड़ा तिड़कै ज्यूं मिनख तिडक गया। वो धूंवै-रो बादलो, जिण-नै आणविक बादळ कैवै, अड़ताळ स सैकंड मे तीन हजार मीटर ऊंचो चढ़ियो। साढी आठ मिनट-मे तो नौ हजार मीटर ऊपर चढ गयो। पंद्रह मिनट पछै इण बादळै-मे-सूं बरखा होण लाग। दो घंटा तांई बराबर कादो बरसतो रयो। रेडियो-सक्रियता-रा जो कण धूंवै-रै सागै ऊपर परा गया हा उणां-नै बरखा पाछा नीचै लै आयी।

बम फूटबा-रै २० मिनट पछै नीचै जमीन-पै लाय लागगी। लकड़ी-रा घर अर बांसडा-रा जंगळ भभक-भभक बळबा लाग गया। छोटा-मोटा सब घर भसम हो गया। आखै-ई सहर-में खाली छाईस घर अधबळिया रै गया। नदियां-रा पुळ टूट गया। गाड़ी-री पटड़िया बांकी होगी। गरमी इतरं हुयी

कै लोह कांई पत्थर पिघळ गया । हिरोसिमा लाय-री लपटा-में समाय गयो । तीन दिनां तांई घू-घू बळतो रयो । हरियो-भरियो जंगल अर सहर राख-रो ढिगलो हो गयो ।

(५)

इण कयामत-में लोग-लुगाइयां, टाबर-टीकरां-री दुरदसा हुयी उण-री वात तो केवण जोगी-ई कोयनी । आंखियां देखियोड़ा हाल वठै-वाळा सुणाय रया हा । म्हारै-में तो सुणवा-री हीमत-ई कोयनी ही, काळजो कांप-कांप जातो । लपटां आभै-रै अड़ री ही, मिनख बरळाय रया, टाबर चरळाय रया कुण किण-री सुणै, कुण किण-नै बंचावै । मरिया-बळिया । लपटां-मे भसम । इण भयंकर कांड-री याद-सूं-ईज मिनख-री चेतना परी जावै । २ लाख ४० हजार लोग-लुगाई अर टाबर बरळावता थका जीवता बल गया । ५१ हजार बुरी तरह घायल हो गया । अेक लाख आसरै मामूली घायल हुया ।

इण नरमेध-मे जळ नै मर गया वां तो सुख पायो । पण जां-री सांसा बाकी रैगी वै जीवती लासां 'पाणी-पाणी' कर री ही, पण पाणी-रै जवाब-में काळ वणां-नै लाय-री लपटां-में छानो कर देतो । डील-रा गाभा बळ गया, डील सूज गया, केस बल गया, चमड़ी अर हाडकिया बल-नै लटक गया । अै नर-कंकाळ चेतो आवतां-ई करळावता—'पाणी-पाणी, । पाणी कठै ? पावा-वालो कुण ? आपणै पुराणां-में जो रौरव नरक-रो वर्णन कीधो वो इण-रै आगै तुच्छ है । जो हाल तसवीरां-मे देखियो अर जो देखणवालां-रा मूंडां-सूं कानां सुणियो उण-नै लिखवा-नै अर कैवा-नै कोई लवज-ई नी । म्यूजियम-नै देखतां मन दुःख, गलानी अर अन्तर्दाह-सूं बळवा लाग गयो । मन-में रैय-रैय ओ सुवाल उठतो—मिनख इसो हत्यरो हो सकै ? अै देख रया जो सांची तसवीरां है ? हे भगवान ! मिनख मिनख-रै साथै ओ बरताव कीधो ? मिनख-ई इसो हो सकै तो पछै राखस, पिशाच, दैत्य अर दानव इण-सूं ज्यादा काई हुवैला ?

(६)

हिरोसिमा-रै सत्यानाश-रो जापानियां-रै दिल अर दिमाग-पै घणो असर पड़ियो । वठै-रा साहित्यकारां-रै आगै तो आज-ई हिरोसिमा यूं-हीज बळ रयो

है अर राष्ट्रीय चेतना-वाळा जापानियां-रा काळजां-में तो आ होळी पीढियां ताँई सिलगती रैवैला।

अेक चित्राम हो 'भूतां-री सवारी'—हिरोसिमा में लाय लगवा-रै तुरंत पछै-री सिवी ही। धूंवें-सूं काळा पडियोडा नर-कंकाळां-रो झुंड ज्यां-रा कपड़ा बळ गया, नागा, चामडी; फटियोड़ी, गाभा-ज्यूं लटकियोडी, हाथ-मूंडा सूजियोड़ा, दुःख-सूं होस हवास गायब, ज्यां-मे अत सूझैन गत, विचळातोड़ा, ढूंढा ज्यूं वीरान हुयोड़ी गळियां- मे वे-मतलब भटक रया। उण वखत-री असली हालत ही आ। अेक चित्र और हो अेटम वम-सूं निकळी वे-हिसाब गरमी-सूं लोग घबराय गया। घायल पाणी-पाणी कर रया। पाणी कंठै? नळां-री लैंणा टूटगी। चारूं आडी-नै नै लाय लाग री। तिसियां मरता कंठ सूख रया। सरीर घावा-सूं चीरीज रया। 'पाणी-पाणी' करता नदी-साम्हा दौड़िया। दौड़णी वां-सूं आय नी रयो, सांस लेणी नीं आय रयो। उठता-पड़ता नदी-रै किनारै जाय पाणी-रै होठ लगायो। हा बठै-रा बठै-ठंडा पड गया। नदी-रै किनारै लोथां-रा ढिगला लाग गया। हिरोसिमा सहर-रै मांय-नै सात नदियां ववै अर सातूं नदियां लोथां-सूं भरगी।

सुबह-रो वखत हो। टाबर पढण-नै गया हा। अेक दिन पैलां हवाई हमलै-सूं टूटियोडा घरां-मै मदद-सारू जावा-रो स्कूल-रा टाबरां-रो प्रोग्राम हो। मास्टरां-रै लारै स्कूलां-रा टाबर टोळा-रा टोला मदद-सारू जाय रया हा। उण-हीज वखत वो हत्यारो पापी वम पड़ियो। 'मा-मा' करता भोळा-भाळा मूंडां-रा टाबर बठै-रा-बठै सेझ गया। उणवेळा-रो चित्राम देखणी नी आवै। आज-ई हिरोसिमा-री मावां आधी-रात-रा 'सणण सणण' करतै वायरै-मे 'मा-मा' रोवता टाबरां-रा हेला सुणै।

म्हारै-सूं तो वै चित्राम देखणी नी आया। अंखियां मींच-नै बैठगी। चित्रामां-नै देख-देख हिरोसिमा-री जापानी लुगायां रोय री ही। उणां-रै मूंढागै उणां-रा टाबर यूं ही 'मा-मा' करता, बळता-बरलावता मरिया हा। कितरा-ई टावर बठै ऊभा-ऊभा आप-रा मां-बापां-नै याद कर रौय रया हा। हे भगवान्! वो नजारो याद आवै जद आज म्हारो काळजो थरथर करवा लाग जावै।

(७)

इण विश्व–सम्मेलन–में संसार-रा सारा-ई देसाँ सूं प्रतिनिधि आया हा। अमेरिका–सूं–ई पांच–सात सरदार आया हा। उणाँ-में डा० पोलिंग-ई हा।

डा० पोलिंग अमेरिका-रा नामी रसायन-शास्त्री है। आणविक अस्त्रां-नै काम-में लेवा पछै उणां-रो कांई-काँई असर दुनिया माथै हुवै, इण विषय मे डा० पोलिंग घणी सोध कीधी है। इण–ईज काम माथै आं-नै नोबल-पुरस्कार मिलियो।

डा० पोलिंग सम्मेलन-में घणा जोरदार वोलिया। डा० पोलिंग रो भापण सुण, सुणवावाळा-रा कानाँ-री खिड़कियां खुलगी। आगै दुनियाँ अधारी दीखवा लागी। म्हारा रामजीं। आँ मोटा देसाँ-रा मोटा लीडरा-नै जे कुबुद्धि आयगी तो आ दुनियाँ, जिण-नै हजाराँ वरसा-सूं मानवी सजावतो सिणगारतो खप गयो है, अेक पळ-मे गारथ हो जावैला।

जापान-रा लोगां इण अणु-बम-विरोधी विश्व-सम्मेलन-रै मौकै-पै वडो जवरदस्त शाँति-मार्च कीधो। दूर,दूर-सूं मिनख पगां चालता, मार्च करता, हिरोसिमा तक आया। तावडै-सूं छाया राखवा-नै चारै-रा गूंथियोड़ा मोटा-मोटा टोप माथै मेल राखिया हा। लंवी, खूब लंवी, सवारी निकाली। सगळां-सूं आगै तो पैदल मार्च कर-नै आवणियां, उणां–रै लारे विदेसा-सूं आयोड़ा प्रतिनिधि, पछै हिरोसिमा–री अणपार जानतां।

भरी दुपैरी। कोई तीन वजियाँ-री तावड़ो तड़क रयो। सूरज कड़क रयो। सवारी चाली। म्हाँ लोगाँ–रै आप–आप–रा देसां-रा झंडा हाथ-में। पसीनो टपक रयो। गैलै-रै दोई आडी—नै मिनख भरियो। थाळी फेंकै तो आगणै नी पड़े। दुकानाँ-री, घराँ-री छाताँ मिनखा-सूं लद री। छाता पर-सूं आदमी-लुगायाँ फूलाँ-री वरखा कर रया। रंगियोड़ा कागजाँ-री कतरण-री पुसप-वरखा करणै-री बठै रीत है। ऊंची-ऊंची हवेलियाँ-सूं कागज-रा फीता नीचै महाँ-पै लटकाय रया। फूलां–सूं सड़क भरगी। माथाँ-पै रंग–रंगीला कागज-रा फीता लटक रया। टेलिविजन सारू तसवीराँ खैंचवा–नै हेलीकोप्टर माथाँ–पै आय-आय, उड़–उड़, जाय रयो।

ओ उछाह अर स्वागत जापानियां उण लोगां-रो कीधो जो आणविक अस्त्र पै पाबंदी लगावा-री बात करतां-नै देस विदेस-सूं समंदर लांघ-नै उठै आया-पैदलचालता, शांति-मार्च करता, देस रा खूणां-खूणां सूं, टापू सूं उठै आया। यूं तो चारूं कानी हरख-उछाह नजर आय रयो हो, पण जनता-री जग-नै नजर नाखवा-वाळा-नै अंतस-में ओर-ई बात दीसी । सड़क रै दोई कानी ऊभी लुगायां-रा रूमाल आंसुड़ा सूं आला हा । ओ मार्च देख उणां-री आंखियां आगै चवदा बरसां पैलां-रो नजारो छाय गयो । वां नै घर-बीती याद आय री ही । वां-रा हिवड़ा हूबका लैवा लाग गया । वै आंसूड़ा पूछती जाय री ही । उणां-री अंतर मूंडा-सूं मुळक-नै शांति-सैनिकां-रो स्वागत करती जाय री ही । उणां री अंतर रो अंदाज लगाणो कोई कठण नी हो । सगळी जापानी मावां-री अेक आवाज ही—म्हांरा टाबरां-री सैंयत सारू शांति-री आवाज उठावो ।

मार्च कर-नै आवणियां अर परदेसां-सूं आयोड़ा प्रतिनिधियां सूं उणां-रा मन-मे घणो मान हो । मार्च करणियां-नै रोक-र ठंडा पाणी-री गिलासां लुगायां झलाय री ही । मनै तावड़ै-मे कळमळाती देख एक लुगाई आप-रै माथै-रो टोप उतार म्हारै माथै-पै मेल दीयो, अेक जणी आप-रो पंखो म्हारै हाथ-मे झलाय दीयौ । मनै कड़कती तावड़ै-मे तपती अर पसीनै-सूं लथपथ देख उणां-नै दुख हो रयो हो । यूरोप सूं आयोड़ा प्रतिनिधि तो तावड़ै-सूं लाल-बब पड़ गया । उणां-रा कान तो इसा राता हो गया कै जाणै अबार लोही टपक पड़ैला ।

सवारी सूगी जूझारां री देवळी-पै गयी । अेटम-बम सूं मरियोड़ा-री याद-मे काली भाठै-री समाधि बणायोड़ी है । सगळा जणा वठै जाय माथो झुकायो । ढोल-पै ताल लागी । ताल-रै सागै बैंड-री धुन गगन गूंजाय दीयो —

कदैई नी, अबै अैटम—बम कदैई नी ।

सुर—मे सुर मिलाय लाखां कंठ गावा लागिया—

अेटम बम कदैई नी, कदैई नी ।

कदैई खाली बैठी रैऊं तो उण सांझ-री गहरी भावनां—वा याद आय जावै अर मैं वां-में गम जाऊं ।

अभ्यास रा प्रश्न

भाषा सम्बन्धी :

१. नीचे दियोड़ा सबदा नै उण सूं सम्बन्ध राखण आळा भाषा-वर्ग में लिखो—

सीख, पासपोर्ट. गैलो, सफर, उडीक, गाइड; टावर, साग, प्रतिनिधि, पावदी, लट, इम्तिहान, म्यूजियम; तवाही; मंगरो, खैरियत, कयामत, भीड़, उद्योग, सम्मेलन।

१. हिन्दी—

२. राजस्थानी—

३. उर्दू—

४. अंग्रेजी—

२. 'ळ' रो प्रयोग किण भाषा में नी हुवै ?

(क) हिन्दी। (ख) मराठी।

ग) राजस्थानी। (घ) गुजराती।

(ङ पंजाबी ; ( )

३. नीचे दियोड़ा वाक्यां में रेखांकित सबदां नै ध्यान सूं पढ'र 'ल' अर 'ळ' रै अन्तर नै समझो अर इण प्रयोग सूं अरथ में जो फरक आवै उण नै स्पष्ट करो—

(i) मर गयो गरमी आगो मैं तो काले परो जावूंला।

(ii) अंटम दम सूं मरियोड़ां री याद में काळै भाठै री समाधि वणायोड़ी है।

(iii) उम्मेदवार री जांच करवा नै राजा साहव उण नै पूछता वोलो खळळ—खळळ।

(iv) थारै वीकानेरी होवण में खलल है भाया।

४. नीचे दियोड़ा वाक्यां में 'सीख' सवद दो भिन्न अरथां में आयो है। आप अै दो अरथ वतावो—

(i) पासपोर्ट देख झटपट छाप लगा सीख दे दी।

(ii) वाप री चार सीख मन र वेटो घणो दुखी हुयग्यो।

विषय वस्तु सम्बन्धी :

५. 'श्री ह्यूज वद महाराष्ट्र री जन-जातिया रै जीवण अर संस्कृति री वातां सुणवा लाग्या तो मन मे घणी सरम आयी।' लेखिका नै सरम क्यूं आई ?

(क) जन-जातियां री दुरदसा रै कारण।

(ख) आपरी तुलना मे ह्यूज री गहरी जाणकारी रै कारण।

(ग) खुद नै आपणै देस री पूरी जाणकारी नीं होवण रै कारण।

(घ) स्त्री होवण रै कारण।

(ङ) मराठी भाषा रो ज्ञान नी होवण रै कारण। ( )

६. 'ओ उछाह अर स्वागत जापानिया उण लोगां रो कीधो।' अे लोग कुण हा ?

(क) जे धनी देस सूं आया।

(ख) जे गरीब देस सूं आया।

(ग) जे जापान में घूमण-फिरण नै आया।

(घ) जे आणविक अस्त्रां पै पाबंदी लगावा री आवाज उठावण नै आया।

(ङ) जे जापान री लोग लुगायां रै प्रति हमदर्दी जतावण नै आया। ( )

७. 'म्हारै सूं तो वै चित्राम देखणी नी आया। आंखिया मीचनै बैठगी।' इण कथन सूं लेखिका रै मन रो कांई भाव प्रगट व्है ?

(क) भय। (ख) अचरज।

(ग) घ्रिणा। (घ) करुणा।

(ङ) ग्लानि। ( )

८. 'सवारी सूधी जूझारां री देवळी पै गयी।' सवारी देवळी पै क्यूं गयी।

(क) देवळी री सुन्दरता देखण नै।

(ख) मरियोड़ा री याद करण नै।

(ग) जूझांरा नै माथो टेकण नै।

(घ) भूख, तिस अर थकान मेटण नै।
(ङ) सम्मेलण री सरुआत करण नै।

९ नीचे दियोड़ा प्रश्नां रा उत्तर २०–२० सबदां में दो—
(i) जापान रो असली नाम कांई है? इण नै जापान क्यूं कैवै?
(ii) जापान देस चार टापुवां सूं बणियोड़ो है। इण टापुवां रा नाम बतावो।

१०. 'इण 'ळ' नै लेय नै मनै अेक जूनी बात याद आयगी।'
आ जूनी बात किसी है? ८० सबदां में लिखो।

११. राष्ट्रीय चेतना वाळा जापानियां रा काळजां में तो आ होळी पीढियां तांई सिलगती रैवैला।' आ होळी किसी है? ३० सबदां में उत्तर दो।

१२. इण पाठ नै पढर जापानियां रै स्वावलम्बी जीवण अर आतिथ्य सत्कार रा दो-दो उदाहरण दो।

१३. हिरोसिमा में जी अैटम बम सूं तबाही हुयी, २०० सबदां में उण तबाही रो वरणन करो।

१४. शांति-स्मारक म्यूजियम देखर लेखिका रै मन में कांई विचार उठ्या? ५० सबदां में लिखो।

१५. 'हे भगवान! वो नजारो याद आवै जद आज म्हारो काळजो थर-थर करवा लाग जावै।' वो नजारो किसो है? उण रो वरणन करो।

१६. डा० पोलिंग नै किण काम माथै नोबल पुरस्कार मिलियो? २० सबदां में लिखो।

१७. 'जापान रा लोगां इण अणु-बम विरोधी विश्व-सम्मेलण रै मौकै पै जबरदस्त शांति-मार्च कीधो।' इण शांति मार्च री सवारी रो वरणन करो।

रचना, समालोचना अर अनुभव-विस्तार सम्बन्धी :

१८. 'कदैई खाली बैठी रैऊं तो उण सांझ री वै गहरी भावनावां याद आय जावै।' वै भावनावां किसी है? ५० सबदां में लिखो।

१९. इण यात्रा-वरणन नै पढण सूं जापानियां री जीवण री केई विशेषतावां मालम पड़ै । आप नीचे दियोड़ी विशेषतावां बतलावण आळा अंश छांटो ।

(i) नकसां री जोर ।

(ii) टाइम री पाबंदी ।

(iii) उद्योग री विस्तार ।

२०. 'डा० पोलिंग सम्मेलन में घणा जोरदार बोलिया ।" आप आपणी कल्पना सूं लिखो कै वै कांई बोलिया हुसी ?

२१. 'बम फूटबा रै २० मिनट पछै नीचै जमीन पै लाय लागगी ।' इण अंश नै ध्यान में राख'र "जद आपरै पड़ोस में लाय लागी' घटना री तसवीर १०० सबदां में मांडो ।

२२. जे आप आपणै स्कूल की तरफ सूं 'जुद्ध खातर भारत नै अणुबम नीं बणाणो चाहीजै, विषय पर आयोजित वाद-विवाद होड में भाग लेवण खातर किणी दूजी ठौड़ गया हो तो उण यात्रा री वरणन करो ।

२३. इण पाठ नै ध्यान में राखर 'विग्यान कद अभिशाप बण जावै' विषय पर एक लेख लिखो ।

२४. नोबल पुरस्कार रै संबंध में जाणकारी कर बतावो कै अबार तांई किण किण भारतियां नै ओ पुरस्कार मिल्यो है ?

९. लगन

(श्री श्रीलाल नथमल जोशी)

(श्री श्रीलालजी रो जनम सं० १९७८ में बीकानेर में हुयो । आपरा पिताजी श्री नथमलजी जोशी रो सुरगवास जद आप १० बरस रा टाबर हा हुयग्यो हो । माता श्रीमती केसर बाई रै राजस्थानी भाषा अर लोक-साहित्य रै गंभीर ग्यान रो आप पर घणो प्रभाव पडयो ।

विद्यार्थी जीवण सूं ई आपरो घणकरी साहित्यिक संस्थावां अर पत्र-पत्रिकावां सूं सम्बन्ध रह्यो। अनेक बरसां तांई आप सर्वोदय साहित्य संस्थान, बीकानेर तथा सादूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट री साहित्य परिषद रै राजस्थानी विभाग रा अध्यक्ष रह्या। अबार आप 'राजस्थानी भाषा समिति' रा मंत्री, 'राजस्थान भासा प्रचार सभा', जयपुर रा परीक्षा सचिव, 'राजस्थानी भाषा साहित्य संगम' (अकादमी) बीकानेर रा मानद मंत्री अर साहित्य अकादमी नई दिल्ली मे राजस्थानी विभाग रै सलाहकार मण्डल रा सदस्य है।

आप राजस्थानी रा उत्साही अर प्रतिभाशाली लेखक है। आपरी कई पोथियां छप्योड़ी है, जिणांमें प्रमुख है—'आभै पटकी' (उपन्यास), सवड़का (रेखाचित्र), 'धोरां रो धोरी' (उपन्यास), 'आपणा बापूजी' (जीवणी), 'राजस्थानी मणिमाळा' (संकलन), 'परण्योड़ी कंवारी' (कहाणी-संग्रह), एक बीनणी दो बीन' (उपन्यास), अर नृसिंहगिरि-स्तोत्र' (कविता)। हिन्दी मे भी आपरी 'संक्षिप्त रामायण' नाम सूं एक कविता री पोथी छपी है।

संकळित निबन्ध 'मरुवाणी' बरस ७ अंक ६ (जून, १९६७) सूं लियोड़ो है। इण में लेखक लगन गुण रै सरूप रो बरणन करतां बतायो है कै लगनशील मिनख अकास रा तारा पण तोड़नै धरती माथै लावण री खिमता राखै। आ धरती मैनती लोगां खातर ईज है। आलसी खातर तो आपरै घर में ई ठौड़ कोनी।)

लगन

(१)

मानखै खातर दया, खमा, धीरज, चतराई, सांच, साफ-सफाई, आं सगळां ई गुणां रो मोल है। सगळा आप-आपरी ठोड़ चाईजै, अर आंरै सरीसा कई दूजा गुण भी है जिकां बिना मानखो लाजै, पण मानखै में जे 'लगन नई हुवै, तो आछै सूं आछा गुण भी निकमा अर नाकामल सावत हुजावै। ज्यूं सगळो सरीर सावत है—हाथ, पग, आंख, नाक, जीभ, दांत, आदि पण जे इण सरीर में प्राण नई हुवै, तो निरजीव सरीर अकयारथ हुवै। इणी भांत बीजा अनेक गुण

हुवता थकां भी ए मिनख मे लगन कोनी, तो सगळा गुण अैंला जासी। मिनख मे जे लगन नईं हुवती तो इण धरती रो वर्तमान रूप देखणी मे को आ सकतो नी।

कोई काम मे तेजेछाण अथवा लगोतार लगयोड़ो रैवण सारू प्रेरणा देवण वाळो गुण लगन वाजै। जिका भी छोटै सूं छोटै, अर बड़ै सूं बड़ा काम हुया है, वां रै लारै कोई-न-कोई री लगन सूं काम करणो पड़ै—पैली जमी खरीदो, मोको किसोक है, फाटक आछो है कै नईं, दाम तो तेज कोनी, पागा किता खुला है, बजार किसोक अळगो रैसी, ठेमण नेडी है कै नईं? जमी खरीद्यां पछै जगधर बनै सूं नगत पट्टा बणवावण रो फिकर हुवै। फेर ईंट, चूनो, काकर, मुरड अर सगळै समान रा फिकर रैवै चोखो अर सस्तो आवणो चईजै। आछा कारीगर भी जोवणा पडै। चलवै सूं भी सल्ला लेवणी पडै। ओर ई किता भी काम करणा पडै। अे काम जे लगन सूं हुसी तो घर री चिणाई पार पड जासी नईं तो बरसां बद सूं जमी खरीदण रा मनसावा तो चलै है, पण कदेई आन्म उघडसी जद देखो जासी। आ तो लगन देवी ई इसी करामातण सगती है जिकी आळस नै कूटर अळगो भगावै अर बरोबर आपरो काम चालू राखै।

भारत गुलाम हो, देस मे आजादी आई; पण लगन विना आजादी थोडी ई आवती। जे अेकर जेळ मे बद हुवतां ई सगळा देसभगत आजादी री जग सूं जे मूंडो मोड़ लेवता, हर लगन राखर घडी-घड़ी वार जेळां मे नई भरीजता, तो आजादी रा सपना ई आवता।

जिका काम बिना लगन कर्‌या पहाड जिसा लागै, वै ई लगन रै परताप सोरा-सट लागण लाग जावै। वोपदेव री बात सगळा जाणै-बिना लगन स्कूल जावतो, तो मास्टरजी बारै काढ दियो। जद जेवड़ै री रगड़ सूं कूवै माथलै भाटै रै बड्‌ढ पडयोड़ो देख्यो, तो चेतो हुयो कै हां हू भी पढतो स्कू हू— जेवड़ै री लगोतार रगड़ सूं जद भाटो ई घसीजग्यो, तो म्हारो माथो किसो भांटै सूं कोठो थोडो ई है। मन मे पढ़ाई री लगन लागी अर अेवं सागी वोपदेव सगळा सू तेज गिणीजण लागग्यो।

(२)

इमा किता ई गुण है जिकां आपां नै लगन रै कारण मिलै। लगन मिनख नै हिमताळू बणावै। लालबहादुर शास्त्री रै मन में पढ़ाई री लगन ही, इण कारण वै मारग री नदी री भी परवा नई करता। माथै ऊपर पोथ्यां राखर भी पढ़ण नै तो जावता ई। लगन आळै आदमी रो मारग कोई भी राक सकै कोनी।

लगन सूं आपां नै आतम-विस्वास मिलै। लगन सूं पढाई करण आळा छोरा कदेई डरै कोनी कै पास हुयां कै फेल। पास में तो रोक-टोक है ई कोनी, वे तो डिवीजन अर डिस्टिंक्शन री वात करै। गरीबी रै कारण जद विद्यार्थी 'आगरकर' मैलो चोळो पैर्यां स्कूल गया परा तो मास्टर कयो—सूगला छोरा, तू थारो जीवण सूगलो करसी। पण आगरकजी लगन सूं पढाई करता इण कारण आतम-विश्वास सूं बोल्या—'हूं सेगलो छोरो कोनी। थां ज्यूं अेम, अे, पास करी है, हूं भी इणो तरै अेम. अे. पास करसूं। अर सांचेई करी।

जठै मिनख नै कोई काम री लगन हुवै, तो फेर वीरै मन में ऊंच-नीच रो विचार टिक सकै कोनी। बाळगंगाधर तिलक नै 'केसरी' अर 'मराठा' छापा काढणा हा। छापाखानो सरू करणो हो। वी. अे. अैल. अैल., वी. पढ्योड़ा हा, पण प्रेम रा टाइप-केस आपरै माथै मेल-मेलर ढोया। लगन में आ वात देखीजै कोनी कै हूं पढ्यो-लिख्यो आदमी इण काम नै करू, कोजो लागसूं। लगन लाग्या पछै फळ री प्राप्ति मे कोई भी रुकावट साधक सैंण करै कोनी। वो रुकावट नै परनै करसी, अर अथक चल सूं आपरै गैलै वगसी।

अक्कल-बायरै लोगां में भी लगन तो आपरी चमत्कार देखाळयां विना रैवै कोनी। अेक छोरो जद स्कूल जावतो, तो साथी संगळिया मन में सोचता—ओ क्यूं खोटी हुवै, कठै ई ठाठाढोवै, तो दो पीसा लायर पेट भराई तो करै। ईसूं तो सात जलम में ई मैट्रिक पास को हुवै नी। मूंडै सूं सावळ बोलीजै कोनी। दीसण में गैलो दीसै। गरीब घरांणै में जलम्यो। वात-चीत

में भी अक्कल रो लवलेस लागै कोनी। पण हां, पढाई री लगन बी में ही, अर लगन रै परताप इणी जलम मे इग्यारवीं कलास पास करली, अर ठाठ सूं सरकारी नोकरी करै है।

इणी तरै म्हारै माथी रै अेक छोरै नै सगळा भोळो-भालो अर सीधो-सादो गिणता। बी री लगन देखर म्हे कैयो-इसा टाबर आगै जायर तीखा निकळ जावै। आ ई बात हुई जिका घणा हुसियार गिणीजता हा, वे तो दफ्तरां मे बाबू है, अर म्हारो भोळो-ढाळो पंछी डाक्टर बणग्यो गजेटेड़ अफसर।

लगन सूं करयोड़ो काम ऊंचे दरजै रो हुवै। जे लगन नई हुवती, तो बर्नार्ड शा, टाल्स्टाय, रवीन्द्रनाथ, शरतबाबू अर प्रेमचन्द आपां नै इसो आछो साहित्य, अर इत्ती मात्रा मे थोड़ो ई दे सकता। लगन लाग्यां पछै आदमी नै दूजो काम को सूझै नी, वो आपरै उद्देश्य री पूर्ति मे संतमाखी ज्यूं जुट्योड़ो रैवै।

आज विग्यान इत्ती तरक्की करी है, तो आ कोई अलादीन री चिराग सूं थोड़ी ई हुई है; अेक-अेक प्रयोग नै विग्यानी लोग अनेक-अनेक बार दुसरावै, तिसरावै, तद वै कोई नतीजै माथै पूगै। अेक आधारभूत सिद्धान्त री खोज मे उमर री उमर पूरी हुजावै। आज परमाणु सगती रा आपां चमत्कार देखां, पण आं मे मिनख री आदकाळ सूं लेयर अबार ताईं री लगन रा फळ बराबर आपरो सहयोग दे रैया है। इत्ता बरसां मे सचे करयोड़ो ग्यान जे बाद दे दिया जावै, तो मिनख फेर पाछो रूंखां लटूंबण जोगो रैय जावै। पण लगन इसो वरदान है कै इण रै कारण मिनख आगला पगोथिया माथै चढ़तो ई जावै।

ग्यान-अरजण खातर तो लगन अनिवार्य है। अेक छोरो सतावदी है, इग्याकारी है, मेधावी है, पण कदेई मन में आई तो पोथी वांचली, नई तो पोथी पढ़ी खे सूं भरीजी। इसा छोरा सरव गुण सम्पन्न हुवतां थकां भी अेक लगनबायरा हुवण कारण, पास को हुवै नीं। आछो याददास्त, तीखी बुद्धि वां ई लड़कां रै काम री है जिका पोथ्यां पढता हुवै, अथवा बराबर स्कूल मे

हाजरी देवता हुवै। अेक दिन गया, अर दस दिन गैरहाजर, इसा छोरां रो तो भगवान ई वेली है।

(२)

सावळ देख्यां मालम पड़ै कै लगन अर अध्यवसाय में फरक है। लगन नै साकार रूप देवण खातर अध्यवसाय कुदरती कदम है। जिकै रै मन में लगन हुसी, वीनै अध्यवसायी हुवणो पड़सी। लोक कैय सकै कै सगळा काम अध्यवसाय रै परताप हुवै। पण जिण तरै रेलगाड़ी भापा सूं चलतां थकां भी, जिकी चीज भापा नै उपजावै है, वा है आग। लगन आग है; अर अध्यवसाय भाप है। जे आग ठंडी पड़ जावै, तो भाप वणनी वद हुजावै, अर गाडी बठै ई ठैर जावै।

इत्तो हुवतां थकां भी लगन खातर अेक खास अधार री जरूरत है; अर वो है विवेक। जे लगन विवेक माथै टिकयोड़ी नई हुसी, तो ठा कोनी वा कठै री कठै लेजायर फेंक देवै। अेक नाव बरावर चाल रै ई है पण खेवट नै दिसा भ्रम तो नई हूवणो चाइजे, जी आंख्यां वद कर्यां अंधाधुंध खेसी, तो का तो किनारो हाथ ई लागसी कोनी, अर खारै पाणी में भूख-तिस सूं प्राण गमावणा पड़सी अथवा कोई पहाड़-चट्टान सूं टकरायर नाव रा टुकड़ा करसी। हां, भाए संजोग ठोड़-ठिकाणै पूगी, तो पूग जावै पण मिनखजमारो इत्तो अमोलक है कै भाए संजोग माथै वात छोडर, इणनै अेळो गमावणो कोनी। पैली, सवळ सोच-समझर आपांनै आपांरो लक्ष्य थरप लेवणो चाइजे, अर फेर भरपूर लगन सूं उण ताई पूगण री चेस्टा करणी चाईजे।

गगन चूंवणे परवतां माथै भी लगनसील लोग ई चढ़ै। जिको कैलास परवत अचढ गिणीजतो हो, वीरी चोटी माथै भी लगनसील लोगां आपरा पग मांड दिया। लगनसील मिनख वोरै सूं दोरै काम सूं भी घबरावै कोनी। जिकै काम नै वो हाथ में लेवै, वांनै पार घालै, अर सफळता आयर लगनसील रै पगां में लुटै।

अभ्यास रा प्रश्न

भाषा सम्बन्धी :

१. इण पाठ में पढ़ाई-लिखाई सूं सम्बन्ध राखण वाळा केई सबद आया है। उणां नै छांट'र एक फैरिस्त बणावो, जियां—स्कूल, मास्टर, डिवीजन।

२. नीचे दियोड़ा वाक्यां में रेखांकित अंस रो आसय स्पष्ट करो—

(i) लगनसील आपरै उद्देस्य री पूर्ति में सैतमागी ज्यूं जुट्योड़ो रैवै।

(ii इता बरसां में संचै कर्योड़ो ग्यान जे बाद दे दियो जावै, तो मिनख फेर पाछो रूंखा लटूंबण जोगो रैय जावै।

३. निकमा अर नाकामल सबदां री बणघट पर ध्यान दो। अठै 'नि' अर 'ना' निषेधवाची उपसर्ग है। आप इणां रै योग सूं दो-दो नुंवा सबद और बणावो।

विषय वस्तु सम्बन्धी :

४. मिनख में कीं गुण नीं हुवण सूं आछै सूं आछा गुण भी निकमा अर नाकामल साबत हुजावै ?

(क) दया। (ख) खमा।
(ग) धीरज। (घ) लगन।
(ङ) चतराई। ( )

५. मिनख रे सरीर में लगन की मात सोभा पावै ?

(क) हाथ (ख) पग
(ग) आंख (घ) जीभ
(ङ) प्राण ( )

६. बोपदेव नै पढ़ण री प्रेरणा किण सूं मिली ?

(क) मास्टरजी सूं।
(ख) मां-बाप सूं।

(ग) साथी-संगळिया सूं।
(घ) जेवड़ै री रगड़ सूं।
(ङ कूवै माथलै भाटै सूं। ( )

७. 'हूं' सूगलो छोरो कोनी। थां ज्यूं एम० ए० पास करी है, हूं भी इणी तरै एम० ए० पास करसूं।' आगरकरजी रै इण कथन सूं उणा रो काई गुण प्रगट व्है ?
(क) आतम-विस्वास।
(ख) महत्वाकांक्षा।
(ग) निडरता।
(घ) सुन्दरता।
(ङ) बुद्धिमत्ता। ( )

८. नीचे दियोड़ा वाक्यां में किसो वाक्य गलत है ?
(क) अव्यवसाय लगन नै साकार रूप देवै।
(ख) लगन मिनख नै अव्यवसायी बणावै।
(ग, लगन आग है अर अव्यवसाय भाप है।
(घ) विवेक लगन सूं पैदा हुवै।
(ङ) लगन सूं आतम विस्वास मिलै। ( )

९. लगन गुण कीनें कैवे ? २० सबदां में उत्तर दो।

१०. लगन अर अव्यवसाय मे कई फरक है ?

११. अक्कल-बायरै लोगां में भी लगन आपरो चमत्कार किण भांत दिखावै ? उदाहरण देयर समझावो।

१२. लगन विवेक माथै टिकोड़ी क्यूं होणी चाहिजै ? एक उदाहरण देय'र स्पष्ट करो।

१३. 'लगन आळै आदमी रो मारग कोई भी रोक सकै कोनी।' इण कथन रो सांचपणो सिद्ध करणआळा दो उदाहरण दो।

१४. घर चिणावण खातर मिनख नै किताई काम करणा पड़ै। इण पाठ रै आधार सूं उण कामां री एक फेरिस्त बणावो।

रचना, समालोचना अर अनुभव विस्तार सम्बन्धी :

१५. कैलास परवत री चोटी माथै कुण लोग आपरा पग माड्या ? नाम बतावो ।

१६. नीचे गुणां री सूची दियोड़ी है। जे गुण लगन रै कारण आगां नी मलै उणां नै अलग छांटो ।
हिम्मत, आतम-विस्वास, निडरता, सुन्दरता, महत्वाकांक्षा, बुद्धिमता, चतराई, खमा, दया, धीरज, करुणा, सांचपणो, मैनतपणो ।

१७. इणा रै सम्बन्ध मे जाणकारी प्राप्त करो—
बर्नार्डशा, टालस्टाय, रवीन्द्रनाथ, शरतबाबू, प्रेमचन्द ।

१८. इण पाठ नै ध्यान मे राखर 'आतम-विसवास' पर १०० सबदां में एक लेख लिखो ।

१९. जे लगन गुण लोप हो जावै तो मिनख रो कांई हाल व्है ? ६० सबदां मे लिखो ।

१०. देस-भगत भामासा

(डा० आज्ञाचंद भण्डारी)

डा० आज्ञाचन्द भंडारी रो जनम सं० १९७८ में जोधपुर मे हुयो । मैट्रिक परीक्षा पास करनै आप उत्तरी रेलवे मे नौकरी करली अर अबार तांई भी आप रेलवे में ईज है । पढ़ाई-लिखाई सूं आपरो जो प्रेम हो वो नौकरी कर्‌यां पाण भी नी छूट्यो अर आप लगन अर मैनत रै बळ पर हिन्दी-अंग्रेजी दोन्यूं मे एम. ए. परीक्षावां पास करी । शोध रै प्रति भी आपरी रुचि रही जिणरै परिणाम आप जोधपुर विश्वविद्यालय सूं 'राजस्थान रो सगुण भक्ति का०' विषय मे पी-एच. डी. री उपाधि हांसल करी ।

श्री भंडारी जी हिन्दी, राजस्थानी अर अंग्रेजी रा कुशल लेखक है। राजस्थानी रै नाटक अर एकांकी क्षेत्र ने आपरी विशेष देन है। 'पन्नाधाय' नाम सूं आपरो एक राजस्थानी नाटक प्रकाशित हुयो है। 'देस रै वास्ते' आपरो एक एकांकी-संग्रह छपियो है, जिणमें पांच एकांकी संगृहीत है। अंग्रेजी भाषा में भी आपरी दो पोथियां छपियोड़ी है।

संकलित एकांकी राजस्थानी एकांकी संग्रह सूं लियोड़ो है। इण में लेखक महाराणा प्रताप रै दीवान भामासा री देसभगति अर त्याग री प्रेरणादायी चित्र अंकित कियो है।)

देस भगत भामासा

पात्र

महाराणा परताप
अमरसिंघ
भील सरदार
सेरू (एक भील)
भामासा

जगां	: भाखरां रै बीच में
समै	: परभात
खेलण री मियाद	: वीस मिनट
साधन	: तलवार, तीर कबाण, रुपिया री कों'थळी
सैटिंग	: जंगळ नै भाखर

(भाखरां रै बीच में महाराणा परताप मूंडो उतार्‌यां बैठा है। पाखती वालो अमरसिंघ मोठो मोठो आंसू पाड़ै है)

परताप—अमर.........

अमर—दाता।

परताप—थूं आंसूं क्यू ढाळै, बेटा ?

अमर—काठी भूख लागी है, दाता ! अबी तो भूख नी स'यी जै।

परताप—चित्तौड़ री मेवाड़ी राजकंवर, तूं भूख सूं डरै ?

अमर—नी दाता। म्हैं भूख सूं नी डरूं, पण....

परताप—का'नै रात रा थारा हिस्सा री अेक रोटी रख नै राखी ही, वा कठै गई ?

अमर—वा रोटी तो मिनकी ले ग्यो, दाता। म्हैं नै बूंसा मिनका नै काढण री घणी ई कोसीस की पण सैंचट रोटी उठानै नै ई ज गयो।

परताप—(गम्भीर बणनै) हूं...

अमर—हां, जदै ई ज तो हाल तक म्हैं भूखो हूं।

परताप—खैर, बी बात नी बेटा। का'नै रात रा तो रोटी खाईज ही कै ?

अमर—हं, दाता। का'लै तो म्हे आधी रोटी खाई ही।

परताप—जैडी इकलिंग जी री मरजी। थूं का'लै आधी रोटी तो खाई ही पण म्हे नी थारा बूसा कितरा दिनां रा भूखा हां। ठा'है थनै ?

अमर—हां, दाता। म्हनै सैंग ठा'है। आप चार दिनां रा भूखा हो (थोडी वार चुप र'नै) दाता। आखती-पाखती जाय नी सोदूं कठैई फळ, फूल कै कंदमूळ मिळ जावै तो ?

परताप—जा बेटा, जा....भाग भरोसै.... (अमरसिंघ जावै। परताप उदास मन, मूंडो लटकांया विचार करता व्है ज्यूं बेठा है। थोड़ीक वार पछै)

परताप—हे भगवान। कैंडो विखो न्हाकियो है ? टाबर भूखां मरै। औ म्हासूं कीकर देखी जै ? (थोड़ी वार चुप र'वै) तुरकां री अबार सामनो कर सकूं, जकी जच कोनी। जे म्हे अ'ठईज र'ऊ तो उणरा सिरदार म्हनै अठै जक नी लेवण दै।....किणी त'रै सू जे म्हैं अकबर रै राज री सीव मूं बारै निकळ जाऊं तो थो'ड़ोक चैन मिळै नै जुद्ध री सवाळ विचार भी कर सकूं। पण....पण कठै जाऊं ? (लिलाड़ माथै हाथ फरै नै विचार करै) अरे। हा, ठीक याद आयो। सिंघ नदी रै (भीण सरदार नै सेरू भोल आवै)

सिरदार—जै हो मेवाल रा धणी री।

परताप—ओ। भील सिरदार। आवो, आवो।

सिरदार—महाराणा। आज आप किण विचार में उळझायोड़ा बिराजियो हो ?

परताप—दूजो कई बिचारू ? अबै म्हारो अठै घणो ठै'रणो दोरो ई व्है।

सिरदार—क्यूं ? बस....हिम्मत हरा दिरावोला कई, महाराणा ?

परताप—हिम्मत हारण रो सवाल नीं है सिरदार। अठै रै'नै इण बखत मुगलां रो सामनो कर सकूं, अैड़ी औकात अबार म्हारी नीं है।

सेरू—बात तो साची फुरमावो हो, महाराणा।

परताप—नै फेर इण नै'ना सा बाळकिया नै दो-दो दिन तक भूखो रै'वणो पड़ै।

सिरदार—आप भी तो चार दिनां सूं को नी अरोगिया हो, अन्दाता।

परताप—(बात टाळ नै) सिरदार। अैड़ी सुरग जैड़ी जनमभोम छोडता म्हारो हिवड़ो फाटै। जिकी जनमभोम म्हारो पालण पोसण कियो, जिण री सुतंतरता रै खातर इतरो लड़ियो, इतरा दुख भोगिया, उंण जनम-भोम नै अैड़ा दुखां में छोड़नै जावतां म्हारो काळजो टुकड़ा-टुकड़ा हुवै। (आंसू टपकै)

सिरदार—पण कियो कई जावै, अन्दाता। इण सिवाय कोई दूजो उपाव नो दीसै।

सेरू—महाराणा। म्हैं आपने अकेला नीं जावण दूं। म्हैं भी आपरै साथै चालूंला।

परताप—नी वीरा, नीं। जे थूं म्हारै साथे चालैला परो, तो पछै अठारा संदेसा म्हनै कुण भेजैला ?

सेरू—क्यूं ? सिरदार तो अठै है ईज।

परताप भाई। माड़ाणी दुख क्यूं झेलै ? थूं सिरदार रे सा'थै ईज रै, सिरदार नै मदद मिळैला।

सिरदार—अन्दाता। म्हारै किणी त'रै री मदद नीं चाहिजै। औ'आपरै साथै रै'ऽई तो सा'रो ईज लागैला।

सेरू—सिरदार ठीक कैवै महाराणा।

परताप—वा अरे, यूं ईज करो कै थां म्हारै साथै चालौ, नी…

सिरदार—म्हे अठै ईज रैंऊं।

परताप—हा! जनमभोम! मां! थनै म्हारा परणाम। (हाथ जोड़ै) मा! थनै अैड़ा बिगत मे छोड़तां म्हारौ काळजौ चिरीजै है। पण कांई करूं, मां! थनै इण विपदा सूं छुटकारौ दिरावण रै खातर ईज जाऊं हूं। मां! थनै वंदन, लाख लाख परणाम। (आंखियां मांय सूं आंसूरी नदियां बैवै)

सेरू—(अेक दम, लिलाड़ माथै हाथ धरनै आ'घी आती चीज देखतौ व्है ज्यूं) महाराणा।

परताप—कांई भाई?

सेरू—वो उठीनै आ'घो थकां कोई घोड़ै असवार आवतौ व्है ज्यूं दीसै।

सिरदार—(देख नै) हां महाराणा, धूड़ उड़ै है। घोड़ो अठीनै ईज सरपट आवतौ दीसै।

सेरू—अबै तो असवार साव नैडो आयग्यो है।

परताप—अरे! औ तो भामासा है।

(हाथ मे अेक को'थळी लियां भामासा आवै)

परताप—आवौ, भामासा! आवौ! (भामासा हाथ जोड़ै)

भामासा—घणी खमा, अन्नदाता! जै हो मेवाड़ रा धणी री! जै इकलिंग जी री!

परताप—जै इकलिंग जी री। अबार इण वखत नै अठै कीकर आवणौ हुवौ, भामासा?

भामासा—आपरै चरणां मे ईज हाजर हुवौ हू, बापजी।

परताप—बोलो, बोलौ, म्हारै लायक….

भामासा—महाराणा! म्हे सुणियौ है कै आप मेवाड़ छोड़ नै पधार रया हो; आ बात साची है कई?

परताप—हां भामासा । आ'वात साव साची है । अवै म्हनै मेवाड़ रो त्याग करणौ ईज पड़ैला ।

भामासा—पण क्यूं ? इण में मेवाड़ री नाक जावै, महाराणा ।

परताप—साह जो । आज तक म्हें घणी ई हिम्मत राखी । पण अवै म्हारै कनै नीं तौ धन है नै नीं सिपाही····

भामासा—आपरै विना मेवाड़ अनाथ व्है जावैला, अन्दाता ।

परताप भामासा ! उण अकवर नै तो बापा रावळ रै वंस री इज्जत लेवण सूं मतलब है । थांनै इण में कई ? थैं तो आणद सूं रौ ।

भामासा—कैंड़ी कड़वी वात फुरमायदी, अन्दाता ! रूंख री जड काटियां पछै डाळ सावती रै'वै ? आप तो यूं दुख भोग नै फिरता फिरौ नै म्है आणंद री वसरी वजावां ? औ आछौ लागै ? म्हे किंया मूडासूं सुख भोगां ?

परताप—पण इण में अंतराज कई है, भामासा ?

भामासा—अंतराज ? इण सूं मोटो अंतराज फेर कई हू सकै कै मेवाड़ री आन, मांन नै मरजाद रौ रूखाळौ घर छोड़ नै दर-दर भटकै, नै म्हे अठै तुरकांरी पगतळियां चाट-चाट नै जिन्दगी वितावां ? अैड़ा जीवणा विचै तो मरणौ चोखो । म्हारी अेक अरज मानीला' म्हारा धणी ?

परताप—आ'कई कौ'साहजी ? थांरी कोई भी वात म्हें आज तक टाळी है ?

भामासा—(को'थळी सा'मी घर नै) तो महाराणा । ओ'धन आपरै चरणा में अरपण करूं । अंगे'जौ ।

परताप—आ'कीकर हू सकै, दीवाणां ? थांरो सेवा रै वदळै म्हारै हाथ सूं ईज दियोड़ो धन इणी हाथ सूं पाछौ लेऊं ? आ'नीं हु सकै ।

भामासा—महाराणा ! मेवाड़ री धरती आपरी अेकला री नहीं है, म्हारी भी जनमभोम है । ओ धन आप नै नी, जनमभोम नै अरपण करूं हूं । जनमभोम री मुगती नै रिच्छा रै खातर जे म्हारो धन काम में नही आवै तो अेड़ा धन नै राख नै म्हे कई करूं ? धूड़ वरावर है ।

परताप—(आंखियां गळगळी करता) भामासा। म्हारा वा'ला दीवाण।....

भामासा—नी महाराणा जी। आप अबै ना नी'कर सको। आप वचन दियो है। इण को'थळी में इतरो धन है कै पचीस हजार सिपायां रो खरचो बा'रै बरस तक चाल सकै। आपनै लेवणो इज पड़ैला।

परताप—भामासा। थे नी मानो। म्हनै ओ धन माचमाच लेवणो इज पड़ैला धिन है उण कुख नै जिण मे थे जनम लियो। थारो ओ त्याग जगत में अमर रै'वेला।

भामासा—इणनै आप त्याग को अन्दाता? हरगिज नहीं। ओ त्याग विलकुल नी है। अैं'ड़ो कपूत नै नीच इण ससार में कुण हुवैला जिको मां जनमभोम री रिच्छा रै खातर-मुगती रै खातर-भी धन नी देवै नै दौलत नै सैं'ठी करनै रा'खै?

परताप—(गळगळा व्है नै) म्हारै कनै कीं नीं है, दो बोल भी नीं है। किण विध थांरे गुणां री वखाण करूं?

भामासा—बस, बस। अबै वा करी, म्हारा मालक। पाछा मुड़ो नै म्हारी मां री वेड़ियां तोड़ण रा सरतन करावो।

सरदार—महाराणा! पाछा मुड़ो। भामासा रा इण त्यागसूं मेवाड़ जीत नै दिखावौ।

(महाराणा धन री को'थळी पाप मे लेवै नै नैणांसूं आंसूं टपकावै)

सगळा—धिन है भामासा। थांरी छाती नै धिन् है।

सिरदार—महाराणा। जठै तक भारत री धरती माथें अैं'ड़ा नर-रतन ऊभा पगां है, उठै तक अपांणी सुतन्तरता सां'भी कोई करड़ी निजर सूं देख भी नी सकै।

परताप—खरी बात है।

सगळा—धिन है देस-भगत भामासा नै। धिन है त्यागी भामासा।

(पड़दो पड़ै)

अभ्यास रा प्रश्न

भाषा सम्बन्धी :

१. नीचे दियोड़ा वाक्यांशों रो समानार्थक सबद उणा रै सामै लिखो—

(i) जो दौलतनै सेंठी कर नै राखै..........।

(ii) जो दौलत रो त्याग करै..........।

२. इण सबदां रा हिन्दी पर्याय लिखो—

कोसिस, हिम्मत, मदद; इज्जत, अरज, मालक ।

३, 'नाक जावै' नाक सूं सम्बन्धित मुहावरो है, जिणरो अरथ है—
इज्जत जावे । आप नाक सूं सम्बन्धित दो नुवां मुहावरा और बणावो ।

४. वो सबद बतावो जिणमें 'अ' निषेधवाची उपसर्ग जियां प्रयुक्त नीं हुयो है—

(क) अनाथ ।　　(ख) असवार ।

(ग) अबोध ।　　(घ) अमर ।

(ङ) अमोलक ।　　(　)

विषय-वस्तु सम्बन्धी :

५. 'तुरकां रो अबार सामनो कर सकूं, जकी जचै कोनी ।'
नी जचण रो कारण हो—

(क) परताप चार दिनां सूं भूखा हा ।

(ख) अमर नै भूखो देख वै निरास हुयग्या ।

(ग) सत्रु रा सैनिक उणानै चैन नी लेवण देवता ।

(घ) शत्रु ने जबरो देख वै हिम्मत-हारग्या ।

(ङ) उण वखत परताप कनै नीं धन हो अर नी सिपाही ।　(　)

६. परताप जनमभोम नै छोड़र क्यूं जाणो चावता ?

(क) लड़ता-लड़ता थाकग्या ।

(ख) खावण-पीवण री कमी हुयगी ।

(ग) सत्रुवां जनमभोम लूट ली ।

(घ) अकबर संधि करण नै राजी हुयग्यो।
(ङ) जनमभोम नै विपदा सूं छुटकारो दिराबण खातर। ( )

७. 'अैड़ा धन नै रात नै म्हैं काँई करूं ? धूड़ बराबर है।' किसो धन धूड़ बराबर है ?

(क) जो मैनत नी कर कमायो जावै।
(ख) जो गरीबां सूं धिगाणै वसूल कियो जावै।
(ग) जो कंजूसी कर बचायो जावै।
(घ) जो देस रै काम नी आवै।
(ङ) जो खुद रै काम नी आवै। ( )

८. 'इणनै आप त्याग को अन्दाता। हरगिज नहीं। ओ त्याग बिलकुल नी है।' भामासा रो ओ उत्तर उणारै चरित रा किसा गुण नै बतावै ?

(क) उदारता। (ख) निडरता।
(ग) देसभगति। (घ) अनासक्ति।
(ङ) नरमाई। ( )

९. 'कैड़ी कड़वी बात फुरमायदी अन्दाता !'
आ कड़वी बात किसी ही ? २५ सबदां में लिखो।

१०. 'अैड़ा जीवण विचै तो मरणो चोखो।' किस जीवण सूं मरणो चोखो है ? ३० सबदां में उत्तर दो।

११. 'थांरो ओ त्याग जगत में अमर रैवेला।' भामासा रो ओ त्याग किसो हो। ५० सबदां में लिखो।

रचना, समालोचना अर अनुभव विस्तार सम्बन्धी :

१२. इण एकांकी री कथा २०० सबदां में लिखो।

१३. एकांकी अर नाटक मे काँई फरक व्है ? १०० सबदां में स्पष्ट करो। जे मिल सकै तो गिरधरलाल व्यास रो 'प्रणवीर प्रताप' नाटक पढ़ो।

१४. इण एकाँकी नै आपणै स्कूल रै जलसा माथै खेलो।

१५. इणा रै बारै में जाणकारी करो—

(क) इकलिंगजी (ख) बापा रावळ।

११. तत्वां री कथा

(श्री पुरुषोतमदास स्वामी)

(श्री पुरुषोत्तमदास स्वामी रो जनम सं० १९६९ मे बीकानेर में हुयो। आप राजस्थानी भाषा अर साहित्य रा मानीजता विद्वान श्री नरोत्तमदासजी स्वामी रा छोटा भाई है। आप काशी रे हिन्दू विश्वविद्यालय सूं रसायनशास्त्र में एम. एस-सी. पास करी। आप सरू मे बीकानेर रै महाराजा श्री करणीसिंघजी रा ट्यूटर भी रह्या।

अमेरिका रे ओहायो विश्वविद्यालय सूं आप ओद्योगिक रसायन में 'मास्टर आफ साइन्स' री उपाधि हांसिल करी। राजस्थान राज्य रे खनिज अर भूगर्भ विग्यान विभाग मे आप ऊंचा अधिकारी रह्या। हिन्दी में विग्यान रा विषयां पर आप कई पोथियां लिखी है। उणां में रतन विज्ञान अर रसायन विज्ञान उल्लेखजोग ग्रंथ है। हिन्दी पत्र-पत्रिकावां में समै-समै पर आपरा वैज्ञानिक लेख छपता रैवे है।

संकळित निबन्ध 'जागतीजोत' भाग १ (जनवरी १९७३) में प्रकाशित हुयो है। इण में लेखक संसार में मिलण आळा तत्वां रै रूप, प्रकार, परमाणु-संख्या, परमाणु-भार, आपस री अदळी-बदळी आदि री जाणकारी सरल भाषा अर सुबोध शैली में दी है।)

तत्वां री कथा

संसार रा सगळा पदार्थ तत्वां सूं बणियोड़ा है। पदार्थ दो भांत रा हुवै (१) जिका अेक ही तत्व सूं बणियोड़ा हुवै जियां सोनो, चांदी, तांबो, सीसो, रांगो जसद, गंधक और पारो और (२) जिका अेक सूं बेसी तत्वां रे मेळ सूं बणै जियां पीतळ, लूण, पाणी और चीणी। पीतळ में तांबे और जसद रो मेळ हुवै; लूण सोडियम और क्लोरीन तत्वां रे मेल सूं, पाणी ...जन और

आक्सीजन तत्वा रै मेळ सूं और चीणी कार्बन, हाइड्रोजन और आक्सीजन रै मेळ सू वणै।

मेळ दो भांत रा हुवै। अेक नै मिश्रण कैवै और दूजो नै संयोग। मिश्रण मे दो अथवा बेसी पदार्थां रो मेळ इण भांत सूं हुवै कै हरेक पदार्थ आप-आप री विशेषतावां कायम राखै: संयोग मे पदार्थ इण भांत सूं मिलै के उणां री विशेषतावा रो लोप हु जाव और वी मिलनै अेक नूवो ही पदार्थ वणावै जिण मे आप री निजी विशेषतावा हुवै। मिश्रण सूं वणियोड़ै पदार्थ नै मिश्रण और संयो सूं बणियोड़ै पदार्थ नै यौगिक कैवै। हवा मिश्रण है और पाणी यौगिक। हवा मे नाइट्रोजन, आक्सीजन वगैरह कई तत्व मिलियोड़ा रैवै और पाणी नाइट्रोजन और आक्सीजन तत्वां रो मेल है। हाइड्रोजन तुरंत जगणआळी गैस है और आक्सीजन इसी गैस है जिकी वास्ती रै जगण में मदत करै पण दोनां रै मेळ सूं वणियोड़ो पाणी वास्ती नै वुझा देवण वाळो द्रव है।

मिश्रण अथवा योगिक पदार्थां रै सागै दूसरा मिश्रण अथवा यौगिक पदार्थां रो मेल करनै आपां और नूवा मिश्रण अथवा यौगिक पदार्थ वणा सकां हां, पाणी में लूण मिलायां सूं लूणियो पाणी वणै। इणी भांत कास्टिक सोडै और लूण रै तेजाब नै मिलायां सूं भी लूणियो पाणी वणै। कास्टिक सोडो और लूण रो तेजाब दोनूं भयकर मारक जहर हुवै पर दोना रै मेळ सू वणियोड़ो लूणियो पाणी निर्दोष पदार्थ हुवै, जिण नै कोई आदमी चावै तो पा सकै है। अठै आ बात ध्यान मे राखणो घणी जरूरी है कै मिश्रण मे मिलायाजणवाळा पदार्थां रो कोई निश्चित अनुपात नही हुवै पण सयोग मे मिलायीजणवाळा पदार्थां रो निश्चित अनुपात हुवै और निश्चित अनुपात में मिलाणै सूं ही यौगिक पदार्थ वणै।

अणु और परमाणु

यौगिक पदार्थ रा आपां खड करा तो उण रो जिको सब सूं छोटो खंड हुवै उण नै अणु कैवै। अणु रा और खड करां तो बो जिकै तत्वां सूं बणियोड़ो है उणा रै परमाणुवां मे विभक्त हु जावे। पाणी रै अणु रा खड करणै सूं फेर बो पाणी नही रैवै पण हाइड्रोजन और आक्सीजन रा परमाणु वां में विभक्त

हु जावौ—उण रा तीन परमाणु हु जावौ जिणां में दो हाइड्रोजन रा और अेक आक्सीजन रो हुवौ।

तत्व रै सब सूं छोटे खंड नै परमाणु कैवै। तत्व रै परमाणु रो खंडन साधारण रासायनिक उपाया सूं नहीं हुवौ। इण कारण पैलां आ मानता ही कै तत्व ही मूळ द्रव्य है जिण सूं संसार रा सगळा पदार्थ वणिया है। पण अबै रेडियो-धर्मिता रो आविष्कार हुयां पछै परमाणु—अखडनीय अथवा अविभाज्य नहीं रया है, परमाणुवां रा भी खंड करीज सकै है।

खंड करणै पर तत्वां रा परमाणु मूळ-कणां मे विभक्त हु जावे जिणां मे तीन प्रधान है—१. इलेक्ट्रोन, २. प्रोटोन और ३. न्यूट्रोन। अै मूळ कण ही मूळ द्रव्य है जिणां सूं सगळा तत्व और संसार रा दूसरा सगळा पदार्थ वणियोडा है।

मूळ-कणां सूं तत्वां रा परमाणु वणै, तत्वां रा परमाणुवां सूं अणु वणै और अणुवां सूं सारा पदार्थ बणै। अेक तत्व रै कई परमाणुवां सूं भी वण सकै और अनेक तत्वां रै कई परमाणुवां सूं भी।

प्रकृति में और पायीजण वाळै तत्वां री संख्या ९२ है। अै ९२ तत्व न्यारा-न्यारा है और आप-आप री विशेषतावां राखै पण जिकै मूळ-कणांसूं वै वणि-योड़ा है वै मूळ कण सगळां में अेक ही जिसा है। तत्वां मे भेद उणा रै परमाणवां में मौजूद मूल-कणा री संख्या और सयोजन री रीत रै कारण हुवै।

अण और परमाणु घणा छोटा हुवै—इत्ता छोटा कै उणां री कल्पना करणी भी संभव नही।

परमाणु में अेक नाभिक या केंद्र हुवै जिण मैं प्रोटोन और न्यूट्रोन हुवै और जियां सूरज रै च्यारां पासी न्यारी-न्यारी कक्षावां मे ग्रह भ्रमण करै वियां हो नाभिक रै च्यारां पासी इलेक्ट्रोन न्यारी-न्यारी कक्षावां में भ्रमण करता रैवै। सूरज और ग्रहां रै बीच में जियां अपार खाली आकाश हुवै। वियां ही नाभिक और इलेक्ट्रोन रै बीच में भी घणी खाली जगां हुवै।

तत्वां री संख्या

अबार तांई मालम हुयोड़ा तत्वा री संख्या १०३[1] है। इणां मे कई तत्व प्राकृतिक है और कई कृत्रिम अर्थात् मिनख रा बणायोडा। प्राकृतिक तत्व प्रकृति में पायीजै, पण कृत्रिम तत्वां नै विज्ञान रा विद्वानां प्रयोगशाला में बणाया है। प्राकृतिक तत्वां री संख्या ९२ है और कृत्रिम तत्वां री ११। कृत्रिम तत्व रेडियोधर्मी अस्थायी तत्व है। उणां री ऊमर घणी ओछी हुवै। कई-अेक प्राकृतिक तत्वा नै भी वैज्ञानिकां प्रयोगशाळा मे बणाया है। इसो अेक तत्व टेकनेटियम है।

प्राकृतिक तत्वां मे कई तत्व तो घणा जाणीता है और लोग उणा नै घणै जमानै सूं जाणै है। सोनो, चादी, लोहो, तावो, सीसो, पारो, संखियो सुरमो, रांगो, जसद, और गधक इणी भांत रा तत्व है। बाकी घणकरी तत्वां री खोज लारलै दो-तीन सौ वरसां में हुयी है।

तत्वां रा प्रकार

सगळा १०३ तत्वा मे ११ गैसीय, २ द्रव और ९० ठोस पदार्थ हैं। गैसीय ११ तत्व सगळा अधातु है : २ द्रव तत्वां में अेक अधातु और अेक धातु है। गैसीय और द्रव तत्व अै है—

(क) गैसीय—१. हाइड्रोजन, २. नाइट्रोजन, ३. आक्सीजन, ४. फ्लोरीन, ५. क्लोरीन, ६. हेलियम, ७. आर्गन, ८. नियन, ९. क्रिप्टन १०. जेनन, ११. रेडन।

(ख) द्रव—१. ब्रोमीन (अधातु), २. पारो (धातु)।

ठोस तत्वां में कई अधातू और घणा-सा धातु है। उणां में कई तत्व इसा भी है जिकां मे धातु और अधातु दोनां रा गुण पायीजै, जिया संखियो, सुरमो आदि इमा तत्वां नै अर्धधातु अथवा उपधातु कैवै।

पृथ्वी माथै तत्वां री मात्रा

प्राकृतिक ९२ वां तत्वां मांय सूं कई तो पृथ्वी माथै मोकळी मात्रा में मिलै

१—लारला वरसां में दो कृत्रिम तत्व वैज्ञानिकां बणाया है जिणां रा नांव (१०४) खुर्चेटोवियम और (१०५) हानियम है।

पण घणकरै तत्वां री मात्रा पृथ्वी माथै घणी कम है और कइयां री तो जावक नांव-मात्रा री है। सगळा सूं घणो मिलणवाळो तत्व आक्सीजन है।

तत्वां री परमाणु संख्या

तत्व री आप री क्रमिक संख्या हुवै। आ संख्या तत्व रै परमाणु में मौजूद प्रोटोन और इलेक्ट्रोन कणां री सख्या रै मुताबिक हुवै। इण नै परमाणु-संख्या कैवै। हाइड्रोजन री परमाणु-संख्या अेक (१) हुवै। आक्सीजन रै परमाणु में आठ प्रोटोन और आठ ही इलेक्ट्रोन हुवै, उण री परमाणु सख्या आठ (८) हुवै। यूरेनियम रै परमाणु में ९२ प्रोटोन और ९२ इलैक्ट्रोन हुवै। उण री परमाणु-संख्या ९२ है।

तत्वाँ रो परमाणु भार

तत्व रै परमाणु में भार भी हुवै। इलेक्ट्रोन में नांव-मात्र रो भार हुवै। परमाणु रो भार वास्तव में परमाणु रै नाभिक मैं मौजूद प्रोटोन और न्येट्रोन कणां री संख्या माथै निर्भर करै। हाइड्रोजन रै परमाणु में साधारणतया १ प्रोटीन हुवै। उण रो परमाणु-भार १ हुवै। आक्सीजन रै परमाणु में साधारणतया ८ प्रोटोन और ८ न्यूट्रोन हुवै। उण रो परमाणु-भार २३८ हुवै। यूरेनियम मे ८१ प्रोटीन और १४६ न्यूट्रीन हुवै। उण रो परमाणु भार २३८ हुवै।

पण साधारणतया तत्व रा सगळा परमाणु अेक जिसा नहीं हुवै। अेक तत्व रा सगळा परमाणुवां में प्रोटोनां री संख्या तो निश्चित हुवै पण न्यूट्रोन कई-अेक परमाणुवां मे कमी-वेसी भी हुवै-जिण सूं अेक ही तत्व रा न्यारा-न्यारा परमाणुवां में भार रो थोड़ो फर्क हुवै—कई परमाणु वेसी भारी हुवै तो कई कम भारी हूवै। अेक तत्व रा अ-समान (न्यारा-न्यारा) भारवाळा परमाणुवां नै समस्थानिक कैवै। समस्थानिकां री परमाणु-संख्या तो समान हुवै पण परमाणु-भार न्यारी-न्यारी हुवै। केई तत्व रो परमाणु-भार वतावणो हुवै तो उण में मौजूद परमाणुवां रो औसत भार वतायीजै। औसत भार ही तत्व रो परमाणु-भार मानीजै।

तत्वां री अदळा-वदळी

पुराणै लोगां री मानता ही कै लोहै, सीसै जिसी धातुवां रो सोनो

वणायीज सकै । यूरोप में तो लोगां सैकड़ा वरसा इण री कोसीस करी । रसायन शास्त्र रो विकास हुयो जद विद्वानां इण वात नै असंभव कल्पना वतायी । रेडियोधर्मिता रो आविष्कार हुया पछै अबै आ वात असंभव कल्पना नही रैयी है—कम सूं-कम सिद्धान्त-रूप में । अबै विद्वान मानै है कै अेक तत्व दूजै तत्व में वदळीज सकै है । पारै री परमाणु संख्या ८० है और सोने री ७९ जो पारै रे परमाणु मांय सूं अेक प्रोटोन कम कर दियो जावै तो वो सोनै रो परमाणु वण सकै है । पण व्यवहार में आ वात हाल तांई संभव नही हुयी है । हां । प्रकृति में रेडियोधर्मी तत्वां रो निरंतर विखंडन हुतो रैवै है और वै आप रै पूर्व रै तत्वां में वदळीज रया है । यूरोनियम रेडियम वणै और रेडियम हुतो-हुतो अंत मे सीसो वण जावै । अेक दिन सगळा रेडियो-धर्मी तत्व सीसो वण जासी ।

विज्ञान रा विद्वानां मौजूदा तत्वां सूं कई-अेक नूंवा तत्व जरूर वणाया है । यूरोनियम रै वाद रा तत्व विद्वानां द्वारा वणायोड़ा कृत्रिम तत्व है । कई-अेक प्राकृतिक तत्वां नै भी विद्वानां प्रयोगशाळा मे वणाया है ।

अभ्यास रा प्रश्न

भाषा सम्बन्धी :

१. नीचे दियोड़ा सबद-युगमां रो अरथ-भेद वाक्यां रै प्रयोग सूं स्पष्ट करो-

(i) ग्रह । गृह । (ii) द्रव । द्रव्य ।

(iii) अणु । परमाणु । (iv) प्राकृतिक । कृत्रिम ।

२. 'सयोग' सवद री बणघट पर ध्यांन दो—सम्+योग—संयोग । ओ सबद 'योग' सबद में 'सम्' उपसर्ग लगा'र बण्यो है । आप 'योग' सबद में कोई ४ उपसर्ग लगा'र नुंवा सबद बणावो ।

३. 'कम सू कम' मे किसो समास है ?

(क) द्वन्द्व । (ख) द्विगु ।

(ग) अव्ययीभाव । (घ) कर्मधारय ।

(ङ) तत्पुरुष । ( )

विषय वस्तु सम्बन्धी :

४. संसार रा सगळा पदार्थ किण सूं वणियोड़ा है ?

(क) तत्वां सूं ।　　(ख) अणु सूं ।

(ग) परमाणु सूं ।　　(घ) मिश्रण सूं ।

(ङ) यौगिक सूं ।　　(　　)

५. नीचे दियोडा वाक्यां में किसो कथन गलत है ?

(क) चीणी कार्बन, हाईड्रोजन अर आक्सीजन रै मेळ सूं वणै ।

(ख) हवा मिश्रण है अर पाणी यौगिक ।

(ग) तत्व रै सब सूं छोटे खंड नै अणु कैवै ।

(घ) खड करणै पर तत्वां रा परमाणु मूळकणां में विभक्त हुवै ।

(ङ) सगळा सूं घणो मिलणवाळो तत्व आक्सीजन है ।　　(　　)

६. नीचे पदार्थां रा नाम दियोड़ा है । आप छांट'र वतावो कै किसा पदार्थं मिश्रण है अर किसा यौगिक ?

पीतळ, लूण; पाणी, चीणी, हवा, चूनो; नीलोथोथो, सावुन, सैत; सगमरमर, मिट्टी रो तेल ।

७. नीचे दियोवा वाक्यां री खाली जगां कोष्टक में दियोड़ा उपयुक्त सवदां सूं भरो—

(i) तांवै अर जसद रै मेळ-सू ....वणै । (पीतळ । सोना)

(ii) सोडियम अर क्लोरिन तत्वां रै मेळ सूं....वणै । (चीणी । लूण)

(iii) हाइड्रोजन अर आक्सीजन रै मेल सूं....वणै । (लूणियोपाणी । पाणी)

८. तीन प्रधान मूळ-कण किसा है ?

(क) इलेक्ट्रोन । प्रोटोन । न्यूट्रोन ।

(ख) हाइड्रोजन । आक्सीजन । नाइट्रोजन ।

(ग) कार्वन । हाइड्रोजन । आक्सीजन ।

(घ) टैक्नेटियम । यूरेनियम । प्रोटोन ।

(ङ) इलेक्ट्रोन । न्यूट्रोन । यूरेनियम ।　　(　　)

९. पदार्थ री भांतरा हुवै । अै दो भांत किसा है ? दो-दो उदाहरण दो ।
१०. मिश्रण अर यौगिक मैं काई फरक हुवै । उदाहरण देय'र समझावो ।
११. अबार तांई मालम हुयोड़ा तत्वां री संख्या किती है ? आप इण तत्वां रो वर्गीकरण कर गैसीय अर द्रव तत्वा रा नाम लिखो ।
१२. तत्वां री अदळा-बदळी किण भांत हुवै । उदाहरण देय'र स्पष्ट करो ।
१३. इणा पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखो—
(i) नाभिक । (ii) परमाणु-संख्या ।
(iii) परमाणु-भार । (iv) समस्थानिक ।
(v) रेडियोधर्मिता ।

रचना, समालोचना अर अनुभव विस्तार सम्बन्धी :

१४. खुद ने 'लूण' मान'र आप आपरी कथा १०० सबदां मे लिखो ।
१५. पाणी द्रव है । ओ ठोस अर गैस में भी बदले । आप तीन्यूं रूपां रो आपणे अनुभव सूं २०० सबदा मे बरणन करो ।

१२. हाडौती में गरांस-पूजा

(डा० नाथूलाल पाठक)

(डा० नाथूलाल पाठक री जनम सं १९८२ मे कोटा जिलै रै बारां कसबे मे हुयो । आप हिन्दी-संस्कृत में एम. ए. कर'र प्राध्यापक बणग्या । राजस्थान विश्वविद्यालय सूं 'ऐतरेय ब्राह्मण—एक अध्ययन' विषय पर पी एच. डी. री उपाधि हांसल करी । निखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद विद्यापीठ री 'आयुर्वेद विशारद' परीक्षा भी आप पास करी । अबार आप राजकीय महाविद्यालय, श्री गंगानगर में स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग रा अध्यक्ष है ।

डा० पाठक संस्कृत पालि, राजस्थानी, हिन्दी अर लोक साहित्य रा गवेषक विद्वान है । राजस्थान सरकार शोध कार्यां सारू आपनै योग्यता वेतन

सूं सम्मानित कियो है। इण दगत आप विश्वविद्यालय अनुदान आयोग सूं स्वीकृत 'हाड़ोती लोक साहित्य सर्वेक्षण परियोजना' माथै काम कररया है। आपरा केई शोध लेख पत्र-पत्रिकावां में छप्या है। आपरी छपयोड़ी पुस्तकां में 'ऐतरेय ब्राह्मण एक अध्ययन', 'धम्मपद का विवेचनात्मक अध्ययन', 'हाड़ौती कहावतें', परम्परागत भारतीय शिक्षा का प्रथम सोपान—सीधो बरणा' प्रमुख है।

संकळित निबन्ध में सरब ऋद्धि-सिद्धि रा दाता गणेसजी रै महत्व री ओळखाण करतां हाड़ोती में उणरी पूजा-मानता रो आछो परिचय दियो है।)

हाड़ोती में गणेस-पूजा

(१)

बुद्धि का सागर, सरब गुणां का आगर अर विघनां का विनासक गणेसजी को राजस्थान का ई अलाका मे होबा हाळा सभी सुभ कामां मं सबसूं फैली समरण कर्‌यो जावै छै। ई कारण काम को सरू करबो अर 'श्रीगणेश करबो' समान अर्थ का वाचक बणग्या छै। गांव का लोग जब कोई आदमी सूं काम सरू करबावेई खहै तो 'गणैस जी समरो' मुहावरा का प्रयोग करै छै। ब्याव, विद्यारम्भ, सूरज पूजा आदि सस्कारां तथा लछमीजी की पूजा, जग्ग, अनुष्ठान आदि कामां सूं लग('र मकान, कुंवा आदि का निर्माण का कामां मे गणेस पूजा मुख्यारूप सूं करी जावै छै। ब्याव आदि का कामां में तो श्रीगणेस जी ई सरब ऋद्धि-सिद्धि का देवा हाळा मान्या जावै छै। वांनै सबसूं फैली नूंतो द्‌यां पाछै ब्याव में कोई बिघन आ'र खड़ोबी न रह सकै। या खही जावै छै क "गणेसजी म्हाराज पाटै बंठ्या अर सब काम सद्ध होग्ये।" निमंत्रण कै पाछै गोबर सूं लप्या-पुत्या घर मं वां की थरपणा कर दी जावै छै अर उई दन सूं नेम पूरबक वां की पूजा की व्यवस्था करी जावै छै। या पूजा ब्याव कै पाछै वांकी विदायगी ताई करी जावै छै।

सेठ-साहूकार अर पढबा-लखबा को काम करबा हाळा सारा मनख आपणीं खाता-बही अर रजिस्टरां सं माँडवो सरु करबा सूं फैली 'श्रीगणेसाय

अलाका में गणेसजी का घणां मन्दर दिखमान छै। यां मन्दरां नैं अर लोक-विस्वास नैं देखबा सूं या बात समझ में आवै छै क ई अलाका में गणेसपूजा सैंकड़ा बरसां सूं चाली आवै छै। या भी तोल पड़ै छै क गांव बसबा सूं पैली गणपतजी की थरपना जरूर करी जावै छै। ज्यां गांव का कल्याण पट छै, व्हां भी गणेसजी की स्थापना होवै छै।

हाड़ौती प्रदेस में गणेसजी का गणपत, गुणेसजी, गजानंद, सूंड-सुंडाळा, दूंद-दुंदाळा, वनायक आदि नांव बोल्या जावै छै। काम, सरूप, असथान अर थापना करबा हाळा की भिन्नता सूं गणेसजी का न्याळा न्याळा नांव हो जावै छै। जैस्यां मनसापूरण, चिंतामण, मुकनागणेसजी, दो हाथ का गणेसजी, भूरागणेसजी, चंदरगणेसजी, माटका गणेसजी आदि अनेक प्रकार का गणेसजी देखबा में आवै छै। बूंदी जिला में बड़ंदण गांव का गणेसजी घणां प्रसिद्ध छै। दूर दूर सूं नतकै ही जात्री दरसणां कै वास्तै आबू करै छै। बूंदी सहर में सवा हाथ की छतरी में छः हाथ का गणेसजी अर तीन थम्भा की छतरी का गणेसजी भी प्रसिद्ध छै। ई अलाका में गणेसजी की केई प्रकार की प्रतिमा मलै छै। घर का दरवाजा ऊपर लाडू को भोग लगाता अथवा चंवर ढुळाती रिद्ध-सिद्ध हाळी गणेसजी की मूर्ति मलै छै। दो हाथ, चार हाथ तथा छै हाथ का गणेसजी की प्रतिमा तो ई अलाका में सभी ठौरां मलै छै। दूसरी विशेष बात वांकी सूंडा में देखी जा सकै छै। कोई की सूंड सूधी, कोई की बाईं आडी लळती, कोई की मूंडा पै लपटी अर कोई सामनै सूं ऊंची दीखै छै। मूर्ति की पीठक्या में गणेसजी की सवारी ऊंदरो जरूर कोर्‌यो जावै छै। गणेसजी की प्रतिमा मुकराणा अथवा लाल भाटा की वणाई जावै छै। मुकराणा की मूर्ति पै कामी लगावो जरूरी न समझ्यो जावै।

(३)

पुराणां का मत अर जनपदां का लोकाचार में गणेसजी का जनम सूं सम्बन्ध राखबा हाळी घणी कथा कहाण्यां मलै छै। हाड़ौती में वां का केई रूप प्रचलित छै। हाड़ौती में गणेसपूजा को प्रचार अतरो ज्यादा छै क हिंदुवां कै लारै दूसरा मतां नैं मानबा हाळा भी जाण्दां या अणजण्यां गणेसपूजा नैं

मान्यता दै छै। हाडौती मं वसवा हाळा मुसलमान रंगरेजां मं तो ब्याव का मौका पै विनायकां का कोका द्या जावै छै। गणेसजी की पूजा अर व्रत कै कारणं बुधवार का दन को घणो महात्म्य छै। ब्राह्मण अर पूजारी लोग गांव मं घर-घर जा'र गणेस जी की पूजा करै छै। भादवा मं ऊजळा पांख की चौथ नै गणेस जी को जनम दन मान्यो जावै छै। यो दन लोक-पर्व का रूप मं मनायो जावै छै। पढ़वा हाळ वाळकां को तो यो त्योहार ही छै। आगलै समय ई दन गुरुजन आपणां शिष्यां कै घर जाता अर वाळकां का मां-वाप वां को घणो सनमान करता। थोडा दन पैली जव गांवां अर सहरां मं आज की नांई मदरसा अर विद्यालय न छा ऊं वरवतां गुरूजी की साळ मं ही वच्चा पढ़वा जावै छा। पढवा हाळा वाळक गणेसजी का चटडा (छात्र) वया जावै छा। गणेस चौथ नै मां-वाप आपणां वच्चां नै चोखी तरह सूं न्हा-ध्वा'र मंहदी लगावै छा अर वां नै सोवता वस्त्राभूषण सूं सजावै छा। अव यो रिवाज धीरां-धीरां मटतो जावै छै पण फेर भी आज कै दन वच्चा एकठा हो'र डंडा जोड़ता होयां गणेसजी की स्तुति गाता घरां घरां फरै छै। यां विद्यार्थी वच्चां की स्तुति ई प्रकार छै—

"जै गणेश, जै गणेस, जै गणेस देवा।
माता तेरी पारवती, पिता महादेवा॥
पान चढ़ै फूल चढ़ै और चढ़ै मेवा।
लडवन को भोग लगै सिद्ध करे सेवा॥
एकदन्त दयावंत च्यार भुजा धारी।
माथे सिंदूर सोहै, मूसे की सवारी।
जै गणेस................"

गणेस चौथ का त्योहार पै मंदरां अर मोटी-मोटी ठोरां गणेस जी को पूजन, भजन कीर्तन आदि को कार्यक्रम होवै छै, मोतीचूर या नुकती का लाडू अर खोपरा को प्रसाद वांट्यो जावै छै। निर्धन परिवारां मं गुड़ अर पतासा को ही भोग लगायो जावै छै। ई प्रकार ई लोक-पर्व पै मनख्यां को विद्या प्रेम उमड़ पड़ै छै। हरेक आदमी आपणां वाळकां नै विद्या-वुद्धि सूं भर्‌यो पूरो देखवा की इच्छा राखै छै।

अभ्यास रा प्रश्न

भाषा सम्बन्धी :

१. इण सबदां रा हिन्दी रूप लिखो—
जग्ग, ब्याव नेम, थरपणा, नूंतो, करसाण ।

२. इण पाठ में गणेसजी रा केई पर्यायवाची सबद आया है । आप उणां नै छांट'र एक फेरिस्त बणावो, जियां-दूंदाळा, गजानंद ।

३. नीचे दियोड़ा वाक्यां री खाली जगां उपयुक्त सबदां सूं भरो—
(i) 'गजानदजी नै सोहै- दो-दो नारी' गीत में........................, द्वारा वां की सेवा को वर्णन करयो ग्यो है ।
(ii) गणेसजी की पूजा अर व्रत कै कारणै..........का दन को घणो महात्म्य है ।

विषय वस्तु सम्बन्धी :

४. गणेसजी नै सबसूं प्यारी चीज कांई लागै ?
(क) लाडू (ख) खोपरो
(ग) गुड़ (घ) पतासा
(ङ) पान ( )

५. सभी सुभ कामां में सबसूं पैलो गणेशजी रो समरण करयो जावै ।' इण रो कारण है—
(क) काम करण री प्रेरणा गणेसजी सूं मिलै ।
(ख) काम गणेसजी चावै जिया हुवै ।
(ग) काम रै पूरे हुवण मे कांई विघन नी पड़ै ।
(घ) काम किफायत सूं हुवै ।
(ङ) गणेसजी खुद आ'र काम में मदद देवै । ( )

६. गणेस-पूजा किण भांत करीजै ?

७. 'गणेसजी म्हाराज पाटै बैठ्या अर सब काम सद्ध होयो ।' इण उक्ति रा भाव स्पष्ट करो ।

८. गणेसचौथ कद आवै, अर आप ई दन नै किण भांत मनावो ? ८० सबदां मे लिखो।

९. गणेस चौथ रो पढणिया बाळका सारू कांई महत्व है ?

रचना, समालोचना अर अनुभव-विस्तार सम्बन्धी :

१०. गणेसजी रै महात्म्य पर १५० सबदा मे एक लेख लिखो।

११. गणेसजी री मूरति देख'र आप रै मन पर जो प्रभाव पड़ै, उण नै १०० सबदां में स्पष्ट करो।

१२ इणा रै विषय में जाणकारी करो—

(i) सूरज-पूजा (ii) लछमी-पूजा

(iii) रणथंभोर रो कल्लो (iv) हाडौती रा ख्याल।

१३. गणेसजी सु डाळा कहीजै। इण रै मूळ में रह्योडी अन्तरकथा स्पष्ट करो।

१४. इण पाठ में गणेसजी सूं सम्बन्ध राखण आळा केई दूहा अर लोकगीतां रा प्रसंग आया है। इणां नै ध्यान में राख'र आपरै क्षेत्र में गणेसजी सूं सम्बन्धित जै लोकगीत गाइजे, उणां नै नोट करो।

१३. पींपळ रो गट्टो

(श्री विद्याधर शास्त्री)

(श्री विद्याधर शास्त्री रो जनम संवत १९५८ में चुरू में हुयो। आपरा पिता पं० देवी प्रसाद शास्त्री शास्त्रां रा आछा जाणकार हा। इणां रै पास सूं ही शास्त्री जी वेद, व्याकरण, धर्म-शास्त्र, पुराण, ज्योतिष, न्याय आदि विषयां री पूरी जाणकारी हांसिळ करी। आप टाबरपणां सूं ही हिन्दी अर संस्कृत में गद्य अर पद्य री रचनावां करण लागग्या हा।

डूंगर कालेज, बीकानेर मे आप केई बरसां तांई संस्कृत विभाग रा अध्यक्ष रह्या। घणकरी सामाजिक अर साहित्यिक संस्थावां रा अधिकारी रह'र आप उणां नै सक्रिय सहयोग दियो। बीकानेर-साहित्य-सम्मेलण अर 'राजस्थान संस्कृत सम्मेलण'रै अध्यक्ष रै रूप मे कियोड़ी आपरी सेवावां घणी सरावण जोग है। अबार आप बीकानेर री 'विश्व भारती' नाम री शोध संस्था रा निदेशक अर तिमाही पत्रिका 'विश्वंभरा' रा मुख्य सम्पादक है। महाकाव्य, खण्डकाव्य, नाटक अदि विधावां पर आप संस्कृत मे घणकरी रचनावां लिखी है जिणा में प्रमुख है—'हरनामामृत महाकाव्य', 'विद्याधर नीतिरत्न', 'आनंद मदाकिनी' 'काव्यवाटिका', 'पूर्णानदम्', 'कलिपलायनम्' 'दुर्बल बलम्' आदि। सन् १९६८ मे राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर आपनै 'मनीषी' पदवी सूं अलंकृत कर साहित्य अर दर्शन रै क्षेत्र मे करीयोड़ी आपरी सेवावां रै प्रति घणो मान प्रकट करयो है।

संकळित निबन्ध 'जागती जोत' भाग १, अंक १ (जनवरी १९७३) सूं लियोड़ो है। इण मे लेखक पीपळ रै गट्टे रै सागै आपणै जूना साथी रो सम्बन्ध थरपीज पुराणी याद रो मार्मिक वरणन कियो है। आखिर मे क्रांति-क्रांति चिल्लाणियां नूवी पीढी रै लोगां नै सावचेत कियो है कै नूई चीजां रै सागै पुराणती सै चीजां एकदम छोड़ण जेडी नी है।

पींपल रो गट्टो

(१)

ओ विशाल-काय अश्वत्थ-संरक्षक म्हारला जूना साथी गट्टा। म्हारलै बूढापै रे सागै- सागै, हूं देखूं हूं के, आजकाल थारै पुराणियै रग-ढंग मे मोत-मोत फरक पडग्यो है। आज रै पचास-साठ वरसां पैली थारली जकी चमक-दमक अर अकड़ ही ना तो वा ही आज उण रूप मे दीसै और ना थारा जूना साथी ही आज थारै कनै कठैई निजर आवै। मनै घणो दुख तो इण बात रो है कै थारी सुख साता पूछणिया वै थारा साथी, सगळा-र-सगळा, अेकै सागैई, कठै गया परा। वै दिन भी हा जद काई नगरां में अर कांई रोही में थारो अेक-छत्र राज हो। जद-कदेई म्हे पैदल जात्रा करता तो, हूं देखतो कै, छोटा-

बड़ा पचासूँ आदमी दूर सूँ ही थारै दरसण वास्तै तरसता। उण कडकती अर लाय वरसती तावड़ै में पसेवा सूँ सरावोर हुयोड़ा, अेक-अेक पैंड नै गिणता, म्हे जद दूर सूँ ही थारली ऊपरली टोकी नै देखता तो देखतां ही हर्‌या हु जाता। म्हे जद थारै कनै पूगता तो तूँ म्हां सगळानै आप री ठंडी छाती सूँ लेतो अर थारो इष्टदेव पींपळ म्हाराज आप रै लांबै-लांबै हाथां नै पसार-अर, अेके सागैई हजारू ठंढै-ठंढै पंखा सूँ, म्हां सगळा रै पसेवां नै पलक भर मे ही सुका देतो। सहस्त्र-दल रे इण स्वागत रैं पछै बद म्हे पो रै इमरत-जल नै पीता तो पीतां ही आंखियां नींद री झवकियां सूँ भर जाती अर म्हारै मन में आती के अवै कम-सूँ-कम दो घंटा थारली इण ठंडे आंगणियां माथै री सूता-सूता सृष्टि रै सगळै सुखां नै भोग लेवां। पण पाँच-दस मिनट भी पूरा कोनी हुता कै कोई-न-कोई आगै सरण साख खाथावळ करण लाग जातो। उण री खाथावळ इसी अणखावणी लागती कै मन में तो आ ही आती कै अेक लात मे ही इण री सगळा खाथावल नै खतम कर दूं पण जद दूसरा भी खण री हां में हा मिला'र उण रै सागै हु जाता तो झख मा'र'र मनै भी उठणो पड़तो अ'र वार-वार थारै कानी देखतो और थारी उण मनवार नै याद करतो हूं उणां रै लारै-लारै चाल पड़तो। सांची बात तो आ है कै दुनिया री कठोर परिस्थितियां और स्थितियां रै आगै गरीब मनहै री बात नै कोई कोनी सुणे।

खैर! उणा रै सागै-सागै, अथवा उणां रै लारै-लारै, चालतां-चालतां भगवान री कृपा सूँ फेर थारा दरसण हुता। दूसरा जद ताणी चिलम-तमाखू नै सम्हाळता, हूं थारली ठंढै-ठंढै आंगणै माथै म्हारली कमर नै फेर सीधी कर लेतो।

इण रै वाद तीसरी मंजिल मिनटां मे ही पार हुती दीसती अर जद सूरज महाराज रै ढळतां-ढळतां हूं, म्हारली विद्यानगर रै बीड़ में पूगतो तो वठै वारली जोड़ै री पायतळ में, जोड़ै रे च्यारां कानी, थारै ऊपर स्नान-ध्यान मे मगन सज्जनां नै देखतो। आगै सगै-नै-सगै पूगण री फिकर छोड'र हूं भी शोच-स्नान आदि सूँ निवृत हो'र, वठैई सायकालीन आभै री मनमोहणी

नुरगी गहरी सुनेरी और गहरी चमकदार ललाई नै देखतो-देखतो सूरज भगवान नै अरघदे'र फेर शाम सध्या रै शांत ध्यान में लीन हुजातो।

(२)

अै सगळी वाता अबै घणी पुराणी व्हैगी है। इण बरसा में थारी-म्हारी मुलाकात इण पुराणियै मारगा माथै तो कोनी हुयी पण जद-कदैई कोई-सै दूसरे मारगां माथै जाण रो काम पड़ग्यो तो मैं कठैई थारलै उण ताजै रूप-रंग रा दरसण कोनी कर्‌या। अर जे कठैई थारलो पुराणियो ढाचो देखण मे आयो भी तो थारली छाती नै पतळ में धमकती देख'र म्हारली छाती भी धकधक करण लाग गी। इण धसकाण रै अलगो मे आ भी देखी कै कठैई-कठैई थारलो विण नाव टूट्योड़ी पड्यो हो पण वठै तनै सम्हाळणआळो' अेक भी मानखो निजर नही आयो।

थारली आजकल री इण हालत नै देख'र म्हारले माथै में दो-तीन सवाल निरंतर चक्कर काटै है। थारी आ हालत क्यो हुयी? थारै ही किणी दोष रै कारण हुयी है अथवा थारलो इष्टदेव पीपळ महाराज री विशेषता में ही कोई इसी कमी आयगी जिण सूं उणा रै सागै-मागै तनै भी आज कोई कोनी पूछै।

गट्टो चुप हो। गट्टै कोई सो भी जवाब कोनी दियो तो म्हारलो माथो ही फेर केण लाग्यो अे सगळा सवाल इण रूप मे उठ सकै है पण गट्टै री इण हालर रै खातर गट्टै अथवा पापळ मे कोई तरिया रो दोष देखणो बेकार है। अे तो आज भी, पुराणियै जमानै आळी नाई, सगळा री सेवा कारण नै त्यार है—पीपळ री सुंदरता अथवा उणरी उपयोगिता मे भी कोई तरियां री कमी कोनी आयी है। कमी आयी है तो वा उण लोगा मे ही आयी है जिकां रा दिमाग आज रै पैट्राल रै धूवें सूं मटमैला हो चुक्या है और जिका रोही री शुद्ध अर पवित्र हवा मे कठैई अेकांत शांत स्थान मे दो-च्यार पळ आराम सूं बैठणै अथवा लेटणं रो नाव लेणो भी भूलग्या है।

(३)

अे लोग 'क्रांति! क्रान्ति!' करता क्रांति रै नांव सूं सगळी पुराणी चीजां

नै जड़ामूल सूं उपाड़नी चावै अर पुराणी पीढ़ी रै सगळै लोगां नै आप रा जन्म-जात शत्रु समझै । पण समझै तो समझबो करो । वात सांचली आ है कै पुराणती पीढ़ी रै विशाल-हृदय और व्यापक दृष्टि वाला लोगां रै सामनै इणां रा दिल और दिमाग परम संकुचित है । अै नये और पुराणै रै असली भेद नै कोनी समझै और ना क्रांति रै रहस्य नै ही जाणै है । क्रांति रो पाठ पढणो हुवै तो म्हांरलै पुराणियै गट्टै रै इष्टदेव पीपळ (अश्वत्थ) सूं ही पढणो पड़सी । ओ निर्मोही वरसूं-वरस आप रै पुराणियै पत्तां नै कुण जाणै कठै-रा कठै उडा देवै पण वाद में जद फेर नवीनता रै कानी मुड़ै तो आप रै उण सागी पुराणियै रूप-रंग नै ही, उण में लेशमात्र भी फरक नहीं कर'र, ज्यों-रो-ज्यों, फेर धार लेवै । पुराणिगै पत्तां अर नये पत्तां री कोमलता में दो दिन थोड़ो फरक जरूर दीसै पण इणां रै आकार अथवा उणां री हरकत में कोई तरियां रो भी फरक कोनी पड़ै ।

जे नयोड़ा साथी इयां ही नयी चीजां रै सागै पुराणती चीजां री अेकदम उपेक्षा नहीं कर'र उणां नै भी सम्हाळता रैता तो इणां री आ दशा नहीं हुती और कदै-न-कदै वै भी इणां रै ऊपर बैठ'र अथवा लेट'र दुनिया री अद्भुत शीतलता रो आनंद ले सकता ।

अभ्यास रा प्रश्न

भाषा सम्बन्धी :

१. नीचे दियोड़ा सवद-युगमां रो अरथ-भेद वाक्य-प्रयोग सूं स्पष्ट करो—
   (i) गट्टो । चबूतरो । (ii) कृपा । दया ।
   (iii) उपेक्षा । अपेक्षा । (iv) देव । इष्टदेव ।

२. 'कमर सीधी करलेणो' कमर सूं सम्बन्धित एक मुहावरो है, जींरो अरथ है—लेट कर आराम करणो । आप कमर सूं सम्बन्धित दो नुंवा मुहावरा और वणावो ।

३. नीचे दियोड़ा सवदां में किसो सवद तत्पुरुष समास रो उदाहरण है ?
   (क) सुख-साता । (ख) चमक-दमक ।

(ग) जन्म-जात । (घ) सहस्त्र-दळ ।

(ङ) स्नान-ध्यान । ( )

४. स्वागत सबद रो शुद्ध संधि-विच्छेद किसो है ?

(क) स्व+आगत । (ख) स्वा+आगत ।

(ग) सु+आगत । (च) सुव+आगत ।

(ङ) स्वा+गत । ( )

विषय-वस्तु सम्बन्धी :

५. पीपळ रै गट्टे नै जूनो साथी बताणै सूं लेखक रै मन री काई भावना प्रगट व्है ?

(क) दया । (ख) आदर ।

(ग) भाईचारो । (घ) वडप्पन ।

(ङ) हमदर्दी । ( )

६ 'पींपळ रो गट्टो' निवन्ध-लिखण रो मुख्य उद्देश्य है—

(क) पींपळ रै गट्टे री सुन्दरता रो वरणन करणो ।

(ख पीपळ रै पेड़ रो उपयोग वतावणो ।

(ग) पीपळ रै गट्टे सूं बुढ़ापै री तुलना करणी ।

(घ) नुंवी पीढ़ी नै पुराणती चीजा रो महत्व बतावणो ।

(ङ) आपणै जूना साथी नै याद करणो । ( )

७. 'क्रांति रो पाठ पढणो हुवै तो म्हांरलै पुराणियै गट्टे रै इष्टदेव पीपळ सूं पढणो पड़सी ।' क्रांति रो ओ पाठ किसो है ?

(क) पुराणी चीजां नै जडामूल सूं उपाड़नी ।

(ख) पुराणी पीढी सूं दूसमनी राखणी ।

(ग, नुंवापण खातर पूराणी चीजां री उपेक्षा करणी ।

(घ) पुराणी चीजा नै जुग रै मुताबिक नुंवोपण देणो ।

(ङ) पुराणियै रूप-रंग नै ऊपर सूं बदल देणो ।

८. 'अै सगळी बातां अबै घणी पुराणी पड़गी है ।' अै सगळी बातां किसी है ? १०० सबदां में लिखो ।

९. 'अै नये अर पुराणे रै असली भेद नै कोंनी समझै।' ओ असली भेद कांई है? ३० सवदां में लिखो।

१०. 'थारली आजकल री इण हालत नै देख'र म्हारली माथै में दो-तीन सवाल निरन्तर चक्कर काटे है।' अे दो-तीन सवाल किसा है?

रचना, समालोचना अर अनुभव विस्तार सम्बन्धी :

११. इण पाठ में पीपळ रै गट्टा'रा दो रूप आया है। आप इण रूपां सूं मिनख रै जीवन अर बुढापै री तुलना करो।

१२. 'सांची वात तो आ है के दुनिया री कठोर परिस्थितियां और स्थितियां रै आगै गरीब मनड़ै री वात नै कोई कोनी सुणै।' गरीब मनड़ै री आ वात किसी है? ५० सवदां में लिखो।

१३. 'कमी आयी है तो वा उण लोगा में ही आयी है, जिकां रा दिमाग आज रै पेट्रोल रै धूवैं सूं मटमैला हो चुक्या है। आ कमी कांई हो सकै? ३० सवदां में उत्तर दो।

१४. 'गट्टो चुप हो।' जे गट्टो बोलतो तो कांई केवतो? १०० सवदां में लिखो।

१५. पीपळ रो पेड़ घणो सुभ मानीजै। आप इण रै विषय में और जाणकारी करो।

१४. उडीक

(श्री नृसिंह राजपुरोहित)

(श्री नृसिंह राजपुरोहित रो जनम सं० १९८१ में बाडमेर जिले रै खांडप नामक गांव में हुयो। आपरी सरुआत री शिक्षा गुरुकुल तीखी अर बाडमेर में हुई। आप हिन्दी मे एम. ए. अर बी. एड. री परीक्षावां पास करी। अबार आप उच्च माध्यमिक विद्यालय, खांडप में प्रधानाध्यापक है।

बतळायो–किसनू। पण उणै ध्यान इज नी दियो। वो तो अगूठो चूमतो आंख्यां फाड़ फाड नै मोटर कांनी देखै हो।

म्है फेरू जोर सूं कह्यो भांणू। अबकै उणै म्हारै कांनी देख्यो। मोटी-मोटी-आँख्यां, सफेद-सफेद कोया में नैनी-नैनी कीकियां, गळां माथै आंसूवां रा टैरा सूखोड़ा। छिन भर तो वो देखतो इज रह्यो। पछै एक दम मुळक मे बोल्यो-मांमीसा थे आयग्या। म्हूं तो रोज थारे साम्हां मोटर माथै आरू।'

'जरै इज तो म्हूं थनै मिळण नै आयो हूं भाणू।'

'पण म्हारी बाई कठै मामोसा? भाई सा तो रोज कंवै के अबै उणनै सफाखाना सूं छुट्टी मिल जाएला। अर थारै मामोसा उणने लेयनै आवैला। वो अठी-उठी देखनै विलखो पडग्यो अर म्हनै जबाव देवणो भारी पड़ग्यो। म्हूं अबै उण भोळा कमेड़ा नै काई जबाव देवतो। उणरा विस्वास नै कियां खंडत करतो। जिण उम्मेद री डोर माथै वो जीवै हो उणनै कियां तोड़तो। जिण वरख रै सहारै वो वेरा मे उतरियोड़ो हो, उणनै कियाँ बाढतो। म्है थोड़ी संभळ नै कह्यो—

'बाई हाल मांदी है, भाई, वा सफा ठीक नीं व्है जितरै उणनै सफाखाना सूं छुट्टी मिळै कोनी।' म्है उणनै गोदी मे ऊंचाय लियो।

"कदै छुट्टी मिळैला? थे सेग कूड़ा बोलो हो, म्हनै चिगावो।"

वो आंती आयनै रोवण लागग्यो। म्हूं उणनै छाती रै चेप नै बुचकारण लागग्यो तो हूचकै भरीजग्यो। म्हें नीठ पोटाय-पुटूय नै छांनो राखियो।

'देख थूं तो समझणो है नी भाँणू। बाई कितरा दिन धरै माँदी पडी री, अबै दवा नी करावै तो सावळ कीकर व्है बता? ठीक व्हेतांई म्हूं उण नै लेय नै आवूला। ए देख थारै वास्तै उणै थैली भरनै रमकड़ा भेज्या है अर कंवायो है के इणां में सूं धापू नै एक ई मत दीजे।

अबै जीवतो उणनै थोड़ो थावस बाधो। वो आंख्या पुंछतो बोल्यो—

'म्हनै ई बाई खनै ले चालो नी मामोसा। म्हूं उणनै कोई दुख नी दूला। बाई बिना म्हनै कांई चोखो नी लागै। अठै म्हनै भाईसा लड़ै अर धापूड़ी रांड म्हनै रोज कुटै। बाई तो म्हारै हाथ ई नीं लगावती।'

'थूं नांनी जी खनै चालैला किसन ? वे थारी घणी लाड राखैला अर उठै थनै कोई नी कूटैला।'

म्हारी बात उणनै जची को नी। थोड़ी ताळ वो ठैर नै वो बोल्यो–

'म्हारै तो बाई खनै जावणो है, नांनीजी खनै नी जावणो। पछै म्हारो हाथ पकडनै फेर बोल्यो—

'मॉमोम छोरा म्हनै कैवै के थारी बाई तो मरगी।' मन में एक धक्को सो लाग्यो, तो ई म्है कह्यो—

'सफा कूड़ बोलै नकटा, वे थनै यूं ई चिड़ावै।' घरां आयनै म्है उणनै नीचो आंगणै उतार दियो। पण हे रांम। इण घर री आ हालत। कठै तो वो बुहारियो-झाडियो लीपियो-गूंपियो देवता रमै जिसो कूंपली व्है जिसो घर अर कठै ओ भूत खांनो। ठौड-ठौड कचरा रा ढिगळा, आंगणा रा नीबड़ा हेठै बींटां रा थोकड़ा, ऐठवाड़ा बामण, उघाड़ो पणेरो अर भरणाट करती माखियां। सगळा घर माथै एक अजांणी उदासी, एक अणबोली छिया।

म्हे धापू नै हाको कियो तो वा पडौस रा घर सूं दौड़ी आई। पण सदैई का ज्यूं आयनै पगा मे बाथ नीं घालो। दस बरस री छोरी छः महीनां में इज जाण डोकरी व्हैगी ही। सूखोडो मूंडो, मैला-मैला गाभा, माथो जांणै सूंगणियां रो माळो। म्है माथै हाथ फैरियो तो वा छिबरां-छिबरां रोवण लागी नीठ बोली राखी।

हाथो हाथ घर री सफाई करनै नीबड़ा री छिया मे मांचा माथै बैठ्यो तो मन जांणै कियांई व्हैग्यो। घर रा खूंणा-खूणा सूं बाई री याद जुड़ियोड़ी ही। यूं लाग्यो जांणै वा रसोड़ा में बैठी रसोई बणाय री है अर अबार म्हनै बुलाय लेला। जांणै वा ग्वाड़ी मे बैठी गाय दूह री है अर अबार किसनू नै गिलास लावण री हाको कर देला। जांणै ढ़ालिया में बैठी खरटी फेर री है आ अबार बीरो गावणो सरू कर देला।

म्हनै बीरो सुणण री अर बाई नैं बीरो गावण री कितरो कोड़ हो, जिणरो कोई पार नी। म्हूं आवतो जितरी वार लारै पड़ जावतां—बाई एकर तो बीरो सुणाय दे। अर दा भीणा कंठ सूं सरू कर देवती। आज ई इण

मोटा व्हैग्या तो ई सिनांन करावणी ई नी आवै। बाई तो सब सूं पे'ली म्हारा हाथ-पग भिगोय नै धीरे धीरै मैल करती। पछै मूंडो धोय नै लाड करती अर पछै माथा मार्थे पाणी नाखती ए तो ले पाणी नै घड ड़ ड़ ड़। आ धापूड़ी ई राड रोज यूं इज करै, जरै इज तो म्हूं सिनांन नी करू'।'

म्हनैं दुख में ई हंसणी आयग्यी। म्हे कह्यो ले भाई, बाई करावै ज्यूं इज सिनांन करावूं ला थनैं। पछै तो कांई नी? म्हूं उणरा हाथ-पग भिगोय नै डरतो-डरतो धीरै-धीरै मैल करण लाग्यो। कांई भरोसो रीसां बळतो अबकै लोठो लेयने म्हारा माथा में नीं ठरकाय दे। पण इसी कोई बात नीं व्ही। काम उणरी मरजी रै माफक होवण सूं वो वातां करण लाग्यो—

'बाई तो म्हनै खोळा में बिठाय नै धीरै-धीरै दूध पांवती। गरम व्हैतो तो पे'ली आंगळी घाल नै देख लेवती। फीको व्हैतो तो चाखनै खांड थोड़ोफेर नांखती। अर ए भाई सा तो सांम्ही बैठनै माडांणी पावै। दूध मे घी नांख देवै अर पछै जोर कर-कर नै कैवै—पीई। पीई। पीई। अर आ धपूड़ी राड लारै ही लारै''''पीए क्यूं नी रै। पीए क्यूं नी रै। है इज किसी रांड, डकण व्हे जिसी। रीस तो इसी आवै के रांड रा लटिया तोड़ नै नांख दूं। म्हनैं दूध में तारादे खनै ऊवका आवै। एक दिन तो उल्टी व्हे जाता। पण नां पीऊं तो भाई सा कूटै। मांमीसा बाई आवै जितरै थे अठै-इज रही जो जाईजो मती, हो।'

म्हे उणनै धावस देवतां कह्यो—'अबै थूं खासो मोटो व्हैग्यो है गैला कोई बोबो चूंघतो नैनो टाबर तो है कोयनी। आखो दिन बाई-बाई काई करै?

उणनै फेर रीस आयगी। वो मूंडो चढाय नै बोल्यो—

'नैनो नी तो काई थारै जितरो मोटो हू? बाई तो अबेई म्हनै रोज बोबो चूंघायनै जावै।'

उणरा हाथ घोवतां वखत उणारै चूस-चूस नै आलै कियोड़ै अंगूठै री म्हनै याद आयगी। हरदम मूंडा में राखण सूं अगूठो फोगीज नै धवळो फट्ट

पड़ग्यौ हो। पे'ली तो आ आदत नीं ही उणरी। म्हैं उणनै पूछ्यौ—'बाई थनै किण वखत बीबौ चूंघावण नै आवै रै किसनू ?

किण वखत कांई रोज रात रा आवै। घणी ताळ आंगणा रा नींबडा नीचै ऊभी रैवै। होळै-होळै चालती म्हारै खनै आवै, म्हारो लाड करै अर पछै गोदी में ऊंचाय नै म्हनै बीबौ चूंघावै।'

'नितरोज आवै ?'

'नित रोज।'

'कदैई गळती नी करै ?'

एकर म्हूं भाई सा रै सागै सूती ही। उण रात बाई कोनी आई। नी तो रोज आवै।

म्हे उणनै सिनांन कराय नै कपड़ा पेहराय दिया। बाल ठीक करनै आंख्यां में काजळ घाल्या तो खासी ठीक दीखण लाग्यौ। म्हे कह्यौ-देख भाणू, यूं सफाई सूं रैवणौ, जिणसूं बाई थारौ घणौ लाड राखैला। अर यूं मैलो-कुचैलो धांण व्हे ज्यूं रह्यौ तो वा आवेला ई नीं।'

म्हारी बात उणरै हीये ढकगी। घांटकी हिलावती बोल्यौ—'अबै रोज सिनान करूंला-कपड़ा ई नवा पेहरूंला।'

(४)

धीरै-धीरै दिन ढलग्यौ। आंगणा रौ तावड़ो रसोई रा नेवां माथै पूगग्यौ, नींबड़ा माथै पखेरू किचकिचाट करण लागा, ग्वाडी में ऊभी टोगड़ी तो बाड़ण लागी अर जीजाजी रे घ रै आवण री वेळा व्हैगी।

बाई रामचरण हुयां पछै बांरी कांई हालत ही, म्हे सगला समाचार सुण लिया हा। जे इण टाबरियां रो बधण नीं व्हैतो तो वे कदेई औ घरबार छोड़नै नाठ गया व्हैता। पण आ एक इसी वेड़ी ही जो काटिया नी कटती ही। इण वास्ते नीं चावतां थकांई बानै दुकान माथै बैठणी पड़ती अर दोन्यूं बखत काया नै पण भाड़ौ देवणी पड़तौ।

टगू-मगू दिन रह्यां वे घरां आया अर म्हनै मिळनै काम मे लागग्या। दिन आथमियां गाय दूह नै धापू रै हाथ रां काचां पाका टुकड़ा खाया पछै

वाता होवण लागी। वार्ट री चरणा आवतां ई वांरी आंख्यां जळ जळी व्हैगी से बोल्या—'म्हारी चिंता नै म्हूं सहन कर सकूं हूं, पण इण टाबरियां रा दुख नै सहन करणो म्हारै हिम्मत रै आगै री बात है। धापू नै तो फेर किंयाई थावस देय सकां, उणरा दुखनै थोड़ो हळको ई कर सकां। पण इण पमुड़ा नै किया समझावां, इणनै काई कैयनै धीरज बंधावां? इणरै दुख री तो नी दिन रा पांतरो पड़ै अर नी रात रा जिण विश्वास री डोर माथै ओ जीवै है वा जे आज टूट जावै तो इणारो जीवणो कठण है, आ पक्की बात है। जिण दिन सूं म्हूं इणरा भा नै सांधै चढ़ायनै पुगाय नै आयो हूं, उण दिन सूं ल ाय नै आज दिन तांई ओ नितरोज मोटर माथै आवै अर उणरै आवण री वाट उडीकै। मोटर पांच-दस मिनट लेट भलांई व्हो पण इणरै जावण में जेज नी व्है।'

बोलतां-बोलतां फेर वांरो गळोन भरीजग्यो अर म्हारी आंख्या पण जळजळी व्हैगी।

(५)

रामगढ़ म्हूं पूरा सात दिन ठहरियो अर आठमै दिन रात री मोटर सूं रवानै व्हियो तो किसनू उण वखत गहरी नींद मे सूतो हो। म्हूं उणनै जगावण री विचार कियो तो दिमाग में एक झटको सो लाग्यो। कुण जाणै बाई नीबड़ा रै नीचै ऊभी व्हैला के गोदी मे ऊंचाय नै उणनै चूंघावणो सरु कर दियो व्हैला। सो सूतोड़ा रै इज एक हल्कोसीक वाल्हो देय'र म्हूं रवानै व्हैग्यो।

अभ्यास रा प्रश्न

भाषा सम्बन्धी :

१. नीचे दियोड़ा सबद हिन्दी, राजस्थानी, उर्दू अर अंग्रेजी भाषा रा है। आप इणां नै छांटर सम्बन्धित भाषा वर्ग मे लिखो—
रमकड़ा, मोटर, हूंस, फगत, वेग, हरदम, थावस, वेड़ी, मायड़, नींद, स्टार्ट, आदत, लवारियो, जबाव, घी।

(i) हिन्दी— (ii) अंग्रेजी—
(iii) राजस्थानी— (iv) उर्दू—

२. नीचे दियोड़ा सबद युगमां रो अरथ भेद वाक्य प्रयोग सूं स्पष्ट करो।
(i वरत। व्रत। (ii) ठांण। स्थान।
(iii) बेरी। बहरी। (iv) कोड। करोड।
(v) झेर। जैर। (vi) वासण। वसण।
(vii) काळ। काल।

३. नीचे एक सी ध्वनि आळा सबद-युगम दियोड़ा है जै मिळता-छुळता अरथ बतावै। आप अैड़ा दो नुंवा सबद-युगम और बणावो-लोग-बाग, फाटा-तूटा, भोळा-ढाळा, मैला-कुचैला, टगू-मगू।

४. नीचै दियोड़ा मुहावरां नै आपणां वाक्यां में इण भांत प्रयोग करो के इणां रा अरथ स्पष्ट हुई जावै—
चिलम भरै जितरी जेज लागणी, दड़ीछंट न्हाटणो,
देवता रमै जिसी ठौड़, हुवणी, छिबरां-छिबरां रोवणी,
काया नै भाड़ो देवणो, खांधे चढाय पुगावणी।

५ नीचे दो वाक्य दियोड़ा है। इणां मे 'वीरो' सबद दो भिन्न अरथां में प्रयुक्त हुयो है। आप अै दो अरथ बतावो—
(i) उणरो वीरो आयग्यो है।
(ii) सोच्यो थूं रोज वीरो गवावै।

विषय-वस्तु सम्बन्धी :

६. 'पण आज री हालत गफा उल्टी ही' इणरो कारण हो—
(क) मामोसा री तबियत खराब हुयगी।
(ख) वांरे मन री हूंस खतम हुयगी।
(ग) वाई मांदी ही।
(घ) वाई री मौत सूं मन उदास हो।
(ङ) रामगढ़ जावणो अबखो काम हो। ( )

७ 'अबै जावतो उणनै थोड़ो पावस बाधो' किसनू रै पावस बाधण रो कारण हो'—

(क) उणरै मामोसा आयगा हा।

(ख) बाई री तबियत ठीक हुयगी।

(ग) बाई रै घरां आवण री आसा बंधगी।

(घ) उणन धैर्ती भरिया रमकड़ा मिलिया।

(ङ) मामोसा उणरो घणो लाड़ कियो। ( )

८ 'जद किसनू नै बाई रा कपड़ा ओढण-बिछावण नै मिल जावता तद हीज उणनै ऊंघ आवती।' इण रो कांई करण हो?

(क) उणरी आदत पडगी ही।

(ख) इण कपड़ां मे बाई रै परसेवारी बास आवती।

(ग) अै कपड़ा उणनै आछा लागता।

(घ) अै कपड़ा ओढण-बिछावण सूं उण रै जीव नै नेहचो रेवतो।

(ङ) इणा सूं रात सोरी कटती। ( )

९. 'कद छुट्टी मिळैला? थे सेग कूड़ा बोलो हो म्हनै चिगावो।' किसनू रै इण कथन सूं उण रै मन री किसी भावना प्रगट व्है?—

(क) रीस (ख) खीझ

(ग) ग्लानि (घ) निरासा

(ङ) घ्रिणा ( )

१०. जिण उम्मेद री डोर माथै वो जीवै हो, उणनै कियां तोडतो?' वा किसी डोर ही जिणनै किसनू रै मामोसा नी तोड़णी चावता?

११. 'दस वरस री छोरी छः महीना मे इज जाणै डोकरी व्हैगी ही।' थापू री आ हालत किया हुई? ५० सबदां मे लिखो।

१२. किसनू अर गाय रा लवारिया मे कांई समानता ही?

१३. किसनू नै सुपना में बाई किण भांत आवती दीसती?

१४. 'भीड़ सूं बारै निकळयो तो छेड़ा माथै ऊभा एक टाबर माथै निजर पड़ी।' ई टाबर रो रेखाचित्र ५० सबदां मे माडो।

१५, मां रै बिना घर री कांई हालत व्है ? ४० सबदं मे लिखो।

रचना समालोचना अर अनुभव विस्तार सम्बन्धी :

१६. 'थूं नानीजी खनै चालैला किसनू ? वे थारो घणो लाड राखैला अर उठै थनै कोई नी कूटैला।' किसनू नै आ बात कोनी जची। इण रो कांई कारण हुई सकै ? ५० सबदां में उत्तर दो।

१७. 'म्हे माथै हाथ फेरियो तो वा छिवरां-छिबरां रोवण लागी। नीठ बोली राखी।' जे धापू बोलती तो कांई, बोलती ? १०० सबदां में लिखो।

१८. किसनू री बाई जीवतां थकां अर उणरै मरियां पछै किसनू रै जीवण में कोई फरक आयो ? उदाहरण देय'र बतावो।

१९. 'उडीक' कहाणी में छोटी-छोटी घटनावां रै माध्यम सूं अेक बिना मां रा टाबर री मन:स्थिति रो वरणन करण मे लेखक नै पूरी सफलता मिली है। आप इण कथन सूं कठातांई सहमत हो ? सकारण उत्तर दो।

२०. वीरो' लोकगीत किण मौका माथै गाइजै ?
आपरी तरफ जो गीत गाइजै उणनै नोट करो।

२१. इण कहाणी मे आयोड़ी घटनावां रै आधार सूं १०० सबदां में ग्रामीण जीवण री एक तसवीर खींचो।

१५. राजस्थान री लोककळावां

(डा० महेन्द्र भानावत)

(डा० महेन्द्र भानावत रो जनम सं० १९९४ में उदयपुर जिलै रै कानोड़ गांव मे हुयो। जद आप टाबर हा, आपरा पिता श्री परतापमलजी सुरगवासी हुयग्या। आपरी माताजी श्रीमती डेलूबाई घणी हिम्मत राख आपरो लालन-पाळण कर आपनै पढ़ाया-लिखाया। आपरी सरुआत री शिक्षा जवाहर

विद्यापीठ कानोड़ अर जैन गुरुकुल छोटीसादड़ी मे हुई। पछै आप बीकानेर सेठिया जैन छात्रावास मे रैय'र बी. ए. कियो अर बाद में नौकरी करता थका महाराणा भूपाल कालेज उदयपुर सूं एम. ए. (हिन्दी) अर उदयपुर विश्व-विद्यालय सूं 'राजस्थानी लोकनाट्य परम्परा मे मेवाड़ रो गवरी नाट्य अर उण रो साहित्य' विषय पर पी-एच. डी. री उपाधि हासिल करी। अबार आप भारतीय लोककला मण्डल, उदयपुर मे उप निदेशक है।

डा० महेन्द्र लोकसाहित्य अर लोककळावां रा मानीजता विद्वान अर गवेषक है। सरु मे आपनै लिखण री प्रेरणा आपरा बडा भाई डा० नरेन्द्र भानावत सूं मिली। अबार ताई देस री पत्र-पत्रिकावां मे आपरा ३०० सूं ऊपर लेख छप्योडा है। क्षेत्रीय अनुसन्धान अर सम्पादन में आपरी विशेष रुचि है। आप मासिक पत्रिका 'रंगायन' अर छहमाही शोधपत्रिका 'लोककळा' रा सम्पादक है।

डा० भानावत री कई पोथियां प्रकाशित हुई है, जिणां मे प्रमुख है— लोकनाट्य परम्परा और प्रवृत्तियां, लोकरंग लोकनाट्य, गवरी, देवनारायण रो भारत: लोकदेवता तेजाजी, मेवाड के रसधारी, ताखा अंत्राव रो भारत, राजस्थान के तुर्राकलंगी, रामदळा की पड, कालागोरा रो भारत, राजस्थान के रावळ, राजस्थान के भवाई, लोककला: मूल्य और सन्दर्भ, मेंहदी रग राची, राजस्थान की रम्मतें, ब्रजराज काव्य माधुरी, राजस्थान स्वर-लहरी आदि।

संकळित निबन्ध राजस्थान री लोककळावां री आछी ओळखाण करावै। लोककळावां री द्रिस्टि सूं राजस्थान केई माने मे दुजा प्रान्तां सूं आगै है। अठा री देवल मूरतियां, पडां अर कावड़ां तो बिदेसां मे भी जबरो नाम कमायो। अठारी सांझीकळा आपणो न्यारो ही कलात्मक सरूप राखै। वार तेवारां साथे तो ढौंडाढोरां तक अठै कलामय जीवण जीवै। अठा रो गरीब सूं गरीब आदमी भी आपणां घर-आँगणां नै कोर्यां-सणागार्यां बिना नी रैवै। इण कळा रै क्षेत्र में अमीर-गरीब रो कोई भेद नीं है। आ कळा कठेई भेद-रेखा नी डालै। आ अंतस सूं अंतस जोडे, हिवड़ा खोलै। इण

कळावां रै पाछै सुभाग, आस्था अर रिद्धिसिद्धि रा जबरदस्त भाव जम्योड़ा है। इण खातर हरेक आपणी-आपणी मते सूं इणां नै पूजे, सरावै अर सम्मान देवे।)

राजस्थान री लोककळावाँ

(१)

सूरां अर संतां रे देस रे रूप में राजस्थान घणो नामी अर जोवो कही जै। पण लोगां नै आ ठा कोनी के लोककळावाँ री द्रिस्टि सूं भी ओ उत्तोईज रँगीलो रूड़ो, लूमंझूमो अर रिदसिद रो रंगरेज है। इ लोककळावाँ उत्ती ही पुराणी है जित्ती पुराणी मनक री सुभ्यता। वणाई पुराणा जमानाऊं मनक आपणे हिरदाँ रो उमावाँ ने रग अर रेगऊं कोर नै तरै-तरै रा मतिमंतावण अर रूपरूपावण देवतो रियो। टावराँ रा टपरा-घरोंदाऊ लेर वड़ावूड़ा रा घर-कोठा तक मे लोककळावाँ रा लाला-मोती देख्या जा सकै। वणा लोककळावाँ रो विरगीकरण इण भाँत सूं कियो जा सकै—

(१) वास्तुकळा (२) चितरकळा (३) मूरतिकळा (४) माँडणा (५) थापा (६) पड़ कळा (७) गूदणा (८) मेंदी (९) कास्ठकळा (१०) विविध कळावां।

वास्तुकळा :

राजस्थानी लोकजीवन मे लोकदेवता रो मानमनोती अर आस्था घणी जबरी है। इण वास्तै अणा रा देवरा-मन्दिर भी केई तरै री कारीगरीऊं वणाया जावै। वेंतरा छाजा, अगर री लकड़ी रा चौगटा अर चन्दण रा कंवाण अर वाँरी वणघट ने कारीगरी असी करी जावै के जीरो कोई मोलनी आँक्यो जा सकै। देवळमिन्दरई क्यूं आपणे रेवासाळा ववला भी घणाई कलात्मक ढंगऊं वणाया जावै। लाँबा-लाँबा बाँसड़ा ने चीरने वेंत रा चिकणा अर पातला भागऊं अणा ने वाँध्या जावे ने पान अर आम रा मानाऊं वडो छप्पर छवायो जावै। मोटा लोग बजर कंवाड़ा री मेड्याँ वणवावै अर लकड़ी रा केई तरेरा बारीक काम रा गोखड़ा मेवाड़ै। मेवाड़ी ख्यालाँ में भी राणीजी साऊं बाँस-बल्यां रो वंगलो त्यार कर्‌यो जावै जणीमूं टेरा देवताँ थका

राणी री नींगे उतरै । दुरजनांरी ख्याता मे अट्टालीनुमो आलीसान मंच बणायो जावै । मन मायं बीस-बीस फुट तांई ऊंची अट्टालिका बांधे ज्यांने रंगबिरंगी फरियां, घेर किनार्‌यां, फूलपानां अर कपड़ारा लाऊं सणगारी जावै । अणा अट्टालिका नै झरोखा अथवा म्हैल भी केवं । राणी पात्र अणी अट्टालिकाऊं नीचे उतरै । कणी-कणी खेल मे जद दो राण्या हुवै तो दो अट्टालिकावां बणाई जावै ।

चितरकळा :

चितरकळा मे गामतोरऊं भीता परला चितरां रो घणों महत्व है । अणां चितरां मे तोरण-सब ऊं वत्ता चितराम ब्यावसाद्‌या पर मडाया जावै । अणां चितरां मे तोरण-दुवार हाथी, घोडा ऊंट, छडीदार अर चवर ढोलती ने आरती करती लुगाया, घर मे भीतां पर लिछमीजी, गणेसजी, पतग उड़ावतो थको छोरो, भोजाई रे डावा पग रो कांटो काढ़तो थको देवर, घट्टी फेरतो थको ब्याई ने मूमलो चलादती ब्याण, मुगदर घुमावतो पेलवान, पाणी में नावती गोप्यां ने बणा रा गाबा चुरावण्या बांसरी बजावता किसनजी जस्या चितरां रो जाणे मेरो उमड़ पड़ै । इ चितर पांडऊ पूती दीवाला पर नारेळ री काचल्यां या गारा रा सरवाल्या मे भांत-भांत रा रंग त्यार कर बजूर री डाली री कूंचीऊं कोर्‌या जावै । रंगा में रचका ने पीस ने लीलो, हलद मे लीवू नाक ने रातो, डाडम रे छोतरा ने उकाळी ने पीलो, हीगकसी ने काजरऊं कालो, थापड़या थोर रे डोडाऊं गलाबी चूनाऊं घोळो केवला रे फूलाऊं केसर्‌यो ने फटकड़ी मे डाड़म रा छोतरा भेलाई ने मूंग्या रंग त्यार कर्‌यो जावै । ई रंग इस्या पक्का अर गेहरा व्हैं के कई वरसा तक न तो दीवालाऊं उतरे न फीका पड़ै । अबै तो कई रंग अर कई बरुस सब वणावणाया रेडीमेड मिलजावै अणीवास्त चितरा नै किणी वात री माथाफोड़ी नी करणी पड़े ।

मूरतिकळा :

लोककळाकार मूरतिया बणावां में भी बड़ी चतर व्है । लकड़ी, पत्थर, माटी अर धातुवां री केई तरै री देवीदेवता अर दूजा जीवां री मूरतियां ने खेल खिलोना घणाई मन लुभावणा लागै । अणा में माटी री मूरतियां री

ळा घणो सरावण जोग है । कालागोराऊं लगायर तारवाजी, धरमराज, ललांफूला, आमजमाता, रेवारीदेव, नारसिंघी, खाकल, सांडमाता, खेतरपाल, पंपळाज, कूकडामाता नै कालका मातारी हिंगाणां गामं-गामां रे देवरा-देवरा मे थरप्योड़ी जावै। केई लोग अणां देवदेव्यां रा नावां वणार आपणा गला में भी बांवे ।

मांडणा :

आंगणा पर बिका चितराम मांड्या जावै वी मांडणां कही जै। मांडणां मांढवा पेली आंगणां नै गोवर-पीलीऊ लींपी चूपीने सावसूप वणायलें पछै अधा सूख्या अर आवा आला आंगणा पर लुगायां रूई रा फोया ने पांडू रे पाणी में घोल ने आपणी देवलपूजणी आंगलीऊं मूंडे वोलता मांडणां मांडे । कोई वारतेवार वो, मांडणा तो अवस कर ने मंडी जेगाई । विगर मांडणा आंगणो भूंडो लागै अर खावा नै दौड़े ।

अणां मांडणां में दीवाळी म थै सोला दीवा, चोक, वीजणी, पान, डाबा, पगल्या, फूल, हीड़, तारवड़ी, सांठा, पावड़ी, सात्या, रथ, जलेवी, मुरकी ने गायां रा खुर; होळी पर चग, खाडा, घेवर, ढलकी ने कंवळ रो फूल, तीज्यांगणगोर्‍यां पर चौपड़, गौर री वेसर ने गुणां, मांडासादी पर सीतला-माता, गलीचा ने फुलड्‍या अर व्याव पछै पेनीपोर लाड़ी जद आपणे पीयरऊं सासरै आवै तो वी दन भी सुभ सकुन रा चोक, फूल, सात्या अर अणां रे आजुबाजु नाना-नाना दीवा, कुलड्यां, झाड़, वाटका, चोड़ा-चरकला ने जलेव्यां माडी जावै। केवत में केवेऊ कंवलऊं ज्यूं पाणी री, फूलऊं ज्यूं धरणी री अर वरातयाऊं ज्यूं व्याव री सोभा व्हे ज्यूंई मांडणाऊ घर आंगण री सोभा अर सुवाग गिण्यो जावै ।

थापा :

हाथ री आंगल्यां रो थापो देईने दीवाला ऊपरे जो चितर कोर्‍या जावें वणाने थापा कैवे । ए थापा कंकू, काजर, हरद, हिन्दूर, गेरू अर ऐपणऊं वणाया जावै । लुगायां अणां थापा ने कोरने आपणा वरत पूरा करै । करवा-

चौथ, चूरमा चौथ, राखी, नागपांचम, सीतला सातम, होई आठम, दीयाडी नम, गणगोर ने दसामाता पर तरै-तरै रा थापा कोरने वरत कथावां कहीजै।

सरादां रे पूरे पखवाड़े छोर्यां आपणा बारणां माथै री दीवार पर हड़मची ने गारी अर गोबर ऊं नवहमेस नुवी-नुवी संज्या कोरे अर वने कनेर, कोलो, हजारी ने छोर्यां गलरै फूलांऊं सिणगारै। एकमऊं एकतानाऊं सरू वेइने इ संज्या चमगताई पाव पछेटा चांद सूरज बांदरवाळ, चौपड़, बीजणी, तिबारी, जनेऊ, निसरणी, बाटका, खजूर, मोर, छाबड़ी ने पंखी रे भात री संज्या मांडै। ग्यारस ने संज्या रो मोटो कोट मालयो जावै जींमे संज्या री बरात अर नीचे जाड़ी जोधा, पातली पेमा, गुजराणी, ढोली, मंगी अर ऊंदेमाथे लटकतोधको खापर्यो चोर मांड्यो जावै।

पड़कळा :

कपड़ा ऊपर चितराम मांडवारी अठारी कळा भी जग जाहीर है। लोक-जीवण मे जे सूरवीर आपणा नेकी रे कामऊं देवल रे रूप में जरपीजग्या वणारी जीवणलीला कापड़ा माथै मांडीजावै। अणा देवां में पाबूजी, देवनारायणजी, रामदेवजी ने राम, क्रिस्ण मुख्य है। कपड़ा रा इज चितराम पड़चितर कहीजै। साहपुरा-भीलवाड़ा रा जोसी लोग ई पड़ा वणावै अर अणां पड़ा रा भोपा गामां गामां गीत गाथा अर नाचरी संगतऊं रात-रात भर जगेरो करने अणामें कोरयां मुजब एक-एक चितर रो उलथावणो करै। लोगां नै विस्वास है के पड़ वंचायां पछै कोई भी पिराणी माद मोत रो सिकार नी हुवै। इ पड़ा पचास-पचास हाथ तांई लांबी व्है। कापड़ा पर पछवायां कोरवा रो भी अठै जोरदार काम है। इ पछवायां वैस्णव मिंदरा मे भगवान री मूरत पिछाड़ी लगाई जावै। पछवायां वणावां मे नाथद्वार रा कारीगरां री कोई होड़ नी कर सकै।

गूंदड़ा-मेंदी :

सरीर ऊपरला मांडणां में गूदणां अर मेंदी मांडणां खासमखास है। आदमी रे मर्यां पाछैवीरै सागै कोई धनसंपदा नी जावै। अस्यो विसवास है क गूदणां अर मेंदी होज वीरे सागै जावै। ओ हीजकारण है के हर आदिवासी लुगाई आपणा सरीर पर तरै-तरै रा गूंदणां गूदावणो आपणो पेलो धन-धरम समझै।

गूंदणां अर मेंदी दोई सुवाग रा चिन्ह है चावैं कोई वार-तेवार अर मंगल ओछव वो लुगायां मेदी रा हाथ अवस रचावैं। मेदीरा गीत भी केई अर भांतां भी केई भांत-भांत री मेंदी अर भांत-भांत रा गीत। 'चावे गरीब घराणा री वो चावैं अमीर घराणां री, मेदी सबरेई हिवडा री हांसज कहीजे। मेंदी हाथां री कलाई ऊं लेर पगां री पीड़ियां तक देवण रो रिवाज है। अणी री भांतां में मोरकलस, छैलभंवर री भांत, चोकडी विछुडा, चांदतारा चरतीमरती खेल, सकरपारा रा बूंटा; जवारा, चोपड़, चटाई, सोपारी, ओछाड़, गुणा, फोण्याफूल; चूंदड़ी. केरी रो झाड़, भमरो, घेवर चंग, कुंभकलस, रुपयाभांत, वाजोट, तारा, पतासा, वीजणी ने मेदी रो झाड़ सबाऊं ज्यादा सरायो अर माड्यो जावैं।

कास्ठकळा :

लकडी री वणी चीजां परली कारीगरी भी देखतांई बणै। भांत-भांत री पुतल्यां ऊं लेइने गणगौर ईसर तोरण, बाजोट, कावड़, हिंगलाट, ढोल्या, लांगुर्या देवीदेवता, चौपडा खांड़ा, देवदास्यां, वेवाण, मुखोटा, जंतरबाजा, कठपुतल्यां ने गीगलां रा गाड़ी घोड़ा कोर्या चितराया अस्या लागै जांणै अणा नै वणावा वाळो तो कोई भगवान री दरगा रोइज आदमी व्है सकै।

विविध कळावां :

सोळी माथै छोर्या होळी माता रे खातर गोवर रा वडुल्या अर चूड़ी, रखडी, नेवर्यां, टणका, तमण्या, हथपान, सिघाड़ा, कापड़ा, सोपारी, कांगसी, जीभ ने नारेल रे रूप में गेणला वणा न अणांरी माळा कर होळी नै पैरावैं अर गीत गोठां करै। सकरांत ने भी तरै-तरै रा सकरांतड़ा वणाया जावैं। लुगायाँ गोवर लेर आपणी चुड्यां वीट्यां रा निसांणा पाडैं, दोई हाथां री मुठियां मेली कर गाय, वलद अर छांरां रा खुर मांडे, अंगोठाऊं सात्या, पान नै वारीक-वारीक घापा वणावै अर अणां सबनै पूज्यांपतायाँ पछैई घरलछम्यां आपणो वरत खोले। रग्याथका चाँदलां रा भी मिंदरां मे तरै-तरै रा चोक पूर्या जावै। केई जात्यां में मनक रे मर्यां पछै संखाढाल मे चाँवलां रो वैकुंठ, रामादे रा पगल्या, कालागोरा भैरू, रूपादे, तोळादे सुगना, डाली, हडुमान, अंबाव, तरसुळ ने वासग वणाया जावैं।

दन भर काम करयां पछै रात ने सुवाने खाट रो आसरो लेणो पड़ै । पण आ वात कदी सोची के खाट री वुणावट भी एक ऊंची कळा है । मेंदी अर माडणां री तरैऊं खाट भी लेरिया, चोपड़, डाबा, पुतळी, चौकड़ी, जसी भातां मे वुणी जावै । एक भात वेवजो तो अतरी बारीक व्है के अणी पर जवार रा दाणा बखेर दो तोई एक दाणो नीचे नी पड सकै । केई बड़ावूड़ा री जबान सूं या वात भी सुणवाने मिलै के एक सांप री आकरती री वुणाई भी व्है । असी वुणाई री खाट पर कदई साप नी चड । मिठाया मे भी लोककळावां रा केई रूप देख्या जा सकै ।

लोकक्ळावां रो यो पसार तरै-तरे री धातुवां अर हाथीदांत री वणी चीजा, रंगाई, छपाई, सिलाई, सलमासितारा, गोटाकिनारी आदि सैकड़ा रूपां मे देखावाने मिलै । अणा कलावां रे पिछाड़ी आपणी संस्कृति रो लम्बो इतिहास जुड्यो है । परवार, समाज अर देस रा सगळा धरम करम, रेणसेण, खानपाण, रागरग अर जीवण रा केई आदर्श अणा कळावां मे घणी चतराई अर बारीकी सूं कोरीजग्या है । ई कळावा देस री भावनात्मक एकता अर सुख-समरिध री सांची साख देवे है ।

अभ्यास रा प्रश्न

भाषा सम्बन्धी :

१. नीचे दियोड़ा सबदा रो अरथ स्पष्ट करो–
   हिगाणां, नावां देवळपूजणी आंगली, माडणा थापा ।
२. नीचे दियोड़ा वाक्या री खाली जगा पाठ में आयोड़ा उपयुक्त सबदां सूं भरो–
   कवाळऊं ज्यू ....री, फूलऊं ज्यूं ....री अर बरातमाऊं ज्यूं ....री सोभा व्है ज्यूं ई ....घर आगण री सोभा अर सुवाग गिण्यो जावै ।
३. इणा रा तत्सम रूप लिखो–
   सातया, सुवाग, सराद, सज्या, घरलछमी, हिन्दूर ।

४. नीचे दियोड़ा वाक्यां मे रेखांकित सबदां रो आशय स्पष्ट करो–
   (i) आपणी देवळपूजणी आंगळीऊं मूंडे बोलता मांडणा मांडै।
   (ii) बिगर मांडणा आंगणो खावा नै दौड़ै ।

विषय वस्तु सम्बन्धी :

५. राजस्थान नै रंगरेज केवण सूं इण प्रदेस री काई विशेषता प्रकट व्है ?
   (क) सूरां अर संतां रो देस ।
   (ख) पदमणी स्त्रियां रो देस ।
   (ग) रंगरेजां री वस्ती रो देस ।
   (घ) रंगरंगीली माटी रो देस ।
   (ङ) भांत-भांत री लोककळावां रो देस । ( )

६. 'जे सूरवीर आपणा नेकी रै कामऊं धुवळ रे रूप में थरपीजग्या वणारी जीवणलीला कपड़ा माथै मांडी जावै ।' इण कळा नै काँई कैवै ?
   [क] पड़ । [ख] थापा ।
   [ग] मांडणा । [घ] गूदणा ।
   [ङ.] संज्या । ( )

७, 'दोई सुवाग रा चिन्न है' । अे दो चिन्न किसा है ?
   [क] मदी अर थापा ।
   [ख] थापा अर मांडणा ।
   [ग] मांडणा अर पड़ ।
   [घ] पड़ अर गूदणा ।
   [ङ.] गूदणा अर मैंदी । ( )

८. नीचे दियोड़ा अधूरा वाक्यां में दाई ओर दियोड़ा रंगा री फेरिस्त मांय सूं यथोचित रंग छांट'र लिखो–
   [क] रचका नै पौस नै···· १. रातो
   [ख] हलद में लीबू नाक नै···· २. पीळो
   [ग] डाड़म रै छोंतरा नै उंकाळी नै···· ३. लीलो

(घ) फटाकड़ी में नाहम र खोनगा भेळाई नै····   ४ कालो

(ङ) हीराकमी नै क जरऊ····   ५. मूंग्यो

९. 'अणां कळावां रै पिछलो लाम्बो इतिहास जुड़्यो है।' ओ इतिहास किण रो है ?

(क) देवदेवां रो।

(ख) कारीगरां रो।

(ग) आदिवासियां रो।

(घ) सुभ्यता रै विकास रो।

(ङ) धरम अर संस्कृति रो।   (   )

१०. मांडणा मांडवा पेळी लुगाया नै काई त्य री करणी पड़ै ?

११. दीवाली, होळी अर गणगोर पर किण-किण भांत रा मांडणा मांडण रो रिवाज है ?

१२. संज्या कद अर किण भात कोरी जावै ?

१३. पड नै कुण वांचै ? पड-वाचण री विधि रो वरणन करो।

१४. 'केई लोग अणा देवदेवां रा नावा बणार आपणा गला मे भी बांधे।' नावां गला मे क्यू बाध्या जावै ?

१५. थापा कद अर किण भांत वणाया जावै ?

१६. हर आदिवासी लुगाई आपणा सरीर पर तरै-तरै रा गूदणा गूदावणो आपणो पेलो धन-धरम क्यूं समझै ?

रचना, समालोचना अर अनुभव-विस्तार सम्बन्धी :

१७. इण पाठ रै चितरकला अंश नै पढर तोरणदुवारे अर घर री भींता पर माडीजणा चित्रां री अलग-अलग फेरिस्त वणावो।

१८. पण पाठ में केई लोकदेवता अर लोकदेवियां रा नाम आया है। आप उणांनै छांट'र दोन्यू री अलग-अलग सूची वणावो अर मालम करो के अै लोकजीवण सूं किण भांत जुड्योडा है।

१९. तुर्राकलगी खाल रै विषय मे जाणकारी प्राप्त करो।

२०. 'देस री भावनात्मक एकता अर लोककळा' विषय पर १०० सबदां में एक लेख लिखो।

२१. भारतीय लोककळा मण्डल, उदयपुर में लोककळावां रो अछो संग्रह है। जे आपने उदयपुर जावण रो औसर मिले, इण संग्रहाळय नै जरूर देखो।

१६. लखया दोय नै लाऊं च्यार

(श्री विजयदान देथा)

(श्री विजयदान देथा रो जनम सं० १६८३ मे बिलाड़ा तहसील रै बोरुंदा गांव में हुयो। आप रा दादा श्री जुगतीदान जी अर पिता श्री सबळदान जी राजस्थानी रा आछा कवि हा। आप री सरुआत री पढ़ाई जैतारण नै बाडमेर मे तथा ऊंची शिक्षा जसवंत कालेज, जोधपुर में हुई। अबार आप रूपायन संस्थान, बोरुंदा सूं जुड़ियोड़ा है।

विद्यार्थी-काल सूं ही श्री देथा जी राजस्थानी लोक साहित्य अर लोक संस्कृति रा गंभीर विद्वान अर व्याख्याता है। 'बातां री फुलवाड़ी' रे नाम सूं आपरी राजस्थानी लोककथावां रा कई भाग प्रकाशित हुया है। 'साहित्य और समाज' आपरै साहित्यिक निबन्धां रो संग्रह है। तीडो राव नाम सूं आपरो एक लोक उपन्यास भी छप्यो है। इण उपन्यास में जन मानस री रूढ़िवादिता, धरम रै प्रति अंधसरदा अर अफवाहां रै प्रति सहज विसवास पर करारो व्यंग्य है। श्री देथा जी रो गद्य प्रौढ़ भाषा मुहावरेदार अर शैली रोचक है। राजस्थानी रै ग्रामीण जीवण अर संस्कृति रै अध्ययन मे आपरी कथावां घणी सहायक है।

संकळित लोककथा 'बातां री फुलवाड़ी' सूं लियोड़ी है। इण कथा में काणियै काचर अर उण रै साथियां—आंधी, बासती, मेह अर कोपरिया

नै मालम वणा'र लेखक रा नाम लिख दी है के मगरम अर महावरिया में घणी ताकत है।)

लेगया दोय नै लाऊं च्यार

(१)

अेक हो काणो काचर। वो गाव री मोतबर आसामी हो। उणरै गायावळदा री अेक मोटी ठाण ही। घणा ई गाडी-बळद हा। उणांरै गवाड़ आगै भूरी खोटिया दूजती सांनीगी गया तोफावती। मोटी गवाड़ी ही, मोटो ई उणरो चित्त हो। लोगां रै अड़ियो-भिड़ियो काम घणो ई आवतो। सगळा गांगळा मे बिना ब्याज म धो राम बिजारियोड़ो हो। काणै काचर री गवाड़ी में जको ई आयो उणनै वो हाथ सूं ई उतर दियो, मूंडै सूं उत्तर नी दियो। कदै ई किणी नै किणी चीज सारू को नटयो नी। काणै काचर री चौताळा मे धूंसो बाजतो हो। उणरी गवाड़ी मुलका चावी ही।

(२)

अेक दिन वौ आपरी गाडी जोतनै गावतरै जावतो हो। मारग मे जावतां जीमणै बळद पोटो करियो। काणो काचर हेटै उतरयो। मना-जोग अेक दिसावर रो नांमी ठग उणीज मारग मारग आवतो हो-सूना गाडी-बळद देखनै वो नी तो सोची नी कोई विचारी। बळदा री रास फणकारी अर उठा सूं वतूलियो व्है ज्यूं उडग्यो। काणै काचर रा नागोरी बळद हा, रास खांचतां ई उडण गाणी रै ज्यूं उडता ई निगै आया।

जिण पोटा हेटै कांणो काचर दवियो हो उणरी थेपड़ी थेप जगी। थेपडी सूखनै खणक व्ही वाळण सारू उणरा चार टुकडा करिया जद काणो काचर पाछो वारै निकळियो। निकळता ई अठी-उठी जोयो पण आपरा गाडी-बळद व्है तौ निगै आवै। उडिगी-उडियो उठा सूं सागी ठौड आयो-पण गाडी-बळद कठै। पाछो आपरी गवाड़ी आयनै नवा गाडी-बळद जोतिया। ठगां री गाडी रै चीलै-चीलै आपरौ गाडौ खड़ियौ। आगै जावतां मारग में उणनै आत्री धकी। वा पूछ्यौ–कांणिया काचर सिघ जावै रे।

काणियौ काचर पाछौ पडूत्तर दियौ :

जाऊं हूं धौळां री वार
लेग्या दोय नै लाऊं च्यार ।

जद आंधी बोली— कांणिया काचर म्हैं ई थारै सागै चालूं रे । काणियौ काचर मुळकतौ थको बोल्यौ--चाल म्हारी बाई, अेक सूं दोय सदा ई भला । वो आंधी नै आपरा गाडा माथै बैठांण ली । आगै जावतां वांनै सांमी मेहू धकियौ । वो उणनै पूछ्यौ--कांणिया काचर सिध जावै रे । कांणियौ काचर पाछौ पडूत्तर दियौ :

जाऊं हूं धौळां री वार,
लेग्या दोय नै लाऊं च्यार ।

जद मेहू बोल्यौ--कांणिया काचर म्हैं ई थारै सागै चालूं रे । कांणियौ काचर राजी होयनै बोल्यौ--चार म्हारा वीरा, दोय सूं तीन सदा भला । वो मेहू नै आपरा गाडा माथै बैठांण लियौ । आगै जावतां वानै वासदी सांमी धकियौ वो उणनै पूछ्यौ--कांणिया काचर सिध जावै रे । कांणिया काचर पाछो पडूत्तर दियौ :

जाऊं हूं धौळां री वार,
लेग्या दोय नै लाऊं च्यार ।

जद वासदी बोल्यो--कांणिया काचर म्हैं ई थारै सागै चालूं रे । कांणियौ काचर राजी होयनै बोल्यो--चाल म्हारा वीरा, तीन सूं च्यार सदा ई भला । वो वासदी नै आपरा गाडा माथै बैठांण लियौ । आगै जावतां-जावतां कोपरिया री अेक लांठी ढिगली सामी धकी । वा उणनै पूछ्यौ-कांणिया काचर सिध जावै रे । काणियौ काचर पाछो पडूत्तर दियौ :

जाऊं हूं धौळां री वार,
लेग्या दोय नै लाऊं च्यार ।

जद कोपरियां री ढिगली बोली—कांणिया काचर म्हैं ई थारै सागै चालूं रे । कांणियौ काचर नटणी तौ जाणतौ ई कोनी हो । राजी होयनै बोल्यौ--चाल म्हारी बाई, चार सूं पांच सदा भला । पांचां मे परमेसर रौ वासौ ।

वो उण कोपरिया री ढिगली नै आपरा गाडा मांयै बैठाण नी । ढिगली लारै ई पाटा माथै बैठी तो गाडौ भी उलाळ व्हियौ । कांणियौ काचर बोल्यो—बाई, की थकै सिरक जो, गाडौ उलाळ पड़ो । कोपरियां री ढिगली आगै सिरकनै बैठगी ।

कांणियौ काचर अबै गाडा नै टाळियौ, मूंडा सूं टिचकारी दी, रासां फणकारी । बोल्यौ—चालो म्हारा भायलां हवा नै ई लारै राखता चलो। कांणिया काचर री इतो कैणो व्हियो अर बळदां अपरी घटियां ऊंची करी, पूंछ रा फटकार देता पून रै समचै दौड़ण लागा । डावो जांणै म्है थकै जाऊं, जीमणो बळद जांणै म्है थकै जाऊं ।

(३)

गाडी रै चीलां चीलां अर ठगां रै खोजां-खोजां कांणियौ काचर उडतौ जावै । घर कूचां घर मजला, घर कूचां घर मजळां । हांकरतां ठगां रीगुडी नेड़ी लियौ । खास ठगां रै बारणै आयनै बळदां री ढीली करी । पुचकारतौ बोल्यौ–हौ भाई हौ । बळदां रा मोर थ'पलनै नीचौ उतरियौ । ठगा नै बकारतौ बोल्यां–भला मिनखां अेक घर तौ डाकण ई टाळै, पण थे वौ ई को टालियौ नी । अबै म्है थांरी जड़ियां उखाडनै रैवूंला, म्हारौ नांव कांणियौ काचर है । चौखळा मे म्हारा नांव सूं ओळखीजू । लावौ म्हारा गाडी बळद माजना सूं म्हारै हवाले करौ, नीतर कुमोत मारिया जावौला, पछै म्हनै भूंड मत देजौ ।

पण वै तौ खुद ठगां ऊपरला ठग हा । कांणिया काचर री बातां री की गिनरत करी नी । उणरी मसखरी करतां बोल्या–थारौ नांव कांणिया काचर है तौ औ ई ठगां रो गुडौ है । आयौड़ौ माल तौ म्हांरी सात पीढ़ी मे ई पाछौ देणौ को सीखया नी ।

कांणियौ काचर रीस में पग पटकतौ बोल्यो–नी सीखिया तौ आज म्है थांनै सिखाऊं । आ बात कैयनै वो आपरी वार धकीनै पाछल फोरी । कोपरियां री ढिगली नै कह्यौ–हां बाई अबे कैड़ाक सरणाटा बजावै । कांणिया चरका नै कैतां जेज लागी अर कोपरिया सणण उडण चालू व्हिया । अेक ई

कोपरियौ खाली को गियौ नीं। किणरी टांग तूटगी किणरी हाथ तूटग्यो; किणरां भोंगनौ बिखरग्यौ—तौ ई ठग पछा को पड़िया नीं। सैंग गुड़ै रा ठग काणिया काचर माथै घावौ कर दियौ। कांणिया काचर जद वासदी नै कह्यौ —चेत वेली चेत।

काणिया काचर री केणी व्हियौ अर सगळै गुड़ै में लाय लागगी। कठीनै ढांणियां सिळगी, कठीनै चारा रा पचावा सिळगी। गुड़ा मे हाय-तराय मचगी। ठगां री गुड़ो होळी वणगी। ठग तो ई नींची को न्हाकी नीं। ठगारौ अगवांणी बोल्यौ—वेलियां नीची मत न्हाकजो, अपां री सात पीढ़ी लाजैला। मरजावां जिणगी परवा नीं। झपाड़ौ मचियौ पण मचियौ। कांणिया काचर सवट आंधी नै कह्यौ हाँ बाई अबै यूं खैंखाड़ वजा।

कांणिया काचर नै केता जेज लागी अर काळी-बोळी आंधी भाखर उडानी आई। अठीनै लाय अर उठीनै आंधी। अबै क्युं पूछौ। ठगा री गुड़ौ जांणै लका वणग्यौ। अबै आंगळियां ऊंची करनै ठग बोबाड़ा करिया-कांणिया काचर बचा तौ बचा, थारी मींडकी गाय हां, थारै पगां पड़ां। म्हारौ खूंटो उखड़ जावैला। मोळा टाबर मारिया जावैला।

कांणिया काचर रै हीटौ दया घणीज ही, उणनै फट दया आयगी। वौ मेह नै कह्यौ—चेत वेली चेत मोळा टावरियां नै उवार। कांणिया काचर नै केता जेज लागी अर उतराद सूं काळा कांठल रा अणगिण हाथी आपरी सूंडा मे पांणी भरनै उमगिया। चारूमेर पळपलाट करती वीजळियां खिड़की। पांणी रा परनाळा छूटग्या। लाय है जठै ई ठाड़ी पड़गी।

वासदी, आंधी अर कोपरिया री ढिगली, कांणिया काचर रा वै सगळा वेली, उणरै कैतां ई गाडा माथै आय वैठ्या। फगत मेह वरसातौ रह्यौ। कांणियौ काचर बोल्यो—म्हैं थानै आता ई कह्यौ हो कै म्हारौ नाव कांणियौ काचर है, म्हारा गाडी-वळद पाछा सूंप दो, पण थानै तो कुमत सूज्योड़ी ही। थारे खुद रै माजनां सूं इतरी विगाड़ करायौ।

(४)

ठगां सगळा कांणियौ काचर रै पगा पड़िया। माफी मांगी। ठगां रौ

अगवांणी आपरा हाथ सूं उणरा गाडी-बळद लाय'र सूंप्या । कांणियो काचर वांनें फटकारतो बोल्यो-थांरा तरण तो ऐड़ा है के थांरो सगळो धनमाल दोनूं गाडियां में घालनै ले जाऊं, पण छोटा टाबरां री तरस आवै । इण सूं माफ करूं, पण थांनै डंड देवण सारू दोय री जगा चार बळद तो लांचूंला ई । ठगां री अगवांणी दोय नामी टाळवा बळद लायनै हाजर करिया ।

कांणियो काचर पाछो जळती वगत थांनें फेर सीख दीनी—नेकी री कमाई करो, सुख पावोला, म्हारा घोरळा में हाथ घा'लयो तो थे थांरी गांणो, पछै म्हारै जेड़ो भूंडो नी है । अठो वरिया जैड़ा भुगतो ।

कांणियो काचर आपरी वार साथै लेयनै उठा सूं गाजां-वाजां रै साथै वहीर हुवो ।

अभ्यास रा प्रश्न

भाषा सम्बन्धी :

१. नीचे दियोड़ा सबदां रो अरथ-भेद वाक्यां में प्रयोग कर स्पष्ट करो—
   (i) वेली । वेलि
   (ii) फटकारणो । पुचकारणो । वकारणो ।
   (iii) टिचकारो । वोबाडा ।
   (iv) ठग । धाड़ैती ।
२. इणारा विलोम सबद लिखो -
   जीमणो राजी, उतराद, भूंडो, कुमत ।
३. इण मुहावरा अर कहावतां नै आपणा वाक्यां में इण भांत प्रयोग करो कै अरथ स्पष्ट हुई जावै—
   पगां पड़णो, घूसो बाजणो, हवा नै लारै राखणो, पांचां में परमेसर रो वासो, अेक घर तो डाकण ई टाळै ।
४. इण कथा में लेखक संज्ञा सागै ओपता विशेषण दिया है । आगे बांई ओर संज्ञा अर दांई ओर विशेषण दियोड़ा है । आप हरेक संज्ञा रै सामै उपयुक्त विशेषण रो क्रमांक लिखो—

संज्ञाएँ	सही क्रमांक	विशेषण
१. झोटी	....	१. नागौरी
२. बळद	....	२. साँचोरी
३. आँधी	....	३. भूरी
४. काँठळ	....	४. काळी-बोळी
५. गाय	....	५. काळी

५. 'म्हारो खूटो उखल जावैला' इण वाक्य में 'खूंटा' सबद रो अरथ है–
(क) मान-मर्यादा। (ख) धन-दौलत।
(ग) जमीन-जायदाद (घ) सगा-सम्बन्धी।
(ङ) वंश-परिवार। ( )

विषय वस्तु सम्बन्धी :

६. 'गवाड़ी मे जको ई आयो उणनै वो हाथ सूं ई उत्तर दियो, मूं'डै उत्तर नी दियो।' इण कथन सूं काँणै काचर रो किसो वैवार प्रगट हुवै?
(क) वो आयोड़ा लोगां सूं नी बोलतो हो।
(ख) वो आयोड़ा लोगाँ सूं हाथापाई करतो हो।
(ग) वो सगळा री मदद करतो हो।
(घ) वो किणी री मदद नी करतो हो।
(ङ) वो हाथ जोड'र सब सूं मुजरो करतो हो। ( )

७. 'काँणिया काचर बचा तो बचा, थारी मीडकी गाय हाँ।' 'मीडकी-गाय' कैर ठग काँई कंणो चावै?
(क) म्हाँ घणा भोळा हाँ।
(ख) म्हाँ थारा भायला हाँ।
(ग) म्हाँ जावक निर्दोष हाँ।
(घ) म्हाँ थारै सरणै हाँ।
(ङ) म्हाँ घणाँ निबळा हाँ।

८. 'म्हें थाँनै आताँ ई कह्यो हो कै म्हारो नांव काँणियो काचर है।' इण कथन सूं काँणियो काचर रै चरित रो किसो गुण प्रगट हुवै।

[क] ईमानदारी । [ग] सचाई ।
[ग] स्वाभिमान । [घ] बहादुरी ।
[ड.] रोष । ( )

9. इण लोक-कथा रो मुख्य उद्देश्य है-

[क] काणे काचर रै मतवा रो वरणन करणो ।
[ख] ग्रामीण जीवण रो चित्रण करणो ।
[ग] आंधी, वासदी अर मेह री सगति रो महत्व बताणो ।
[घ] दोय री जगां चार बळद लाणे री जुगत बताणी ।
[ड.] संगठन मे शक्ति है' उक्ति रो प्रतिपादन करणो । ( )

१०. गाव रै मौतबिर आसामी रै रूप मे काणे काचर रो परिचय दो ।

११. काणियो काचर ठगां नै वकारतो काई बोल्यो ? ५० सबदां में मे लिखो।

१२. 'पाछो वळतो बगत वानै फेर सीख दीनी ।' काणियै काचर ठगां नै काई सीख दी नीं । २५ सबदां से उत्तर दो ।

रचना, समालोचना अर अनुभव-विस्तार सम्बन्धी :

१३. इण लोककथा नै आप २०० सबदां मे लिखो ।
१४. काणियो काचर गुस्सैल भी हो अर दयालु भी हो । उण री रीस अर दया रा दो-दो उदाहरण दो ।
१५ इण कथा रै आधार सूं आप 'पांचा-मे परमेसर रो वसो' उक्ति री सचाई सिद्ध करो ।
१६. जे आपनै इण कथा रो कोई दूजो शीर्षक देणो पड़ै तो आप कांई शीर्षक देवोला ?
१७. राजस्थान री लोककथावा घणी समृद्ध अर सीख देण आळी है । जे आपनै आ कथा आछी लागी व्है तो आप 'बातांरी फुलवाड़ी' पुस्तक पढ़ो । इण पुस्तक रा केई भाग रूपायन संस्थान, बोरून्दा सूं छप्योड़ा है ।

१७. साहित्य रो प्रयोजन

(श्री नरोत्तमदास स्वामी)

(श्री नरोत्तमदास स्वामी रो जनम सं० १९६१ में बीकानेर में हूयो। आप रा पिता श्री जयश्रीरामजी कथावाचक हा। स्वामी जी री शिक्षा काशी रै हिन्दू विश्वविद्यालय में हुई। अठा सूं ईज आप संस्कृत अर हिन्दी में एम. ए. कियो। आप पैली डूंगर कालेज, बीकानेर में अर पाछै उदयपुर नै वनस्थली मे हिन्दी विभाग रा आचार्य अर अध्यक्ष रहया। अबै आप राज री सेवा सूं रिटायर्ड होय'र स्वतन्त्र रूप सूं साहित्य री सेवा में लाग्योड़ा है।

स्वामीजी मितभाषी अर मूक साहित्यसेवी है। बीकानेर री घणकारी साहित्यिक संस्थावां रा आप सक्रिय ओहदेदार रहया। 'राजस्थान भारती' रा आप पैला सम्पादक अर घणकारी पत्रिकावां रै सम्पादक-मंडल रा सदस्य रहया। राजस्थानी भाषा रै समुद्धार रो काम खण पैली श्री रामकरणजी आसोपा, शिवचन्दजी भरतिया, गुलाबचन्दजी नागोरी आदि सरु करयो पण स्वामीजी इण काम नै नूंई गति अर दिशा दी।

आपरो घणकरो काम अनुसंधान, सम्पादन अर पाठ्यपुस्तकां रै रूप में है। 'राजस्थानी व्याकरण', 'रासो साहित्य और पृथ्वीराज रासो' आप री मौलिक पोथियां है। सम्पादित करयोड़ी पोथियां में प्रमुख है 'ढोला मारू रा दूहा', 'क्रिसन रुकमणी री वेलि,' 'वीर रस रा दूहा', 'राजस्थान रा दूहा', 'राजस्थान-रा लोकगीत'। आपरी भाषा संस्कृत प्रधान अर शैली रोचक है। छोटा-छोटा वाक्यां में गूढ़ बात कैवण री आपरी कळा अनूठी है।

संकळित निबन्ध प्रश्नोत्तर शैली लिख्योड़ो है। इण री भाषा सरल अर प्रवाहमयी है। लेखक री द्रिस्टि में आणंद अर उपदेश रो अद्वैत संबंध थरपीजणो ही साहित्य रो प्रमुख प्रयोजन है।)

साहित्य-रो प्रयोजन

साहित्य-रो प्रयोजन कांई ? मिनख साहित्य-रचना क्यों करै ? मिनख साहित्य क्यों वांचै ? क्यों सुणै ? और क्यों देखै ?

साहित्य अेक कळा है। कैई विद्वान कैवै कळा-रो प्रयोजन कळा हीज, कळा-रो कोई दूसरो प्रयोजन नहीं। दूसरा विद्वान बोलै—कळा-रो प्रयोजन आनंद, कळा आनंद देवै। तीसरा विद्वान बतावै—नहीं, कळा-रो प्रयोजन उपदेश, कळा जीवण-नै आगै वधण-मे मदद देवै। साची पूछो तो ती ं मता-में कोई अन्तर्विरोध नहीं। कळा रो संबंध मिनख-सूं, मिनख-रो संबंध जीवण-सूं कळा मिनख-रै खातर, कळा जीवण-रै खातर कळ मिनख-नै आनंद देवै, कळा जीवण नै आगै वधण-री प्रेरणा देवै।

साहित्यकार साहित्य-री रचना करै। कारण ? साहित्य री रचना कर नै वो आनंद प्राप्त करै, उण-नै आतम-संतोष मिलै--तुळसीदासजी-रै शब्दां में स्वान्तः सुख। वाचक साहित्य वांचै। कारण ? साहित्य वांच नै वो आनंद रो लाभ करै, उण-नै अेक न्यारो सुख मिलै--मम्मट-रै शब्दां-मे ब्रह्मानन्द-सहोदर। साहित्य मन नै रमावै, साहित्य मन-नै आपणै-मे लीन करै; साहित्य मन-नै सुख-दुख री स्थिति-सूं न्यारो इसै लोक मे पुगाय देवै जठै सगळा दूसरा 'वेद्य' विगळित हु ज्यावै। साहित्य-रो प्रयोजन आनंद।

पण साहित्य रो आनंद सस्तो मनोरंजन नहीं। साहित्य नौटंकी-रो खेल नहीं, बो वेश्या-रो नाच नहीं, वो शराब-री बोतल नहीं जिण-रै नसै में मिनख आप-नै भूल तो जावै पण पतन-री दिशा कानी जाता भी वार नहीं लागै। हित-रै सहित हुवै जद-ही साहित्य है। साहित्य जीवण-नै ऊंचो उठावै। उण-नै उदात्त वणावै। साहित्य-रो प्रयोजन उपदेश।

साहित्य उपदेश देवै, पण साहित्य नीतिशास्त्र नहीं। नीतिशास्त्र उपदेश देवै प्रत्यक्ष रूप'सूं। साहित्य उपदेश देवै। परोक्ष रूप-सूं--इण भांत कै आप नै मालम नहीं हुवै कै उपदेश दे रयो है। साहित्य प्रत्यक्ष रूप-सूं उपदेश देण लागै जद साहित्य साहित्य नहीं रैवै, बो नीतिशास्त्र-रो 'प्रचारक' बण ज्यावै। और साहित्य नीतिशास्त्र-रो 'प्रचारक' बण ज्यावै जद साहित्य नांव-रो

अधिकारी नहीं रैवै। इणी भांत साहित्य राजनीति-रो पिछलग्गू होय-नै राजनीति-रै प्रचारक-रो काम करै जद वो, और भला-ही कीं हुवो, साहित्य तो नही-हीज। इसै साहित्य नैं राजनीति,रो दासी-पुत्र, राजनीति-रो गुलाम, नांव देणो उपयुक्त हुसी।

(२)

साहित्य परोक्ष रूप-सूं उपदेश कियान देवै ? संस्कृत-रा साहित्यकारां इण-रो बडो सुंदर विवेचन कर्‌यो है। उपदेश तीन भांत-सूं दिराजै—प्रभु-संमिततया, सुहृत्-संमिततया और कांता-संमिततया—मालक आळै दाई, मित्र आळै दाई और प्रियतमा आळै दाई।

पैला पोत प्रभु-रो उपदेश। प्रभु-रो उपदेश कैवण-में उपदेश, पण अमल में आदेश। वो मानणो-ही पड़ै। उण-मे बाध्यता हुवै। और जठै बाध्यता हुवै उठै विद्रोह भी हुयां विना नहीं रैवै। आदमी प्रभु-रै उपदेश-नै मानै तो खरो पण मानण-रो उत्साह धीमै-धीमै घटतो जावै और छैकड़ जावक घट जावै। वेदां-रो उपदेश प्र॒-रो उपदेश। इसै उपदेश-रो प्रभाव स्थायी प्राय: नही हुवै।

दूजो-मित्र-रो उपदेश। मित्र-रो उपदेश सला। उण-में बाध्यता कोई नहीं, मानो तो मरजी नही मानो तो मरजी। मिनख-री स्वाभाविक प्रवृत्ति प्राय: कर नहीं मानण-री ही-ज। पुराणां-रो, नीतिशास्त्र रो, आचार-शास्त्र-रो उपदेश, मित्र-रो उपदेश। इसै उपदेश-रो प्रभाव भी साधारण रूप-सूं स्थायी नही हुवै।

तीजो कान्ता-रो उपदेश। कान्ता-रै साथै भावात्मक संबंध हुवै। कान्ता-में मन रमै। कान्ता री बात मन-में घणी भावै। उण-नै मानण-री मन-री स्वाभाविक प्रवृत्त हुवै मन उळटो चावै कै कान्ता आदेश देवै और हूं उण-रो पाळन करूं। कान्ता आज्ञा नही देवै पण मन करै कै वा आज्ञा देवै। वा आज्ञा देवै तो भी मालम नही हुवै कै आज्ञा दे रयी है।

साहित्य-रो उपदेश कान्ता-रो उपदेश। वो उपदेश देवै पण आपां-नै मालम नहीं हुवै कै वो उपदेश दे रयो है। ओ परोक्ष उपदेश।

साहित्य-रो उपदेश परोक्ष हुवै पण ओ नही समझणो कै वो किणी भांत कम प्रभावशाळी हुवै । नही, उण-रो जबरो प्रभाव हुवै और घणो स्याई । हिन्दी-रा मोटा साहित्यकार महावीर प्रसादजी द्विवेदी कयो है—साहित्य-पे वा शक्ति छिपियोड़ी है जकी तोपां, तरवारां अर बम-रा गोळा-में भी नही है। विजेता जाति पराजित जाति-नै आपणै अधिकार-मे करै जद पैलां पोत उण-री भाषा-नै पद-भ्रष्ट करै, उण-रै साहित्य-नै लारली गळी-मे न्हाखै ।

साहित्य-पे आनन्द-ही उपदेश और उपदेश-ही आनंद वण जावै आनंद और उपदेश में कोई अंतर नही रह जावै । आनंद अर उपदेश-रो ओ अद्वैत ही साहित्य-रो प्रयोजन है । सांचो साहित्य मन-नै आप-में रमाय-नै जीवण-नै उदात्तता-री दिशा-में अग्रसर करै । वो जीवण-में आनद भरै, उल्लास भरै, सजीवता भरै । उण-मे भोग है जठै कर्म भी है । उण-मे सत्य है, चैतन्य है, आनद है । वो सत्य है. वो शिव है, वो सुंदर है । वो सत्य और ज्ञान-रूप अनन्त ब्रह्म रो रूप है ।

अभ्यास रा प्रश्न

भाषा सम्बन्धी :

१. नीचे दियोड़ा सबदां रो अरथ-भेद वाक्यां मे प्रयोग कर स्पष्ट करो—

(i) वेद्य । वेद (ii) उपदेश । आदेश ।

(iii) वार । वार । (iv) आनन्द । मनोरंजन ।

२. 'अन्तर्विरोध' सबद रो सही संधि-विच्छेद किसो है ?

(क) अन्तः+विरोध । (ख) अन्तर+विरोध

(ग) अन्तः+अविरोध । (घ) अन्तर+अवरोध ।

(ङ) अतस+विरोध । ( )

३. 'पेलांपोत' मे किसो समास है ?

(क) द्विग । (ख) द्वन्द्व ।

(ग) तत्पुरुष । (घ) कर्मधारय ।

(ङ) अव्ययीभाव । ( )

४ इण सबदां रा उपसर्ग अर प्रत्यय अलग-अलग कर मूळ सबद मालम करो—

प्रयोजन, सजीवता, साहित्यकार, स्वाभाविक, प्रभावशाली, प्रचारक, वाचक।

विषय-वस्तु सम्बन्धी :

५. नीचे दियोड़ा वाक्यां में किसो वाक्य सही है ?

(क) साहित्य प्रत्यक्ष रूप सूं उपदेश देवै।

(ख) साहित्य नीतिशास्त्र रो प्रचार करै।

(ग) साहित्य नौटकी रा खेल जियां मनोरंजन करै।

(घ साहित्य रै उपदेश में वाच्यता हुवै ।

(ङ) साहित्य में आनंद ही उपदेश अर उपदेश ही आनन्द हुवै।

( )

६ साहित्य री रचना करण रो प्रयोजन है -'स्वान्तःसुख' आ बात किण कही ?

(क) तुळसीदास। (ख) मम्मट।

(ग महावीरप्रसाद द्विवेदी। (घ) नीतिशास्त्र।

ङ) वेद-पुराण। ( )

७. 'कान्ता आज्ञा देवै तो भी मालम नहीं हुवै के आज्ञा दे रयी है।' इणरो कांई कारण ?

(क) वी रो आकर्षण।

(ख) वी रो मधुर वाणी।

(ग) वी रो सुन्दर रूप।

(घ) वीं सूं भावात्मक सम्बन्ध।

(ङ) वीं रै प्रति आदर-भाव। ( )

८. महावीर प्रसाद द्विवेदी रै अनुसार जद विजेता जाति पराजित जाति नै आपणै अधिकार में करै तद पैलांपोत वा कांई करै ?

क) उणा रा उद्योग-धन्धा नष्ट करै।

(ख) बुद्धिजीवियां नै मारै।

(ग) विद्रोहियां पर मुकदमा चलावै ।

(घ) आपस मे फूट पैदा करै ।

(ङ) भाषा अर साहित्य नै पद-भ्रष्ट करै । ( )

९. 'साहित्य मन नै सुख-दुख री स्थिति सूं न्यारो इसै लोक में पुगाय देवै ।' ओ लोक किसो है ? २० सबदां मे उत्तर दो ।

१०. 'सांची पूछो तो तीनां मता मे कोई अन्तर्विरोध नहीं ।' कळा सम्बन्धी अै तीन मत किसा है ?

११. साहित्य रै उपदेश अर नीतिशास्त्र रै उपदेश मे कांई फरक है ?

१२. साहित्य साहित्य कद नी रैवै ? ५० सबदां मे लिखो ।

१३. साहित्य रै आनद अर नाच देखण रै आनंद मे काई फरक हुवै ?

१४. नीचे दियोड़ा वाक्यां रो आशय स्पष्ट करो--

(i) हित रै सहित हुणो जद ही साहित्य है ।

(ii) आनद अर उपदेश रो अद्वैत ही साहित्य रो प्रयोजन है ।

१५. साहित्य परोक्ष रूप सू उपदेश कियांन देवै ? उदाहरण देय'र समझावो ।

रचना. समालोचना अर अनुभव विस्तार सम्बन्धी :

१६. साहित्य मे वा शक्ति छिपियोड़ी है जको तोपा, तरवारां अर बम र' गोळा मे भी नही है ।' महावीरप्रसाद द्विवेदी रै इण कथन सूं आप कठातांई सहमत हो ? सकारण उत्तर लिखो ।

१७. साचो साहित्य सत्य, शिव अर सुन्दर किया है ? उदाहरण देय'र स्पष्ट करो ।

१८. इणां रै विषय मे जाणकारी करो--

(i) मम्मट ।

(ii) तुळसीदास ।

(iii) महावीरप्रसाद द्विवेदी ।

(iv) नौटंको रो खेल ।

१८. गळगचिया

(श्री कन्हैयालाल सेठिया)

(श्री कन्हैयालाल सेठिया रो जनम सं० १९७६ मे सुजानगढ़ (बीकानेर) मे हुयो। अ परी सरुआत री शिक्षा सुजानगढ़ अर कलकत्ता में हुई। सरु सूं ही आप सामाजिक, राजनीतिक साहित्यिक अर सांस्कृतिक कामां मे घणे उत्साह अर रस सूं भाग लेता रह्या। साहित्य-सिरजणा अर समाज-सेवा आपरै जीवण री दो मुख्य प्रवृत्तियां है।

सेठियाजी हिन्दी अर राजस्थानी दोन्यूं भाषावां रा घणा मानीजता साहित्यकार है। टाबरपणै सूं ही आप कविता-करण लागग्या हा। आपमे हरेक घटना अर व्योपार नै बारीक नजर सूं देखण अर गूढ़ चिन्तवणा री अपार खमता है। ओ ईज कारण है कै आपरै काव्य मे अनुभूति, संवेदना अर अपणायत री बोळायत मिलै। सेठिया जी एक कानी राजस्थानी काव्य री सहनाई में नव जागरण रो सुर भरियो तो बीजी कानी-उण नै जीवण-दरसण रो गहरो पुट दियो। राजस्थान रै लोक-जीवण अर अठा री प्रकृति नै आप गद्य और पद्य दोन्यूं विधावां में बारीकी सूं चित्रित करी है। आपरो सबद-चयन घणो सार्थक अर अभिव्यक्ति सहज तथा मार्मिक हुवै।

कवितांवा री आपरी कई पोथियां छपी है। 'मींझर', 'कूंकूं' अर 'रमणिये रा सोरठा' राजस्थानी काव्य-संग्रह है। हिन्दी कवितावां रा प्रमुख संग्रह है—'अग्निवीणा', 'वनफूल', 'मेरा युग', 'दीपकिरण', 'प्रतिबिम्ब', 'खुली खिड़कियाँ चौड़े रास्ते', 'प्रणाम', 'आज हिमालय बोला' अर 'मर्म'। 'प्रतिबिम्ब' काव्य संग्रह रो अंग्रेजी अनुवाद भी छप्यो है। 'गळगचिया' राजस्थानी गद्य-काव्य रो अनूठो संग्रह है।

सकळित गद्य-खण्ड 'गळगचिया' पुस्तक सूं लियोड़ा है। इणां में लेखक लोकजीवण अर प्रकृति रै विविध कार्य-व्यापारां नै माध्यम बणा'र जीवण रै केई प्रश्नां अर समस्यावां रो दार्शनिक निरूपण कियो है।)

गळगचिया

(१)

तांबे रो कळसो माटी रै घड़ै नै कयो—घड़ा, थारै मे घाल्योड़ो पाणी ठंडो किया रवै'र म्हारै में घाल्योड़ो तातो किया हुज्यावै ?

घोड़ो बोल्यो—मैं पाणी नै म्हारै जीव में जग्यां द्यू हूं'र तू आंतरै राखै, ओ ही कारण है।

(२)

मेणबती कयो—डोरा, मैं थारै स्यूं कतो मोह राखूं हूं ? सीधो ही काळजै मे ठोड़ दीन्ही है।

डोरो बोल्यो—म्हारी मरवण, जणां ही तिल तिल बळूं हूं।

(३)

बादळवाई रो दिनो मघरो मघरो आथूणूं बायरो चालै। खेजड़ी ऊपरां बैठी कमेड़ी बोली 'टमरक टूं'।

नीचै छयां में सूतो मिनख सोच्यो—किस्यो'क सोवणूं पखेरू है।

अतै में कमेड़ी बीठ करी, सीधी आ'र मिनख रै उपरां पड़ी,

मिनख झुंझळा'र बोल्यो—किस्यो'क बदजात जीव है।

(४)

तूंतडा बोल्या—देख्यो रै छायला थारो न्याय ? म्हाने तो फटक'र बगा दियो'र आं सागी छोडणिया दगाबाज दाणा नै काळज्यिं री कोर कर'र राख्या है ?

छा लो कयो—डोफा, थां नै तो हूं बेकसूर मान'र ही छोड्या है, आं (बिसवासघात्यां) तांई तो चाकी'र ऊखळी त्यार है।

डोरो कयो—अरै मोत्यां, मैं ही तो थाने पो'र एक ठोड कर्‌या, मैं ही

था नै गळपार बणणै रो मोको दियो, पण म्हारो तो कठेई नांव'न नोरो ? देखै जको ही क्है, ओ मोत्या रो हार है, डोरै रो हार तो कोई को बतावै नी।

मोती बोल्या--जगत री जीभ तो म्हां सूं ही को पकड़ाजै नां। म्हे वो तूं लुक्यो जिया ही उघाड़ में ल्याया पण तूं थारो सरळपणूं छोड'र म्हानै ही आपसरी मे अलघ' अलघा रावण रा बदनीत सूं आखर मे मन में गांठ ही बांध ली जद'स म्हे के करां ? बापड़ो मिनख तकायत थारै ओछपणै ने लाजा मरतो नम रै ओल ही राखै है।

(६)

रूंख ने अडोळो कर'र सगळा पानड़ा झर झर'र नीचै आ पड़या; रूंख बिलखाणूं हू'र बोल्यो--संगळियां, भलो हेत निभायो ?

पानड़ा कयो--अरै भोळा, अता दिन तो म्हे थारा सिणगार वण र तनै शोभा दीन्ही ही अबै थारी खुराक बण'र तनै नयो जोवण देस्यां, तूं तो म्हानै सिगाणै ही ओळमूं देवै है।

(७)

बांस कयो—मिनख, म्हारै फूल लागै न फळ फेर मनै किस्यै लालच स्यू जड़ मूळ स्यूं काटै ?

मिनख बोल्यो--गुण हीण री थोथी ऊंचाई म्हारै स्यूं कोनी देखीजै।

(८)

एक दिन पुन्न'र पाप अचाणचूका ही एक चोरस्तै पर आ मिल्या,

पुन्न साव उघाड़ो हो'र पाप लगोट बांध राखी ही, पाप बोल्यो--पुन्न, तनै नागो फिरतै नै थोड़ी घणी ही लाज कोनी आवै के ?

पुन्न कयो--पाप, जको बगत ही तूं म्हारै मन में आसी में ही थांकाळां जिया ढ़क्यो ढूम्यो रया करस्यूं।

(९)

जीभ ने कवू में राखणै तांई कुदरत दांतां रा सीकचा लगाया, होठां रा परकोटा बणाया'र मौन रो ताळो लगा'र ग्यान री कूंची मिनख नै सूंप दी।

जीभ री बाळपणै री साथण पर निन्दा' आ देग'र रोव में पड़गी'र आप री भायली जीभ नै कुदरत री कैद स्यूं छुड़ाणै रो उपाव सोचण नै लागगी।

एक दिन 'पर निन्दा' गुण्याढ देग'र दिनरा रै मन रै मैं'ल मे जा पुगी। मिनख 'परनिन्दा' री कानां मीठी बोली सुण'र आप रो आपो भूलग्यो। पर-निन्दा' तो धार विचार'र आई ही मिनख नै आप रै वश मे जाण'र हांळै सी ग्यान री कूंची आप रै कबजै में करली'र मोन रो ताळो खोल जीभ नै सागै ळै'र चट बारै निकल गी।

(१०)

कुम्हार काचै घड़ै नै चाक स्यूं उतार'र न्यावड़ै री उकळती भोमभर मे ल्या नाख्यो। घड़ो रो'र बोल्यो--विधाता आ काई करी?

कुम्हार हंस'र कयो--पणिहारी रै सिर परा इंया मीधी हो चढणूं चावै हो कै?

(११)

नीमड़ै रो रंख मतीरै री वेल नै हंस'र कयो-म्हारी टोखी तो अमै नै नावड़ै है'र तूं धूल पर ही पसर्योडी पड़ी है?

मतीरै री वेल बोली—पैली थारै फळ कानी देख पछै म्हारै स्यूं बात करीजै।

(१२)

आभै रै अगूणै पळसे स्यूं सूरज आयो'र आथूणै पळसै स्यूं बारै निकळग्यो, बडा आदम्यां रो आणूं ही दिन है'र जाणूं ही रात है।

अभ्यास रा प्रशन

भाषा सम्बन्धी :

१. 'बेकसूर' उर्दू सबद है जो उर्दू उपसर्ग बे-कसूर सूं बण्यो है। 'बे' रो अरथ है—नहीं, बिना। आप अैड़ा चार सबद और बतावो जे 'बे' उपसर्ग सूं बण्या हुवै।

२. अव्ययीभाव समास रो-सही उदाहरण है—
 (क) गळहार। (ख) अचाणचूक।

(ग) चौरस्तो ।   (घ) गुणहीण

(ङ) पुन्न-पाप ।   (   )

३. नीचे दियोड़ा मुहावरा नै आपणा वाक्यां में इण भांत प्रयोग करो कै अरथ स्पष्ट हुई जावै -

तिल तिल बळणो, गाँठ बांधणो, काळजे री कोर ।

विषय वस्तु सम्बन्धी :

४. पानड़ा रूंख नै नयो जीवण देवण खातर कांई करै ?

(क) रूंख नै अडोळो करै ।

(ख) उण पर छ्या करै ।

(ग) उण नै हरियाली देवै ।

(घ) नीचै पड़ उड़ री खुराक बणै ।

(ङ) आपणो जीवण नष्ट करै ।   (   )

५. 'गुणहीण री थोथी ऊंचाई म्हारै स्यूं कोनी देखीजी ।' वांस नै दियोड़ै मिनख रै इण उत्तर सूं मिनख री कांई विशेषता प्रकट हुवै ?

(क) सुवारथपणो ।

(ख) ईर्ष्या री प्रवृत्ति ।

(ग) स्वाभिमान ।

(घ) गुण रै प्रति आदर ।

(ङ) बाहरी दिखावै रै प्रति विरोध ।   (   )

६. इण पाठ में संकळित गद्य-काव्य लिखण रो प्रमुख उद्देश्य है—

(क) प्रकृति रो वरणन करणो ।

(ख) प्रकृति रै तत्वां में बातचीत कराणी ।

(ग) प्रकृति रो मानवीकरण करणो ।

(घ) प्रकृति रै माध्यम सूं सत्य रो निरूपण करणो ।

(ङ) लोकजीवण सूं चुन्योड़ी उपमावां रा उदाहरण देणा ।   (   )

७. छायली दाणां नै दगाबाज क्यूं बताया ? २० सबदां में उत्तर दो ।

८. 'थें पाणी नै म्हारै जीव में जग्या दयूं हूं'र तू आनरै राखै। माटी रो घड़ो पाळी नै आपरै जीव में जग्या किण भांत देवै ? स्पष्ट करो।

९. 'बापड़ो मिनख तकायत थारै ओछपणै नै ताजा गरतो नम रै ओलै ही राखै है।' लेखक री द्रिस्टि में टोरा रो ओ ओछपण किसो है ?

१०. जीभ नै काबू मे राखणै तारै कुदरत कांई उपाव कियो, अर बा कैद सूं किया छूटं ?

११. पणिहारी रै सिर पर चढण सूं पैल्यां घड़ै नै कांई करणो पड़ै ? २० सबदा में लिखो।

रचना: समालोचना अर अनुभव-विस्तार सम्बन्धी :

१२. 'पुन्न साव उघाडो अर पाप ढक्यो-ढक्यो रैवै।' इण कथन सूं लेखक कांई भाव प्रकट करै ? ५० सबदा मे लिखो।

१३. 'पैली थारै फळ कानी देख पछै म्हारै स्यूं बात करीजै।' मतीरै री वेल आ बात नीमड़ै रै रूंख नै कही है। इण कथन सूं कांई भाव प्रकट हुवै ?

१४. 'वड़ा आदम्यां रो आणू ही दिन है'र जाणू ही रात है।' आप आपणा अनुभव रै आधार पर इण कथन नै सिद्ध करो।

१५. जे आपनै गद्यकाव्य रा अै अंश रुचिकर लाग्या हुवै तो आप लेखक री 'गळगचिया' पुस्तक मे छप्योड़ा अंश और पढ़ो।

१९. मुंसीजी रो सुपनो

(डा० मनोहर शर्मा)

डा० मनोहर शर्मा रो जनम सं० १९७१ में झुंझुनू जिले रै बिसाऊ गाँव में हुयो। आप हिन्दी में एम. ए., साहित्यरत्न अर काव्य तीर्थ री परीक्षावां पास करी। राजस्थान विश्वविद्यालय सूं आप 'राजस्थानी वात साहित्य' विषय पर पी-एच. डी. री उपाधि हांसल करी। हिन्दी-प्राध्यापक रै पद सूं रिटायर्ड हो'यर अब साहित्य सिरजणा में लाग्योड़ा है।

श्री शर्मा जी राजस्थानी रा अग्रणी साहित्यकार है। आप घणकरी साहित्यिक संस्थावां सूं जुड़ियोडा है। अबार आप साहित्य अकादमी दिल्ली री राजस्थानी परामर्श समिति अर राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर री संचालिका सभा रा सदस्य है। लारला १६ बरसां सूं आप राजस्थान साहित्य समिति बिसाऊ री तिमाही शोध पत्रिका 'वरदा' रा सम्पादक है।

डा० शर्मा राजस्थानी लोक साहित्य अर लोक संस्कृति रा मानीजता विद्वान अर गवेषक है। साहित्य री सगळी विधावां में आप भांत-भांत रा प्रयोग कर्‌या। 'अरावली री आत्मा' अर 'गीतकथा' नाम सूं आपरी दो राजस्थानी कविता-पुस्तकां छपी है। पत्र-पत्रिकावां मे आपरी केई फुटकर कवितावां छप्योडी है। 'मेघदूत' 'उमरखैयाम', 'अन्योक्ति शतक', 'गीता', 'धम्मपद' अर 'जिनवाणी' आपरा राजस्थानी अनुवाद ग्रंथ है। 'कन्यादान', 'रोहीड़ै रो फूल' अर 'नैणसी रो साको', क्रमश: आपरा राजस्थानी कहाणी, व्यंग्यात्मक निबन्ध अर एकांकी रा संग्रह है। आप राजस्थानी लोक साहित्य अर लोक संस्कृति सूं सम्बन्धित केई ग्रंथ सम्पादित करिया जिणां में प्रमुख है— लोक साहित्य की सांस्कृतिक परम्परा, राजस्थानी लोक संस्कृति की रूपरेखा

वातां रो झूमखो, (तीन भागां में) कुंवरसी सांखलो, राजस्थानी कहावतों की कहानियां (दो भागां में)।

संकलित व्यंग्यात्मक निबन्ध 'मरुवाणी' वरस ७ अंक १० (अक्टूबर, १९६७) सूं लियोड़ो है। आज देस मे भारी बेकारी फैल्योड़ी है। नौकरी रै थोड़ा सा पदा खातर उम्मीदवारां री एक वड़ी भीड लाड़ी हुवै अर पछै उण भीड़ मांय सूं योग्य व्यक्तियां रै चुणाव रो नतीजो घणो अचरज भरियो निकळै। सुयोग्य अर खरा उम्मीदवार पराजित हुवै अर सिफारिसी टट्टू छांटे-पड़े पदां पर आ विराजे। देस मे व्याप्त भ्रस्टाचार अर गिरावट रै अनेक कारणां मे ओ पक्षपात पूर्ण चुणाव प्रमुख है। निबन्ध मे ई स्थिति पर करारी चोट है। लेखक री अनोखी कल्पना अर विनोदपूर्ण सैली ई चोट नै घणी तीखी अर मार्मिक बणावण मे सफल हुई है।)

मुन्सीजी रो सुपनो

(१)

स्याळै री रात ही। दस नेड़ा वज्या हा। मुंसीजी रिजाई ओढ्यां छापो बांचै हा। वांनै छापै रो सोख सदा सूं ई हो। अजादी री साल मुंसीजी नै पेंसन मिली, जद सूं वै घर मे ई रहता। घर रो भार वां रा बेटा संभाळ राख्यो हो, अर मुंसीजी लोभी सुभाव रा हा कोनी, पछै बुढ़ापै में खेचळ क्यूं लायता? पोथां वांचणै अर छपो देखणै मे वां रो वखत कटतो। वै धीरज अर संतोस सूं पाछला दिन काढै हा।

हां तो मुंसीजी छापो देखै हा जद वां रे मुख पर गंभीरता ही। बीच-बीच मे मुंसीजी लांबी सांस भी छोडे हा। वै कदे-कदे छापो बंद करै हा अर पछै पाछो उठाय लेवै हा। आखर मुंसीजी पूरो छापो देख'र चुपचाप वैठग्या, जाणै वै पुराणी बातां नै याद करता होवै। अर आज रा समाचार तो सारा छापै मे हा ई।

मुंसीजी मन ई मन में आजादी सूं पहली रै भारत री आज रै भारत सूं तुलना करी। परतंत्र भारत अर आजाद भारत री भांत-भांत री तसवीरां वां रै अन्तर नैणां रै आगै चित्रपट रै रूप में फिरी। वै फेरूं एक लांबी सांस

छोड़ी अर पिलंग पर आड़ा होग्या । पण चित में चैन कोनी । काजीजी, दुबळा क्यूं, पराये दुख सैं । मुंसीजी आप सुखी हा पण देस री दसा वां नै चिंता में गेर राख्या हा । छापो वांचणिये लोगां रै यो रोग तो लाग ई जावै, किणी रै थोड़ो अर किणी रै घणो । मुंसीजी रै यो रोग वड़ो हो ।

(२)

आखर नींद माता आई अर वाळक-मुंसीजी नै आपरी गोदी में लेयर पल्लो ऊपर गेर लियो । पछै नींद माता असमान में उड़ी अर वाळक नै सुपनां रै लोक मे लेगी । अठै टाबर नै माता फिरवा री पूरी छूट दीनी । अर वाळक तो सुभाव सूं ई चचल होवै । मुंसीजी नई दुनिया रो तमासो देखवा चाल्या ।

आगै सी एक जगां मोत घणै लोगां री भीड़ नजर आई । इतरा मोट्यार एक जगा भेला क्यूं हो रै या है ? मुंसीजी रै कुतूहळ होयो अर वै नेड़ा सी जा पूग्या । पण स्याणा हा, मुंसी जी भीड़-भेळा कोनी होया अर दूर खड़्या ई सारो तमासो देख्यो ।

जल्दी ई मुंसीजी रै पूरी वात समझ मांय आगी कै या तो मोट्यारां री दौड़ होयी है जैयां घोड़ां री भी तो दौड़ होया करै है । इसी दौड़ मुंसीजी घणी ई देखी ही, पण या न्यारी ई ही । संकड़ो सो रस्तो हो । दोनूं कानी मकान अर दुकानां री लांबी कतार सी ही । या दौड मैदान में न होयर वजार में होयरी ही । दौड़ खातर वजार वद कर मेल्यो हो अथवा लोग डरता आप ई सड़क छोड़ दीना ही ।

सड़क इतरी सी चौड़ी ही कै एक सीध में वीस-पचीस नेड़ा भागणिया खड़्या हो सकै हा । पण अठै तो हजारां भागणिया हा अर वै दूर-दूर सूं आया हा । जुवाना रो झुंड माचर्‌यो हो । दो अफसर सड़क रै बीच में मोटी डोरी ताण राखी ही अर उण रै एक कानी सारा भीड भेळी ही । आगलो नाको क्युं दूर हो पण दीखै हो । वठै भी दो अफसर डोरी पकड़यां खड़्या हा । वां रै गैल नै हारजीत रो निर्णय देखणियां लोगां री दूजी भीड खड़ी ही । मुंसीजी एक ऊंची सी दुकान देखर आगली नाकै खड़्या होयग्या, जी सूं सारो तमासो आसांनी सूं देख्यो जा सकै ।

आखर दोड़ सरू होई--एक, दो, तीन, । तीन री बोली सुणतां ई सारी भीड़ संकड़ी सड़क पर एक सागै ई सरराटै सूं भागी । हे राम, आ कांई दोड़ । दोड़ सरू होतां ई घणी भवापित माची कै बिचारा आघाक भागणिया तो सड़क पर पड़ग्या अर चिगग्या । किणी रो हाथ टूट्यो अर किणी रो पग । कई बेहोस होयग्या अर कई जाणं लाटै मे गाला गया । भागणियो एक ई यो विचार कोनी कर्यो कै पगा तळै मिनख-मरीर है अर वै लोथ ज्यूं पड्या सिसकै है । आप री जीत री बाजी कुण छोडै ? कई जणा पड्या जद ई तो वै आगै बढ्या । वा तो वां री पहली जीत ही । भागणिया म ट्यार पडयोड़ै जुवानां कानी कोनी देख्यो तो तमासू लोग भी वा रै वयु ई आड़ा कोनी आया—जे इतरो ई दम हो तो वै दोड़ मे आया क्यूं ?

भागणियां री भीड़ आगै क्युं कम होई पण फेर भी कांई कम होई ? सड़क में तो इतरा भी कोनी समाया । पछ धक्कम—धक्को होई । जिण री काया में वळ हो, बो कमजोर नै देखर धक्को मार्यो अर विचारै या हाड़ तोड़ गेर्या । ई जीत रो मजो भी कम मत समझो । किणी भागतोड़ै रै सरीर मे वळ कोनी हो तो वो आगै नीसरतै साथी रै अटगी लगाई अर उण रै मूंड़ै री पोळी रा कुंवाड़ खोल दिया । इण भांत आघी दूर जातां भीड़ ओर कम होई । मोट्यार दक्काछंट भाग्या ई जावै हा ।

मुंसीजी देख्यो कै या कांई दोड़ ? अठै कोई नियम अर कायदो कोनी । अठै बस एक ई नियम है—'जिण रै हांगो डील में, उण रो दिल दरियाव ।' अर दूजो कायदो अटंगोहाळो भी है—'वळ सै कोनी होवै, जिको क़ाम वळ सै हो ज्यावै ।'

यूं करतां थोड़ा सा भागणिया आगलै नाकै रै नेड़ा सी पूग्या । ये तो छंट्योड़ा जुवान हा । देखणै में भी लांबा-चौड़ा अर भरवा हा । पण अंत मे इनाम तो पहली, दूसरी अर तीसरी ये तीन ई ही । ई तीनूं इनामां खातर ये तीसां जुवान खसर्या हा । नाको नैडो देखर जुवानां में भोत घणो जोस आयो । वै बुरी तरियां हांफ उठ्या हा अर वां री छाती धड़कै ही पण जीत रो लोभ लार सूं करोड़ा मारै हो अर वै भाग्यां जावै हा । आखर अगली डोरी-एकदम

ई नैड़ी आगी । पण वै डोरी पकड़ पाया कोनी अर पहली ई तीनूं इनामां री जोर सूं घोसणा होयगी । भागणिया हक्का बक्का रह कर डोरी कानी निरासा री नजर गेरी । वां रै मूंड़ा में झागला आयग्या अर विचारा धरती पर पड़ग्या । लोगां री भीड़ में क्यु भी वेरो कोनी पट्यो कै वां रो पछै काई होयो ।

दौड़ री पहली इनाम जीती एक पांगळो दूजी हाथ आई एक लूलै रै अर तीजी मिली एक खोड़ै नै । लोग पागळियै नै आप री पीठ पर लांधो अर लूलियै नै कांधे पर मेल्यो । खोड़ियो तीसरै नम्बर पर जीत्यो हो । वो भी मोद में भर्यो ठमरका देतो फिरै हो । तीनुवां रै गळा में फूला री माळा लटकै ही ।

मुंसीजी अचरज में भर कर दौड़ रो सारो तमासो देख्यो । जीतणियां री जोर जोर सै जै-जैकार होई । ई रोळै सूं मुंसीजी री आंख्या खुलगी ।

(३)

दिन उगणै में आग्यो हो । मुंसीजी खाट छोड'र उठग्या अर पाछा सोया कोनी । वा नै असली भेद मिलग्यो । गाभा सीमणै री मसीन री सूई रो भेद भी एक सुपनै में ई खुल्यो हो । कारीगर रै माथै मे सुपनै में एक देव कील ठोकी अर वो जाणग्यो कै ई सूई रै सिर पर ई वेज काढणो चायजे । या ई मुंसीजी में होई । सुपनो वां री सारी संका मेट दी । वै जाणग्या कै आज रै भारत री चोफेरी गिरावट रो असली कारण कांई है । देस में लायक मोट्यार हार मान कर बैठग्या अर लूला-पागळा दौड़ में जीत'र सागळै पदां पर जमग्या । नीति रो वचन है—"जठै पूजनीक लोगां रो सनमान न होयर हळकै आदमियां रो आदर होवै, वठै काळ पड़ै मीत होवै अर भय फैलै ।" आज देस री या ई दसा है ।

अभ्यास रा प्रश्न

भाषा सम्बन्धी :

१. नीचे दियोड़ा सबदां रा हिन्दी रूप लिखो—
बखत, पोथी, नेड़ा, सुभाव, मिनख ।

२. नीचे दियोड़ा सबदां मे किसो सबद राजस्थानी रो कोनी ।

(क) छापो । (ख) मोट्यार । (ग) दगाछंद ।

(घ) कायदो । (ङ) गामा । ( )

३. पांगळियै, लूलियै अर लोळियै में कांई अन्तर है ? स्पष्ट करो ।

४. इण पाठ मे आयोड़ां-भागणियां, जीतणियां, देखणियां सबदां री बणघट देखो । इण में 'इयां' प्रत्यय जुड़्यो है । आप 'इयां' प्रत्यय लगार दो नुंवा सबद और बणावो ।

विषय-वस्तु सम्बन्धी :

५. 'बीच-बीच में मुंसीजी लांबी सांस भी छोड़ै हा ।'

छापो देखण विचाळै मुंसीजी रै लांबी सांस छोड़ण रो कारण है—

(क) जीवण री निरासा ।

(ख) दमै री कमजोरी ।

ग) बुढ़ापै री कमजोरी ।

(घ) देस री दुरदसा ।

(ङ. आदत री लाचारी ।

६. 'आंखर मुंसीजी पूरो छापो देख'र चुपचाप बैठग्या ।

मुंसीजी रे चुपचाप बैठण सूं उण रे मन री किसी भावना प्रकट व्है ?

(क) निरासा । (ख) चिन्ता । (ग) क्रोध ।

(घ) कमजोरी । (ङ) अचंभो । ( )

७. 'मुंसीजी नै यो रोग वड़ो हो ।' इण कथन में लेखक मुंसीजी रै किण रोग री संकेत करै ?

(क) नींद लेवण रो ।

(ख। सुपनो देखण रो ।

(ग) छापो देखण रो ।

(घ, पोथो बांचण रो ।

(ङ) लांबी सांस छोड़ण रो । ( )

८. 'मुंसीजी रो सुपनो' लेख लिखण रो प्रमुख उद्देश्य है—

(क) मोट्यारां री दोड़ रो वरणन करणो ।

(ख) अद्‌भुत सुपना रो वरणन करणो।
(ग) देस में फैल्योड़ी बेकारी पर व्यंग्य करणो।
(घ सिफारसी लोगां रो सनमान करणो।
(ङ) पक्षपातपूर्ण चुणाव पद्धति पर चोट करणो। ( )

९. 'मुंसीजी रो सुपनो' किण भांत रो लेख है ?
(क) हास्यात्मक।
(ख) व्यंग्यात्मक।
(ग) विचारात्मक।
(घ) कथात्मक।
(ङ) भावात्मक। ( )

१०. 'आखर नींद माता आई अर बाळक मुंसीजी नै आपरी गोदी मे लेयर पल्लो ऊपर गेर लियो।' नीद न माता केवण में कांई भाव छिप्योड़ा है ? ३० सबदां में लिखो।

११. 'मुंसीजी खाट छोडर उठग्या अर पाछा सोया कोनी। वां नै असली भेद मिलग्यो।' बो असली भेद कांई हो ?

१२. आज रै भारत री चोफेरी गिरावट रो असली कारण कांई है ?

१३. 'दौड़ री पहली इनाम जीती एक पांगळो, दूजी हाथ आई एक लूलै रै अर तीजी मिली एक खोड़ै ने।' इण रो कांई कारण ?

१४. नीचे लिख्योड़ा वाक्यां रो आशय स्पष्ट करो—
(i) कई जणाँ पड़या जद ई तो बै आगै बढया।
(ii) जिण रै हांगो डील में उण रो दिल दरियाव।
(iii) बळ सैं कोनी होवै जिको काम कळ सैं हो ज्यावै।

१५. 'जठै पूजनीक लोगां रो सनमान न होयर हळकै आदमियां रो आदर होवै।' उण समाज री कांई गत व्है ?

१६. मुंसीजी नई दुनियां रो काँई तमासो देख्यो ? १०० सबदां मे वरणन करो।

रचना, समालोचना अर अनुभव-विस्तार सम्बन्धी :

१७. मोटयारां री फौज अर फौजां री [illegible] आप देखी हुसी। उण री ख्याल में [illegible] किसी एक [illegible] रो ७० [illegible] में वरणन करो।

१८. [illegible] में फूलां री माळा किण मौके पर [illegible] रो रिवाज है। किणी दो मौका रा नाम बताओ।

१९. 'मुंनीजी मन ई मन में आजादी सूं पैली रै भारत री आज रै भारत सूं तुलना करी।'
आप आपणी कल्पना सूं बतावो कै मुंनीजी कांई तुलना करी हुसी?

२०. आप भी भांत-भांत रा सुपना लेता हुवोला। किणी एक अद्भुत सुपना रो वरणन करो।

२०. कवि अर कविता

(संकळित)

(इण साहित्यिक निबन्ध में लेखक कवि ने धरती रो सांचैलो भोगणहार बतावता थकां उण री वीर, करसै, कमतरियै अर विग्यानी सूं तुलना करी है। लेखक री द्रिस्टि सूं आज रै विग्यान रै जमाने में भी कविता री घणी जरूरत है। विग्यान अर कविता रै आपसी मेळ सूं ईज आ स्रिस्टि सून्दर अर उपयोगी बण सकै है।)

कवि अर कविता

(१)

इण धरती नै कुण भोगे? तीर, बरछी, भाला, तरवार, बंदूक अर बंब इत्यादि आं सस्त्रां री मिनख-मारणी ताकत ता जोर सूं जकी घणी धरती री माठां जीतै; अलेखू मिनखां रो रगत बहावै, जनम देवण वाळी मां री हित्य

करै, मिनखां नै आंधा, बोळा, गूंगा अर पागळा बणावै, जीवता-जागता हंसता-मुळकता, कोटाया प्रांणां नै मौत रै घाट उतारै अर मिनखां नै जिनावरां री गळाई आपरी मसा रै प्रमांण वरतै। कै जकी आपरी मैणत रा जोर माथै धरती नै सिणगारै, निरजीव चीजां मे प्रांणां रो संचार करै, आपरी पसीनो सींचनै सूखा में हरियाळी लहरावै, अ परै कांमणगारा हाथां सूं भांत-भांत रे फूलां सूं धरती नै सिणगारै, अलेखूं रसाळां निपजावै धरती री निपज वंधावै अर जीवण रा सगळा आधार जुटावै। कै जकी आपरै जडंडा रा करार सूं धरती नै पयाळां लग खोदै, अमोलक पदारथां रो अणमाप थट लगावै, अथाग समदरां सूं अणगिण मोती हेरै, सोनो, चांदी अर हीरा-पन्ना सूं अडोळी काया नै सिणगारै। कै जकी आपरै ग्यांन-विग्यांन री अटकळ सूं अंधारा में चांदणो करै, अछेही समंदरां नै लांघै, नदियां बांधै, हवा में विचरण करै, नखत चांद अर तारां विचाळै रमै अर अकंधां री मांथ माथै काबू पावै।

अर कै इण धरती रो भोग वो करै जको सूरज रा तप नै, चांद रा निरमळ उजासू नै, तारां री जगामग नै, विजळी रा पळकां नै, काळी कळायण रे बरसता धारोळां नै फूलां री झीणी सोरभ नै, कोयली री मीठी वांणी नै, वसंत री सुरंगी छिब नै, सिमजर अर कूंपळां रा उगतां परसता-जीवण नै, सजोग रा हरख नै, विजोग रा दरद नै; रमणियां री रूपाळी ओप नै, कांमणियां रा हाव-भाव नै, हीनां रा छळकता कोड नै अर नैणां रा ढळकता नेह नै आपरै आखरां में उतारै।

(२)

तो कुण करै, कुदरत री साचैलो भोग कुण करै? वीर, करसो, कमतरियो, विग्यांनी कै कवि?

वीर आपरै खूनी हाथां सूं कुदरत रो विणास करै अर काळ आयां खुद ई मौत रै हाथां विणसै। अबूझ करसो आपरो पेट भरण सारू कुदरत सूं आफळै पण आपरै ई हाथां सिणगारियोड़ी कुदरत री छिब निरखण सारू वो निपट आंधो व्है। कमतरियो ई पेट रा पंपाळ पोखण सारू सोना, चांदी अर हीरा-मोत्यां रो थट लगावै, आपरा जीवण वास्तै ई वो मौत सूं इण विध

वाधेठी करै, वो ब्रुंण रा टकुडा वास्तै वो अमोलक गजांना री खोज करै। विग्यानी आपरै मगज री अटकळां सूं नित नवा अर अनोखा करतब रचै, पण उणरै अनोखा करतबां मे मन री ममता रो पूरो तोटो है। आपरी अकल रा उजास सूं वो सबस इण धरती नै उजागर करै पण वो खुद ई उणरा पळका सूं अमूझ नी व्है जावै, इण कारण मिनख रा दुख दरद नै वो देख नी सकै। मदारी रै बनमांन ढूंढो नै ठमकै वो अनोखा करतब दिखायनै इण धरती सूं कूच कर जावै।

इण धरती रो सांचलो भोगणहार तो कवि है। वो मन अर आत्मा सूं कुदरत रा रूप नै भोगै। तन रै वास्ते भोगै जको तो भुग्त कहावै मन सूं भोगणो ई तो भोगण रो साचैलो आणंद है। कुदरत नै भूख परवांण वरतणी' ओ तो देह रो तकाजो है। झाड़, वाटका, बिरछ, पंछी, जिनावर अर कीडा मकोडा ई इण विध तो कुदरत नै भोगै। इणमे किसी नवी बात। कुदरत री सुरंगी छिब निहारने मन मे रस लेवणो ओ साचैलो भोग है अर इण भोग नै पाछो आखरां में दरसावणो आ नवी सिरिट है। कवि इण जगती रो सिरजणहार अर साप्रत ब्रह्मा है।

(३)

मिनख नै कूंता तो—आध मे उणरो डील अर आध मे उणरी वाणी। वांणी रे मारफत आपरै मन री वात दरसाया विना तो मिनख रो अेक पल वास्तै ई कांम नी सरै। मिनख खुद वांणी नै जळम दियौ पण आज वाणी बिना वो खुद ई जीव नी सकै। वाणी मिनख रे जीवण रो आधार है अर कविता वाणी रो सबसूं ऊंचो नै पावन रूप है। कविता मिनख रो साप्रत मन है।

पैला अपणी रचना रे वगत हर सवद कविता हो। पण समाज मे परोटणा सूं सवद निरजीव वणता जावै। कवि आपरी भावना रा परस सूं वां निरजीव सवदां नै पाछा संजीवण करै। सबद पदारथ अर भावना रा प्रतीक व्है। पदारथ अर भावना सूं वांरो न्यारो रूप है। पण कवि आपरै कांमणगार परस सूं सवद मे पाछो परतख पदारथ प्रगट करै, सबदां मे सांप्रत

भावना दरसावै। कविता मे सबदां रे मागै-सागै विजळी व्है विजळी री कडक व्है, चांद व्है, सूरज व्है, वसंत रो सुरंगो रूप व्है, वादळा व्है, फूल व्है, फूलां री सोरभ अर वांरी सुळक व्है। कविता में कोरा सबद ई नी व्है, वांरा परतख पदारथ ई भेळा व्है।

कविता मिनख रो अनाद अर छूलो ग्यांन है। जिण दिन सूं मिनख इण धरती माथै अवतरियो, उणी दिन सूं कविता उणरै साथै प्रगटी अर जठा लग इण धरती माथै मिनख रो वासो रैवैला, कविता उणरै साथै रैवैला। मिनख सूं उणरो मन अर उणरी भावना अळगी व्है सकै तो उणसूं कविता रो विजोग व्है सकै। घणकरा अबूझ कह्या करै ओ कविता रो जमानो नीं विग्यांन रो जमानो है। जांणै कविता अर विग्यांन रै वरगा वैर व्है। कविता विग्यान नै आंख्यां, कांन अर भावना बगसैला अर विग्यांन कविता नै पग अर गति सूंपैला।

कांई इण विग्यान रा जमाना में मिनख रो अंत व्हैगौ? कांई विग्यांन मिनख री देह सूं उणरो काळजो काढ लियो अर उणरी भावना रो विणास कर दियो, जिणसूं के आज मिनख रे वास्तै कविता री की दरकार कोनीं। कांई मिनख रे जीवण सूं आज दुख, दरद हरख, नेह, उछाह, आणंद, क्लेस संताप अर मोह-परीत इत्याद भावनावां लोप व्हैगी? जको आज कविता रो जमानो कोनी। हर जमाना रो मिनख आपरै सारू जमाना रे माफगत ई कविता रा निरमांण किया करै।

(४)

पैला विग्यांन ई कविता ही अर कविता विग्यान ही, आज वो जमांनो फेर आयो के विग्यांन कविता बणै अर कविता विग्यांन बणै। पैला रिसी, पिंडत अर विग्यानी खुद कवि हा अर कवि रिसी, पिंडत नै विग्यांनी हो, आज वो जमानो फेर आयो है के रिसी, पिंडत अर विग्यानी कवि बणै नै कवि रिसी, पिंडत अर विग्यांनी बणै। आज रा विग्यांन री मोटी खोड़ आइज है के उणमे कविता रो रस कोनी अर दूजी कांनी कविता री मोटी खांमी आ है के उणमें विग्यांन रो ग्यांन कोनी। आंधा री गळाई विग्यांन नै परखां तो अवस अणूंतो अचूंभो व्है, पण जद अेक विग्यांनी री दीठ सूं परख करां तो

(ग) गीत री गुणीली धुन सूं ।
(घ) अरथ रा जाड़ सूं ।
(ङ) बुद्धि री अटकल सूं । ( )

१०. नीचे दियोड़ी खाली जगां नोटकां में दियोड़ा उचित सबदां सूं भरो—
(i) वाणी......री जीवण रो आधार है अर......वाणी रो सबसूं ऊंचो नै पावन रूप है । (मिनख । कविता)
(ii) घणकारा अबूझ कहया करै ओ......रो जमानो नीं......रो जमानो है । (कविता । विग्यान)

११. आशय स्पष्ट करो -
(i) कविता में कोरा सबद ई नीं व्है, वारा परतख पदारथ ई भेला व्है ।
(ii) कविता विग्यान नै आंख्यां, कान अर भावना बगसैला अर विग्यान कविता नै पग अर गीत सूंपैला ।

१२. कवि इण धरती रो साचैलो भोगणहार क्यूं कह्यो गयो है ? १०० सबदां में उत्तर दो ।

१३. 'इण कारण मिनख रा दुख-दरद नै विग्यानी देख नी सकै ।' ओ कारण किसो है ? ५० सबदां मे लिखो ।

१४. 'कवि इण दुनिया रो साख्रत परमेसर है ।' किंया ? स्पष्ट करो ।

१५. लेखक री द्रिस्टि सूं आज रै विग्यान अर आज री कविता री मोटी खोड़ कांई है ?

रचना, समालोचना अर अनुभव विस्तार सम्बन्धी :

१६. इण पाठ सूं करसा विग्यानी री महत्ता बतळावण आळी ओल्यां छांटो ।

१७. 'आज वो जमानो फैर आयो कै विग्यान कविता बणै अर कविता विग्यान वणै ।' जद विग्यान कविता अर कविता विग्यान बण जासी तद जमानां रो कांई रूप हुसी ? आपणी कल्पना सूं उण जमाना रो चितराम २०० सबदां मे मांडो ।

१८. इण पाठ नै ध्यान में राख'र आप अैडो निबन्ध लिखो कै 'वीर भोग्या वसुंधरा' री उक्ति सांची उतरै ।

२१. देसळाई

(श्री बुद्धिप्रकाश पारीक)

(श्री बुद्धिप्रकाश पारीक रो जनम सं० १९७९ मे जयपुर में हुयो । आप हिन्दी में एम. ए. रै सागै 'हिन्दी रत्नाकार' अर 'नाट्यालंकार' री उपाधियां भी हांसल करी । आप राजस्थान रै शिक्षा विभाग में अध्यापक है ।

श्री पारीक जी राजस्थानी रै हास्य-रस रै कवियां में अग्रणी है । आप दैनिक जीवण री मामूली वातां अर घटनावां नै ले'र समाज मे फैल्योड़ी कुरीतियां माथै तीखो व्यग्य कियो है । आपरी कवितावां रा प्रमुख संग्रह है—'चूंटक्या', 'चवड़का', 'कळदार', 'इन्दर सूं इन्टरव्यू'. 'तिरसा', 'मैं गयो चांद पर एक वार ।'

लाग्ला तीन-चार बरसा सूं आप राजस्थानी गद्य भी लिखण लागा है । व्यग्य निबन्ध लेखण में आपने आछी सफलता मिली है । 'नाक', 'देसळाई', साहू सम्मेलन', 'पेट्र' 'पावणा' इण रा उदाहरण है । आपरी भापा मुहावरेदार अर शैली रोचक है । इतिहास, पुराण अर लोकजीवण सूं चुण्योड़ी आपरी उपमावां सटीक बण पड़ी है अर इणासूं व्यंग्य घणो तीखो अर प्रभावी बण्यो है ।

सकळित निबन्ध 'हराबळ' वरस २, अंक ७ (मई, १९७२) में प्रकाशित हुयो है । इण निबन्ध में लेखक देसळाई रे माध्यम सूं समाज, राजनीति अर प्रशासन मे फैल्योड़ी कुरीतियां अर खुसामद करणिया लोगां पर व्यग्य कियो है ।)

देसळाई

(१)

डयोढ इंच लांबी'र पोण सूत पतली चीड़ की चोकूटी-सी सीक, जीका अेक मूंडा माले निनीमो मटमैलो-सो ममालो लाग्यो व्हे छै और ज्यो रगड़बो खा'र आग उगले छै, ऊनै लोग 'देसळाई' के छै। वारा सौ दीसवा मे या देसळाई, भलांई बीसवी सदी की ऊं फैसनपरस्त लुगाई-सी लागती हो, ज्यो आपका डील माले कपड़ा नाव को कई भी चीज नै राखतां हुया भी म था माळै तो नी किजो नाइलोन का नकली बाळा की मोटी-सारी पोट को, बोझ उच्या होली छै। पण, जो कदे आपा ईंका माइला मन सौ करयोड़ी करतूता नै ध्यान सैं देखां, तो आपा मे सैं कोई भी अस्यो कोनै, ज्यो आपका दांतां तळै आगळयां दाब्या बिना रै जाय।

मान-मरजादा र पेड़-पोत नै बचावा के ताईं तो या नाक की धिराणी आपका पिराण होम देवा मे चित्तौड़ की पदमणी नै भी पचासाँ पावडा पछाड़ी छोडयाई छै। खोतो पेटी का म्हेल कै बारानै पग मेलै कोनै, अर जो कदे मेल दे, तो मेलवा मे भलाई देर हो जाय, पण जोहर की जुवाळा सै खेलवा में देर हो कोने। 'आप डूबतो पाण्यो, ले डूब्यो जजमानै हाळो खेवत की जेया, या देसळाई भी आप तो बळै स-बळे ई, तीरवा नै भी बाळ्या बिना कोनै व्हे। चावै, तो दीयो जो र अंधेरा मे टपटेळा खाता लोगाँ नै सूधो घर को गैलो बता दे, चावै तो बीड़ी सिगरेट सिळगा र उबास्या ले-ले र मरोड़ा मारबा'ळाँ का आळकसाँ नै दूर भगा दे, चावै तो, चूलो चिता र कमर कै चिप्योड़ा पेट नै फुटबाल बणा दे और चावै तो चिनी-सा चूकताँ ई या ई देसळाई छान-छपराँ कै लाग र गाँव-का-गाँव नै होली कै अरपण कर दे। खेवा को मतलब यो क जण्डै या देसळाई लका सै निकळ'र आयोड़ी सीता की जेया आठयूं'र अगन परीक्सा देवा नै त्यार व्हे छै, उण्डै ई मोको मिलता ई आस्तीन को स्यांप बण र फुंकार मारवा सै चूकबो भी चोखो कोनै समझे।

(२)

देसळाई आपनै चोसठ घड़ी च.ई जाबाली चीजाँ मे असी घुळ-मिल गई

छै क आपां ई कै बिना अक पल भी कोनी जी सकां । पण जैयां आपणी आंख्यां मे मरयोडा सुरमू, आख्यां में होतां सांतर भी सूझै को‌नी, उय्यां में या देसळाई भी आंठू फेर आपणां हाथां मे व्हेर भी कदे आपणा विचारां की विसै वस्त कोनी वण सकी और आपां आज तलक भी या जाणि कोनी सक्याक आखिर या देसळाई छै कांई चीज ?

दुनियां की दूसरी बोल्यां में ईनै चाई क्यूं भी कह्यो जातो होय, पण असली अरथा मे तो ईको रूप राजस्थानी मे ई आ र निखरयो छै । और वो छै देसळाई । ई को अनवै हुयो सळ ई दे । बात भी सांची छै । या सळाई करो दीयो ई थोड़ो जोवैछै, ज्यो ईकै दीया को उपसरग जोड़ र दियासलाई व्हई जाय । या तो जितरी खुद का खीसा से पीसा काट र मोल विसावाळा मालधणी कै काम कोनै आवै, ऊंसै भी ज्यादा ऊंका आडोस्यां-पाडोस्यां नै मांगी देवा कै आवै छै । जीनै देखो, वो ई देसळाई कै ताई हाथ पसारयां ऊबो पावै छै । देसळाई कै तांई लोग बीडी-सिगरेटां नै आंगल्यां कै लगाया उय्यां ई भटकता डोलै छै, जीयां जवान अर कंवारी वेट्यां का वाप वर हेरवा नै । पुराणा जमाना मे तो लोग छोरी र छाछ मांगबो करै छा पण आज काल तो कबीर जी की या साखी सब की जीवां पै जमरी छै क—

मर जावूं, मांगू नहीं, छोरी, छाछ र नाज ।
देय सळाई, मांगतां, मनै न आवै लाज ॥

और आवै भी, तो कांई नांक सै आवै ? देसळाई मांगवा को तो लोग; बाल गंगाधर तिलक का सुराज की जीयां आपको जलम सिद्ध अधिकार मान मेल्यो छै । इतरो ई क्यूं ? आप यानै कदे देसळाई दे र तो देखो, काम काढ्यां पाछै पेटी नै ओठी सौंपवो भी यानै उय्यां ई याद कोनी है जीयां पेटी मे वोट पड्या पाछै विधायकां नै जनता गै करयोड़ा कोल और मरयोड़ा मरीज नै भी फीस नै छोडवाळा डाकदर की जीयां पेटी नै खीसा में मेल र स्यान सै खिसकता वणैला । पुराणी पोथ्यां में मंडी छै क—

'पुस्तकं, लेखनी, दारा पर हस्ते गता-गता ।"

पण मैं सूं छूं क देसळाई की पेटी पराया हाथां में पोच्यां पाछै, व्यवता वेटी की जीयां, बार-तिवार ई पीहर आवै तो आवै, नहीं तो परायो धन तो कहावै ई छै क ।

(३)

उण्डी के दान-दाता भी कोई में कमती कोनै । अै तो देसळाई का दाना नै सब दानां में सिरै मान र दे देवा में ई स्यान समझै छै । वाको गेंवो छै क वैसाख का म्हेना में बजार के बीच बरफ का सीळा पाणी को प्यावू लगावा सै ज्यो पुण्य कोनै होय, ऊसै भी ज्यादा आपका अफसर का आंगल्या में बरबस बळता र छटपटाती हुई सिगरेट के देसळाई लगा देवा सै सीजै ई हो जाय छै । जिदि तो आज काल, जोनै भी देखो, वोई लगा देसळाई, लगा देस-ळाई को मुहावरो ई रट मेल्यो छै । या बात दूसरी छै क, कोई तो दूसरा की दबी भी दोरा हो र लगावै छै. कोई आपको उल्लू सूधो करवा नै राजी हो र, कोई देसळाई लगा र नयो बेवार बांधे के तो कोई बध्यां-बंधाया बेवार क ई देसळाई लगा दे छै, पण लगावै सभी छै क्यूं क जैया सुरमा की सळाई बिना आस्यां फबै कोनै, प्लास्टिक की सळाई बिना ऊन खपै कोनै उय्यां ई अणजाण सै अणजाण नै भी देसळाई दियां बिना पार पड़ै ई कोनै ।

गंगा का पवित्तर पाणी को धार भलाई ऊपर सै नीचै बैती हो, पण देसळाई की लौ तो सदा ऊपरणी ई ऊठै छै । ज्यो जितरो ऊंचो हाकम हो छै, ऊकै ओर दूसरा खरचा भलाई बंध जावै, पण देसळाई को खरचो तो उतणो ई कम होय छै । काम सारू मिलवा-भेटवाळा देसळाई ई कांई पान-सिगरेट और चाय नास्तो तक ली र ल्यावै छै । अर जी कदे कोई, क्यूं, नै भी ल्याव, तो बारानै बेंच पर बैठया चिपड़ासी, थोड़ो ई मरगो छै कोड़ै । बस, बाबा पग तळै लाग्योड़ा बटन नै दाबवा की देर छै, अलादीन की चिराग हाळा जिन्द की जैया चिपड़ासी परगट हो र हुकम की बाट न्हाल्या बिना ई देस-ळाई जो र हाकमां कै ओड़ी उय्यां ई बधा दे छै जैयां जूवा में हारयोड़ा पांडव, दिरोपती नै कौरवां गै ऊबी कर दीनी छी ।

अब आप ई सोचो क अैयां हाकमां नै अेक दिन में आठ-दस बार भी सिगरेट सिलगाबा की भड़भक आ जाय तो, बापड़ा चिपड़ासी को तो होगो क दो ढाई पीसा रोजीना को न्हायाण । पण वो ई नुकसान नै भोग र भी दोरो होवा के बदलै ओठो राजो ई होवै छै, क्यूं साब नै सिगरेट सोंपवाळा

चिपड़ासी नै देसळाई पेटी पीली ही पकड़ायावै छै, जिदी तो मांईनै वड़ पावै छै, नहीं तो वारानै ई भटभेड़ा खावै छै। अब आप समझता होला क सिगरेट हाकमां कन्नै सीधो पौंचै छै र देसळाई चिपड़ासी को चक्कर खा र। पण पौंचै छै दोनूं हाकमां कन्नै ई।

(४)

आजको जुग देसळाई को जुग छै। देसळ ई हाळां नै दुनियां झुक-झुक र सलाम करै छै। देसळाई की सीक कै साटै सिगरेट सौंपता भी लोग सैमै कोनै बलकी ओंठा अपणे-आपनै सोभागसाळी समझै छै। देसळाई हाळा देस सैं लड़ता हमलावर उयूं ई घबरावै छै जीयां अड़वाळा खेतां मे वड़ता वन का जिनावर। क्यूं क देसळाई का मांथा में लुख्योड़ी आग और नारदजी की वीण मे लुख्योड़ी राग, दो न्यारी चीजां कोनै। ये, नै छिड़ै जिद तांई ई खैर छै. छिड़्यां पाछै जीं को लैर पड़ जाय, वो भलाई गाती ई फिरो क'लैरो छोड़ दे-देवरिया, थारी भाभी, लागूं, लेरी छोड़ दे।

पण दे रैतां तो लैरो छूटै कोनै। क्यूं क दे र देसळाई, दोन्यां की अेक ई रासी होतां हुया भी देसळाई दे सै जबरी छै। देसळाई चावै तो मिनख की दे छुडा पकै छै पण दे कै चायां देसळाई कोनै छूट सकै। या तो सळा माळै चढ्यां ई छूटै छै। क्यूं क सळो ऽ र सळाई या दोन्यां मे घणी-लुगाई को नातो छै। जीयां अेक लुगाई आपका जीवता घणी की तन-मन सै सेवा करतां हुयां भी मरया पाछै ऊकी लैर देळी सैं बारणै तक कोनै निकळै, उयूं ई या देसळाई भी काठ का वन का वन भला ई बाळ नाखै, पण सळा कै तांई तुल्योड़ा बारा मण काठ नै बाळबो ई का बस की बात कोनै। ऊ कै तांई तो वास्तै री चरी भर र मुरदा का घरां सै ई आवै छै।

मैं ई विसी कै ई देसळाई लगाऊं, ई कै पैली आप सै अेक बात और पूछ ल्यूं क-जी देस मे देसळाई तक दुभांत बरत्या बिना कोनै व्है, और तो और आनका बलीता तक के मूंडा देख र तिलक काढ़ै, अगरबत्यां की सकड़ बाळै फूलझड्या का फूलझाड़ै मन मे फूल जाय पण जिद चिता माळै चुण्योड़ा बुरवां

सै बापूयां पड़बा की भगत आवै, तो औसाण भूल जाय। बगलां झांकबा लाग जाय, अर निजरयां बचा र भाग जाय ऊ देस में समाजवाद को नारो कांई अरथ राखै छै।

हां देसळाई म्हानै या सीख जरूर दे छै क जीनै भी ई जगत में जीवतो रैणू होय वो समाज मे मिली जुल र साथ-साथ रहै, जे कदे बिछुड र न्यारानै फूट पड्यो तो या दुनिया देसळाई की तर रगड र राख कर नाखबा में कसर कोनी छोड़ैली।

अभ्यास रा प्रश्न

भाषा सम्बन्धी :

१. 'ई को रूप राजस्थानी में इ आ'र निखरयो छै, और वो छै दे सळाई। लेखक देसळाई रो कांई अरथ बतायो है ?

२. देसळाई नूं मुहावरो बण्यो है—देसळाई लगाणो।
नीचे दियोड़ा वाक्य में ओ मुहावरो दो अरथा में आयो है। आप अै दो अरथ बतावो -
कोई देसळाई लगा'र नयो वेवार चावे कै तो कोई वंध्या-
वध्या वेवार कै ई देसळाई लगा दे।
(i) (ii)

३. नीचे दियोड़ा मुहावरा नै आपणां वाक्या में इण भांत प्रयोग करो कै इणारां अरथ स्पष्ट हुई जावै-
हाथ पसारणो, उल्लू सीधो करणो, बगलां झांकणो, दांत तलै आंगल्यां दावणी, आस्तीन रो सांप।

४. इणा रा हिन्दी रूप लिखो—
देसळाई, पिराण, जुवाळा, अनवौ, सीख।

विषय वस्तु सम्बन्धी :

५. 'देसळाई हाळा नै दुनियां झुक-झुक र सलाम करै छै। अै देसळाई हाळा कुण लोग है ?
(क) हाकम। (ख) चिपड़ासी।

(ग) खुसामदी ।　　　(घ) सत्ताधारी ।

(ङ) भ्रस्टाचारी ।　　　(　　)

'देसळाई निबन्ध लिखण रो प्रमुख उद्देश्य है

(क) बीड़ी-सिगरेट रो प्रचार करणो ।

(ख) देसळाई रो महत्व बताणो ।

(ग, खुसामदी लोगा नै बढावो देणो ।

(घ) सामाजिक कुरीतियां रो वरणन करणो ।

(ङ) देस फैल्योड़ै भ्रस्टाचार पर व्यंग्य करणो ।　　　(　　)

देसळ ई आपनै कांई सीख दे ?

(क) जे काम निकालणो हुवै तो खुसामद करो ।

(ख) दुभांत बरत्यां बिना काम कोनी सरै ।

(ग) दूजो खरचो भलाई बधावो पण देसळाई रो खरचो कम करो ।

(घ) जगत में जीवतो रैणु होय तो मिलजुल'र साथ-साथ रैवो ।

(ङ) आप डूबौ तो लेरकां ने भी साथ ले डूबो ।

. नीचे दियोड़ा अधूरा वाक्यां नै इण पाठ मे आयोड़ी उपमावां सूं पूरा करो—

(i) देसळाई कै तांई लोग बीड़ी-सिगरेटां नै आंगल्या कै लगाया उय्यां ई भटकता डोलै छै, जैयां..

(ii) देसळाई मांगवा को तो लोग वाळ गंगाधर तिलक की जैयां ....

(iii) काम काढ्यां पाछै पेटी नै ओठी सौंपवो भी यानै उय्यां ई याद कोने र्हे जैयां..

(iv) देसळाई की पेटी पराया हाथां मे पोंच्यां पाछै, ब्यावता बेटी की जैयां..

(v) देसळाई हाळा देस सै लड़ता हमलावर उय्यां ई घबरावै छै, जैयां ....

९ देसळाई रै रूप रो चित्र'म ४० सबदा मे मांडो।

१०. देसळाई रै सदुपयोग अर दुरुपयोग रा दो-दो उदाहरण दो।

११. 'गंगा की पवितर पाणी की धार भलाई ऊपर सै नीचै ढौती हो, पण देसळाई की लौ तो सदा ऊपरणै ई उठै छै।' इण कथन सू लेखक काई बात कैणी चावै ? ५० सबदां मे उत्तर दो।

१२. 'सिगरेट हाकमां कनै सीधी पोचै छै र देसळाई चिपडासी को चक्कर खा र। पण पोंचै छै दोनू हाकमां कन्नै ई।'
इण कथन सूं हाकम अर चिपड़ासी रा सम्बन्धा पर कांई प्रकास पड़ै ?

१३. देसळ'ई का माथा मे लुख्योड़ी आग और नारदजी की वीण मे लुख्योड़ो राग नै लेखक एक क्यूं बताई है ?

१४. 'सळो अर सळाई या दोन्यां मे धणा-लुगाई को नातो छै।' इग नाता नै उदाहरण दे'र स्पष्ट करो।

रचना, समालोचना अर अनुभव-विस्तार सम्बन्धी :

१५ 'आज को जुग देसळाई को जुग छै।' आप लेखक रै इग कथन नू कठातांई सहमत हो ?

१६. लेखक देसळाई नै दो उपमावां दी है—
(i फंसनपरस्त लुगाई री।
(ii) चित्तौड़ री पद्मणी रो।
अे दोन्यूं उपमावा एक जात री कोनी। आप इणा रो औचित्य सिद्ध करो।

१७. लेखक इण पाठ में ठौड़-ठौड़ (i) राजनीति (ii) प्रशासन-व्यवस्था अर (iii) सामाजिक रीति-रिवाजां पर व्यंग्य कियो है। आप इणां सूं सम्बन्ध राखण आळा व्यग्य-अंश छांट'र अलग करो।

१८. इणा री अन्तरकथा लिखो—
(i) सीता री अगन परीक्षा !

(ii) चित्तौड़ री पदमणी रो जोहर ।

(iii) जुवा में हारयोड़ा पांडव ।

१६. आप इण पाठ नें ध्यान मे राखर 'अंनक' तथवा 'चाय' पर एक लेख लिखो ।

२२. राजस्थान अर उणरो जीवण-दरसण

(श्री सुमेरसिंह शेखावत)

(श्री सुमेरसिंघ शेखावत रो जनम सं० १९८९ में सीकर जिले रे सरवड़ी गांव में हुयो । आप हिन्दी में एम. ए अर बी. एड. री परक्षावां पास करी । आप राजस्थान रे शिक्षा विभाग मे अध्यापक है ।

राजस्थानी अर हिन्दी रा युवा साहित्यकार श्री शेखावत जी साहित्य री सगळी विधावां पर कलम चलाई है । आपरै लेखण पर दरसण अर मनोविज्ञान री गहरी छाप है । रुत-काव्य लेखण मे आप आछो नाम कमायो है । 'मेघमाळ' पोथी इण रो उदाहरण है । 'रावळै री रातां', 'रेवांडे रो चाव' तथा 'देवळ कंकाळी' नाम सूं आप उपन्यास अर कहाणी संग्रह भी वणाया हैं । आपरै लेखण में विचारां री मंडावट अर भाषा पर अधिकार सरावण जोग है ।

संकळित निवन्ध 'राजस्थानी निवन्ध संग्रह' सूं लियोड़ो है । इण में लेखक राजस्थान री प्राकृतिक विशेषतावां रै सागै मान-मरजादा अर आण-बाण पर मिटण आळा सूरां, संतां, सतियां अर कवियां री घणो भावपूर्ण प्रभावी चित्रण कियो है । राजस्थान री संस्कृति अर उण रै दरसण री व्याख्या करतां पाण लेखक गूढ चिन्तक बणग्यो है । तुकान्त गद्य खण्ड, उपयुक्त विशेषण, भावात्मक शैली अर प्रवाहपूर्ण भाषा रै कारण इण निवन्ध रो आधुनिक राजस्थानी साहित्य में अनूठो स्थान है ।)

राजस्थान अर उनण रो जीवण-दरसण

(१)

राजस्थान गुजवळियां री धरती, सतवंती पदमणियां री पिरथी अर वाणी रा वरद सुपूतां री जंगळ-मंगळ मरुधरा, जिण रै रुतबै रा निगर अम्बर सूं अडै अर माण री जडा पताळ मे वर्ड । जिनरा मानवी रौडा कै गुजावां पर भवानी नाचै वाणी मे सुरमत विराजै अर आतमा मे विस्वास री उदात्त भावना हिलोरा लेवै, जिण री कीरत-कथावा ख्यातां मे भणीजे अर वातां मे सुणीजे । वाण पर जीवै अर वाण पर मरै । वाणी रो ओज अर संगळाई इसी कै सीमविहूणा धड जूझै अर धड विहूणा मुंड मुळकै । रजपूती अर मजबूती रै भरोसै अ ये दिन भरण-निवार मनै अर जस-कीरत रा गायक जाचका नै माथां रै आन्वां री तिवारी घलीजे । वगत पड्या जोहर री चितावा नै दीवटिया वणा'र देह रा दिवला धरीजे, जा रै धप-धप दिपतै चांदणै मे जीवट रा अमर आखर लिखीजे । कथणी अर करणी मे अन्तर नी जीवण अर मरण दोनवा रो निस्काम भावना सूं वरण करै ।

राजस्थान रो लोक-जीवण हिवड़ै री धीर-मंथर भावना री रसधार सू सिंचीज'र तिरपत हवै अर उण रै वेग री वाढ़ मे अूफणं-छळकै । पण ओछा विचारां री खाज-खुदली नै खोरतो-खुजळातो कूकर री जूण नी जीवै । अपणै मोळै-माळै सुभाव रै अंध-विस्वासां री एकान्त गुफावां मे नाहर री निस्चिन्त निदरा में जरूर ऊंघै, पण झूठ-पाखण्ड री काळी खोहां में हिडकै ल्याळी री जियां भरणभट हुयो मुंडजतो कोनी फिरै । चापलूसी रै विस री लील उण रै रातै रगतमें कदे व्याप नी सकै ।

राजस्थान री धरती गोरा धोरां री, मगरै अर मोरां री । दिन मे अूकळै, रात नै ठरै । वा'रा वा'रा कोसां थळो री काळो खोड़ा अर हर्‌या-भर्‌या मेवाडी भाखर इण न जंगळ-मंगल वणावै । कदे आंथूणी कूंटां सूं काळी-पीळी आंधी आवै तो कदे उतराध कानी सूं घुमर घालती कळायण ऊमटै । सावण मे अठै री परकत ओढ़ी-पीरी नवल बनड़ी सी ओपै तो फागण मे आटी-पाटो ले'र सूती दुहागण सी लागै । सरद पुन्यू री रातां नें अठै री ऊनाळी राता मात

करै। बरसाळै री रुत छातां पर चढ़-चढ़'र मोर वारणा सा लेवै तो सीयाळै-ऊन्नाळै आकास में पगत बाँध'र उडती कुरजडयां री कतार बांदरवाळा सी बाधै। ऊनाळै री मांझळ रातां गेल बगता कतारियां रै सुरां में 'सोरठ' अर 'निहालदे' रा गीतां सूं गूँजे तो रेवड़ां रा टणमण बाजता टोकरा सूनसट्ट दो'पारी रै सन्नाटै मे मुखर बणावै। झांझरकै री वेळा झाझां सी झणकै ज्यूं मुखा-तिसाया टाबर ठणकै, जाणै रीता घड़ा झबळकै तो, सझ्या रै समै मिंदर-देवरा झालर अर नगारां सूं गरणावै जद जाणै असाढ़ रा बादळा गाजै। बूंदी रा नवहत्था नाहर, सुलखणा नागोरी खांप रा बैल्या अर बीखां बैवणा बीकानेरी ऊंट मारू-भोम रै सूरापण, सील अर मदमस्ती रा परतीक। पाणी पताळां पण पीवणियां रै जीवट रा सीस-सिखर आकासा डीघा। गाव-गांव में देवळया, काकड-कांकड पगल्या सतियां अर जूझारां री जस-गाथावां कैवै। कण-कण रगत-झकोळ्यौ अर पग-पग तलवारां मिणियो, जिणां रो कोई जवाब नी। जुना जूनो, खळां सूती, बंजड-पड़ती, ऊपर-उजाड़ आ राजस्थान री धरती, जिण रो पत-पाणी मातूं समदरा रो जळ सोसणिया अगस्त रिसि रै भी गळै मे अटक जावै। ई वास्तै आ रणबंका भुज-बलियां री धरती अर जोहर करण-वाळो पदमणियां री पिरथो बाजै।

(३)

राजस्थानी नर-नाहर मरदानगी रो महारथी, पुरसारथ रो हिमायती, बीरता में बेजोड ! सूरवों इसो कै मरणै मर जावै पण पीठ नीं दिखावै। सुगरापण री मरजाद राखै अर नुगरो नी बणै। आपणां अगै अपूठो पण अरियां सामो आघो। रजवट री रीत जीवट रै भरोसे जीवै-मरै। अपणी सीव रुखाळै अर परयी टाळै। जिण रो निपज्यो अनजळ भोगै उण धरती माता री हदां पराये पगां उलांघण नी देवै। जिण जामण रा बोबा चूंघै उण रै दूध नै नीं लजावै। बांकड़ली मूंछा पर पाण पटके तो जाणै काळ रा केस खीच रयो होवै कै उणां रै एक-एक बाळ री कीमत कूंत रयो होवै, दाढ़ी पर हाथ फेरै तो जाणै जवानी अर खानी रो पाणी परख रयो होवै कै बुढ़ापो आयां पैली मरण रो ओसर ढूंढ रयो होवै। केसरिया बागो, कसूमल पाघ अर हथियारां

सूं लैस अर असवारी नै पुगलो-ओ राजस्थानी वीर रो परम्परागत रूप मानवे। माथा रै मोल हार-जीत रो निरणै होवै। भरोसो करै तो गुजाधा रो, पण विस्वास मे आ'र कंठ कटानो भी पाछो नी सरकै। हिम्मत रै पाण धरती लाटै अर मेनत-मजूरी रै बूतै भाग रो काटै, पण ओसर सारू राते रगत सूं होळी खेलतां भी नी झिझकै। संतोसी सभाव, पण अड जावै तो आगलै नै छटी रो दूध याद दिरा'र मानै। महाभारत रा वीरा री आतभावां रा जे कठै दरसण हुवै तो राजस्थानी मे। वालू रेत री जिया ठंडो घणो तो गरम होतां भी जेज नी लागै। नर ही काई, नाहर, ज रजपूती अर मजबूती नै वेरी भी सरावता-सरावता नी अघावै। की रो सावंत उण री पूरी वजावै।

राजस्थानी रमणी-ऊनाळै रै तावड़ै मे तपै अर लूवा लागै तो उण री कपळी काया छुईमुई री ज्यूं कुमळावै पण चिता री अगनी रै धधकबोज मे गंगा-सिनान रो आणंद लूटै तो रूं-रूं हुळसै अर निखरै। घूंघटियेरो पल्लो उघाड़ै तो सोळा सूरज ऊगै अर अंधारो घर सैंचनण हुवै; पण बिकराळ वण र कोप करै तो रणचण्डी सी लागै। रीझै तो चन्द्रकांतमणि सी द्रवै अर खीझै तो सामी झाळ री देखै। तूठै तो सरबस वारै अर रूठै तो दुनिया समेत बदळो ले। पत रै पाणी सत री काती न्हावै। जिण रै सूं वै लिलाड सुहाग री बिन्दी जाणै भोर रै आकास मे सुकर तारो धप-धप दीपै। गोडा ताणी झूलती वेणी जाणै बासक नाग उण री सील-सम्पदा री रुखाळी कर रयो हुवै। कटीला नैण, जाणै सपैंती रै मिस सत नै उजाळै, ललाई रै व्याज नेह री लाली रचावै अर कालिमा रै वहाने धीरता अर गंभीरता री गहराई जतावै। बांफणां भंवारा रो परस करै जाणै उड़ण नै आंतुर भंवरां री पंखड़ियां हुवै। गोर-निछोर चन्द्र-वदन सूं सालीनता फूटै जाणै सरद पूनम री चान्दणी निरख री हुवै। सोळा सिणगार कर'र मयरी चाल चाली तो मस्ती रा हस्ती मारग छोड'र निरखै। जिण रै आंचळ रै दूध री धार सूं चट्टांण फाटै अर पीवण वाला नर-सिंघां री दहाड़ सूं अरियां रा काळजा बैठै। आं पदमणियां रा जोहर इतिहास मे अनूठा अर बेमिसाल। नारी कै ना'री। अबळा नही सबळा। एक माटी री अनेक काया जाणै ममता री मूरत री सरबव्यापी छाया, पण मायाम्रही जाया। पदमणी भी, चनणा भी। कामना भी अर जामण भी।

जिण रै दूध री तासीर संजीवणी सगती जिसी अर सील री मरजाद लिछमण रेखा जैड़ी-वा राजस्थानी रमणी।

(४)

राजस्थानी रिचाकार अर कवि, रवि री किरणां री जठै पैठ नीं होवै, उणै पूगै अर भावना रै अथाग रतनाकरमें चुबकी लगा'र भावां रा लाखीणा मोती सोधै ई वास्तै वां री बोली नैं लाखीणा बोल कैवै। जां री वरद वाणी मुरदां नैं जगावै अर जीवतां नैं अमरता रो मारग बतावै, वै तलवारां सूं वेरिया रो निमाण कर'र सूरापण री साख निपजावै अर वीरता री भभकीणो रस धार सूं सींच'र जीवण रा अमर-फळ पैदा करै। कलम, खड़ग अर विस्वास रा धणी अर प्राणां रा बागी मौत रै मारग जा'र जीवण री मजलां पूगै। बाणी में सुरसत, भुजावां में भवानी अर आतमा में असीम री अणहद आणद निवास करै। जीवट रै गायक अर समर भोम रै नायक कवि री कविता पागल रो परळाप कोनी, आतम रो उतकर्स हुवै। वाणी जीभ पर बैठ'र सांसां री सरगम पर जग-जीवण नैं सरसावै। वीर, सिणगार अर करुण रसां री तिरवेणी सो वां रो साहित जिकै में अवगाहण करणिया इण लोक में निस्काम भावना रै करमजोग री प्रेरणा लेवै अर परलोक भी सुधारै। राजस्थान रा अे समरथ गायक ऊंचे सूं ऊंचे सुरां में जग-जीवण री सचाई नैं परगट करै जिकी स्रोता रै मरम नैं सीधी परसै। वारै वाक्-बाणां रो निसानो अचूक प्रण अमर संजीवणी रो। पनो नहीं ऐड़ा किताक ईसरदास, पिरथीराज अर सूरजमल सारखा नखतर आपरी किरत्यां रै साथै ढळया अर विसराया। अजंणा करणे वां रो धरम अर सार-समाळ राखणो पाछली पीढ्यां रो फरज। और देसां में इण्या-गिण्या कवि हूया तो अठै पूरी जमात अर जात-चारणां अर बारठां री जां रै वीर-रस रै सहित री टक्कर रो साहित बिग्री दूजी भासा में सिरज्यो नीं गयो। कवियां री इण जमात रो काम बळिदान अर विस्वास रा संस्कार जण-जण में जगाणो जिकै नैं अे पूगी तरै निभायो।

(५)

तो, तलवार री धार पर जीणो, बळिदानी भावना रो आसव पीणो अर

रातो रगत री रण-गंगा में सिनान कर'र तातो लोही सूं पुरखां रो तरपण करणो राजस्थान रो परम धरम अर चरम उद्देस रयो। जिणरी निजरां में—'कर ले सो काम अर भज ले सो राम', काम अर राम री इण सीधी-साधी अर बेलाग परिभासा में राजस्थान रै जीवण-दरसण री सम्पूरण भावना झळकै। स्यात काम अर राम री इती व्यापक व्याख्या संसार रा दूजा दरसण-ग्रंथां में नी मिळै। गीता अर उपनिसदां रै 'करमवाद' 'ईस्वरवाद' दोनवां नै दो पदां में सजो देणो राजस्थानी दारसणिक रिचाकारां री सामरथ-नै भलीभांत परगट करै। गीता अर उपनिसदां रै दरसण नै सरल अर सरस बणा'र अठै रो लोक-मानस अपणायो। काम तो जिको करणं जोग अर राम बो जिकै नै अंतरातमा मानै। काम करणो सूं लोक अर राम नै भजणो सूं परलोक सुधरै। काम करण रै साथै राम नै भी भजो तो सोनो'र सुगंध। 'करले सो काम'-रो अरथ ओ भी कै काम बुरो कोनी, अलबत करता भलां ही बुरो बाजो। काम अर अकाम रो भेद अपणी-अपणी धारणा अर विस्वासां मुजब हुवै। इण भांत भलै-बुरै रो निरणै करता रै विवेक पर छोड़'र राजस्थानी दरसण री आ रिचा करम नै महता देवै। 'भज ले सो राम'-रो मतलब ओ कै आस्था रो ही नांव ईस्वर-फेर कांई ओ'र-कांई वो, मन मानै सो। पण पतै री बात आ कै इण रिचा रो पैलड़ो पद नास्तिक भौतिकता अर दूसरो आस्तिक अध्यात्मवाद री न्यारी-न्यारी भावनावां पर बळ देवै जद कै ग्यान अर आस्था रो समन्वय ओर भी चोखो रैवै। सारा मतमतातरां सूं परै इण रिचा री व्यापकता अर सूझ-बूझ रै पाण आ निस्पक्ष मानता राजस्थानी रिचाकारां नै गूढ चिंतन अर दूरदेसां रा धणी दारसणिकां री पैलड़ी पंगत में ल्या खड़्या करै।

अभ्यास रा प्रश्न

भाषा सम्बन्धी :

१. नीचे दियोड़ा सबदां रा विलोम सबद लिखो—

रीझणो, दुहागण, तावड़ो, तूठणो, अवळा, मुरदो।

२. नीचे दियोड़ा सबदा रा हिन्दी रूप लिखो—

आखर, तिरपत, निरथी, सुरसत, सीव ।

३. नीचे दियोड़ा सबदां रो अरथ-भेद वाक्यां रै प्रयोग सूं स्पष्ट करो—

(i) ख्यात । वात । (ii) कथणी । करणी । (iii) झूठ । पाखण्ड ।

४. इण सबदां रो संधि-विच्छेद करो—

रतनाकर, परोपकार, परमारथ; समन्वय, निस्काम ।

विषय-वस्तु सम्बन्धी :

५. 'जी रो खावै उणरी पूरी बजावै ।' इण कथन सूं वीर रै चरित री कांई खूबी प्रगट व्हे ?

(क) सूरवीरता । (ख) कर्तव्यपरायणता ।
(ग) स्वामिभगति । (घ) ईमानदारी ।
(ङ) दुनियादारी । ( )

६. रवि री किरणां री जठै पैठ नी हांवै, उठै कुण पूगै ?

(क) कवि । (ख) वीर ।
(ग) देसभगत । (घ) स्वाभिमानी ।
(ङ) प्रेमी । ( )

७. लेखक री द्रिस्टि सूं राजस्थान रै जीवण दरसण री सम्पूरण भावना किण उक्ति में झलकै ?

(क) जीं रो खावै उण री पूरी बजावै ।
(ख) हिम्मत रै पाण धरती लाटै अर मैनत मजूरी रै बूतै जमारो काटै ।
(ग) जिण जापण रा वोबा चूंघै उण रै दूध नै नी लजावै ।
(घ) कर ले सो काम अर भजले सो राम ।

८. नीचे बाईं ओर राजस्थानी रमणी सूं संबंधित उपमेय वाक्य अर दाईं ओर उणारा उपमान दियोड़ा है । उपमान क्रम सूं नीं दियोड़ा है । आप वाक्यां रै सामी यथोचित उपमान रो क्रमां लिखो ।

उपमेय	सही क्रमांक	उपमान
१. सुहाग री बिन्दी		१. मेह री झाली
२. झूलती वेणी		२. गंभीरता री गहराई
३. उघाड़ो मूंडो		३. रात रो उजाळो
४. नैणां री सपेती।		४. उगतो सूरज
५. नैणा री ललाई		५. सुकर तारो
६. नैणा री कालिमा		६. वासक नाग

९. राजस्थान री धरती री विशेषतावां पर २०० सवदा मे एक निवन्ध लिखो।

१०. राजस्थान रै लोक-जीवण री कांई खूबी है ? १०० सबदां मे लिखो।

११. 'रजवट री रीत जीदट रै भरोसै जीवै-मरै।'
आ रजवट री रीत कांई है ? ५० सबदां मे लिखो।

१२. 'ओ राजस्थानी वीर रो परम्परागत रूप-सरूप।' ओ रूप किसो है ? ५० सबदा मे लिखो।

१३. 'कामण भी अर जामण भी।' इण कथन सूं राजस्थानी रमणी रा किसा दो रूप प्रगट व्है ?

१४. राजस्थानी कवियां री विशेपतावां पर १०० सवदां मे एक लेख लिखो।

रचना, समालोचना अर अनुभव विस्तार सम्बन्धी :

१५. इण पाठ नै पढ'र आपरै मन मे जीका भाव उठै, उणां नै २०० सवदां मे लिखो।

१६. पण पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखो—
(i) लिछमण रेखा। (ii) पगल्यां
(iii) जोहर-प्रथा (iv) सती-प्रथा।

१७ इणा रै विषय मे जाणकारी करो
(i) सोरठ अर निहालदे। (ii) पद्मणी अर चनणी।
(iii) ईसरदास, पिरथीदास अर सूरजमल।

18. नीचे दियोड़ा संकेतां माफक इण निवन्ध री विशेपतावां छांटो—
   (i) ओपती उपमावां
   (ii) उपयुक्त विशेपता
   (iii) तुकान्त गद्य-खंड
   (vi) भावात्मक शैली।

२३. हाडै सूरजमल री बात

(मुंहणोत नैणसी)

(नैणमी मुंहणोत रो जनम सं० 1667 मे हुयो। आप रा पिता श्री जयमलजी जोधपुर राज्य रा मंत्री हा। नैणसी री माता रो नाम सरूपदे हो। आप घणा उत्साही अर वीर प्रकृति रा मिनख हा। 22 वरसां री ऊमर मे ही नैणसी राज री सेवा में लागग्या। आपरी मेवा-भाव अर कर्तव्यपरायणता सूं जोधपुर नरेश महाराजा गजसिंह जी अर महाराजा जसवंतसिंघ जी घणा खुस हा। आप री बुद्धिमता अर वीरतां सूं प्रभावित होय'र महाराजा जसवंतसिंघ जी आपनै दीवान वणाया। सं० 1727 में आप देवलोक हुआ।

नैणसी वीर होणे रे सागै नीतिनिपुण, इतिहासप्रिय, विद्यानुरागी अर कवि भी हा। टावरपणा सूं ही आप नैं इतिहास में गहरी रुचि ही। इणां रा लिख्योड़ा दो ग्रंथ मिले है—'नैणसी री ख्यात' अर 'जोधपुर राज रो सर्वसंग्रह' (गजेटियर)। ख्यात मे राजपूताना काठियावाड़, कच्छ. मालवा, वघेलखंड, आदि राजवंशां रो इतिहास है। सर्वसग्रह मे अलग-अलग परगनां अर ठिकाणां री आछी जाणकारी दियोडी है।

सकळित अंश 'नैणसी री ख्यात' सूं लियोड़ो है। इण में वून्दी रै हाडा सूरजमल अर चित्तौड़ रै राणा रतनसी री कथा है, जिणमें राणा रतनसी री ईर्ष्या अर वदले री भावना तथा सूरजमल री वीरता अर दानपणा रा मूंडे

बोलता भिन्न है। नैणसी री भाषा तत्कालीन राजस्थानी गद्य री प्रौढ़ अर परिमार्जित नमूनो दरसावै।)

हाडै सूरजमल-री वात

(1)

राणो सागो रायमलोत चीतोड़ राज करै छै। टीकायत बेटो रतनसी, राठोड़ धनाई-रै पेट-रो, छै। राणो सागो पछै हाडी करमेती, हाडा नरवद-री बेटी, परणियो थो। सु राणो करमेती-सूं घणी मया करै छै। पछै करमेती-रै बेटा दो हुवा विक्रमादित, उदैसिंघ। तिणां-नूं राणो घणी मया करै गं।

नु अेक दिन दीवाण-सूं करमेती अरज कीवी—दीवाण घणा दिन सलामत रहै, पिण विक्रमादित, उदैसिंघ नान्हा छै, रावळै टीकाइत साहबी-रो धणी रतनसी छै। राज बैठां कांइक इणा-रो सूल करो तो भलो छै। तरै राणै पूछियो—थे किण भांत अरज करो छो? तरै करमेती हाडी कह्यो—इणा-नूं रिणथंभोर सारीखी ठोड़ रतनसी-नै पूछ-नै दीजै नै हाडा सूरजमल सारीखा रजपूत-नैं बांह झलायीजै। आ वात दीवाण-हो कबूल करी।

सवारै दीवाण जुड़ियो, तरै कंवर रतनसी-नूं राणै सांगै कह्यो—विक्रमादित-उदैसिंघ थारा लोहडा भाई छै, तिणां-नूं अेक पग-ठोड़ दीनी चाहीजै। सु राणो वडो दूठ ठाकुर छो, सु रतनसी क्यूं फेर कहि सक्यो नही। कह्यो—रावळै विचार आवै सु ठोड़ दीजै। तरै राणै रतनसी-नूं कह्यो—रिणथंभोर इणां-नूं दो। तरै रतनसी कह्यो—भला। तरै राणै विकमादित-उदैसिंघ-नूं कह्यो—म्हे थां-नूं रिणथंभोर दियो, थे उठ तसलीम करो। तरै इणे तसलीम करी।

तरै हाडो सूरजमल दरबार बैठो थो। तरै राणै सांगै सूरजमल-नूं कह्यो—म्हे विक्रमादित-उदैसिंघ-नूं रिणथभोर दा छां, सु थे इणां-री बांह झालो, अै म्हे थांहरै खोळै घातां छां। तरै सूरजमल कह्यो—म्हारै इण बात-सूं काम कोई नही, हूं चीतोड़ टीकै बैसे जिण-रो चाकर छूं, म्हारै इण-सूं कोई तलो नही। तरै राणै सागै वळै घणो हठ कर कह्यो—अै डावडा नान्हा छै।

थांहरा भाणेज छै, बूंदी-सूं रिणथंभोर निजीक छै, तू भलो रजपूत छै, तद इणां-री वांह तो-नूं झलावां छां ।

सूरजमल अरज कीवी—दीवाण फुरमावो सो तो सिर-माथा ऊपर, म्हे हुकम-रा चाकर छां, पिण दीवाण-नूं सौ वरस पौंहचै तरै म्हां-नूं रतनसी मारण-नूं तयार हुवै, तिण वास्तै म्हां-सूं आ वात दीवाण-रै कहे हुवै नहीं, नै रतनसी-जी फुरमावै तो वात अलादी छै, तरै राणै रतनसी सामो जोयो । रतनसी कह्यो सूरजमल-नूं—थे दीवाण हुकम करै सु करो, औ म्हारा भाई छै । थे म्हारा सगा छो, रजपूत छो म्हे था-सूं बुरो मानां नहीं । तरै सूरजमल दीवाण कह्यो त्यूं कियो । राणै सांगै रिणथंभोर विकमादित-उदैसिंघ-नूं दियो। इणे जाय अमल कियो ।

हाडो नारायणदास मूवो तरै राणै सांगै सूरजमल-नूं टीको मेलियो, लाल-लसकर घोडो अँराकी कीमत रु० वीस हजार, हाथी मेघनाथ कीमत रु० साठ हजार-री-रो दियो । राणो सांगो हाडा सूरजमल-थी बेटां-थी इधको प्यार करै छै । आ वात अठै-ही रही ।

(2)

तठा पछै कितरा-अेक दिने राणै सांगैकाळ कियो । टीकै रतनसी बैठो । हाडी करमेती आप-रा बेटां-नूं ले रिणथंभोर गयी । रतनसी-री छाती गाहे रिणथभोर भावै नहीं । पूरबिया पूरणमल-नूं रिणथभोर मेलियो । कह्यो—थूं विक्रमादित-उदैसिंघ-नूं तेड़ लाव । तरै श्रो रिणथंभोर गयो । तरै हाडी करमेती कह्यो—अै तो डावडा नान्हा छै, इणां-रो जवाब सूरजमल जी करसी। तरै ओ बूंदी सूरजमल-जी कनै गयो। जाय-नै कह्यो राणै रतनसी विक्रमादित-उदैसिंघ-नूं तेडाया छै, सु वै कहै छ, मांहरो जवाब सूरजमलजी करसी। तरै सूरजमल कह्यो-म्हे-हीं आवा छां, तरै दीवाण-सूं हकीकत मालम करस्या ।

तरै पूरणमल चीतोड़ आयो । राणै हकीकत पूछी । तरै इण-कह्यो - वै तो घणूं-ही आवै पिण सूरजमल आवण दे नहीं । तरै रतनसीं-रै डील आग लागी । आगै पिण टीका-रो सूरजमल हाथी अेक, घोडो अेक, ले आयो थो,

सु रतनसी रासिया नहीं। कह्यो-राणै मांगै तो-नूं लाल-लसकर घोड़ो, मेघनाद हाथी, टीकै दिया सु मो-नूं दे। इण कह्यो—हूं क्यूं जाट-पटैल थो नहीं, सु चारण दिया था, सु हमै पाछा मागिया द्यूं ? बात करतां वारै हुयी। राणो रतनसी सूरजमल-नूं मारण-रा दाव-घाव करै छै।

(3)

तिण समै चारण भाणो मीसण जात-रो, गांडां-रो बारहठ, चीतोड़-रै गांव गढ़-कोदमिरै रहै छै। सु नांवजादी चारण छै। वडी आवरा-रो करण-हार छै।

सु भाणा-रा जजमान गोड़ छै। बूंदी-रा चाकर छै। तिणां कनै जाय छै। मास अेक दुय मास उठै रहै। तरै भाणो हाडा सूरजमल-रै पिण उठै जावै, तरै मुजरो करै। गुणे-गीता गावै। तद सूरजमल घणी मया करै छै।

अेक दिन सूरजमलजी कह्यो भाणाजी। हालो, सूरां-री सिकार जावां। भाणो नै सूरजमल सिकार सूरा-री गया बीजो साथ हाकै मेलियो। भाणो नै सूरजमल दोय जणा-हीज हुता सूर तो हाथ नाया नै दोय रीछ आजाजीत आगे-पाछै आया। इपड़ा कदे आंखियां-ही दीठा नहीं जिणा दीठा मरीजै। सु सूरजमल उण-सूं बाधां हुवो। अेक कटारी-सूं मार पाडियो। तितरै दूजो आयो। उण-नूं-ही उण-हीज भांति मारियो। भाण-नू वडो इचरज आयो। सु भाणै कह्यो—थे कासूं कियो ? तरै कह्यो-कासू करा ? भाडां णळैं पडिया। पछै पाछा आया। भाणै गीत-गुणे सूरजमल-नूं रीझावियो। तरै सूरजमल जाणियो—लाल-लसकर-घोड़ो नै मेघनाद हाथी लारै गणो पडियो छै। सु माहरा परधान-रजपूत मो-नूं दवाय-नै राणा-नूं दिरावसी, तो हूं भाणा सरीखा पात्र-नै दे-नै अमर करूं। घोड़ो हाथी दोनूं भाणा-नूं दिया। भाणा-नूं वड़ी मौज दे, लाख दे, विदा कियो।

सु राणा-रो डेरो चीतोड़-थी कोस दस सिकार रमण-रै गिस कियो छै। मन माहै सूरजमल मारण-रो मतो छै। राणी पवार, रावत करमचंदरी बेटी, साथै छै। सु भाणो उठै आयो दीवाण-रै मुजरै। तरै दीवाण पूछी—कठै हुता ? भाणै अरज कीवी—बूंदी हुतो। तरै रतनसी कह्यो—सूरजमल-री

वात कही । तरै घणा सूरजमल-रा वखाण किया । तरै राणा-नूं सुहाणो नहीं। भाणो समझयो नही, जु राणें इण-मूं इतरी कु-मया करै छै । तरै राण पूछियो—इतरा मूरजमल-रा वखाण करो छो सु इनगे सूरजमल में कासूं दीठो ? तरै भाणें रीछां-री वात मांड कही नै कह्‌यो—दीवाण । सूरजमल इसको रजपूत छै सु जिको उण-नूं मारै सू कुसळै न जाय । तरै राणै इण वात ऊपर वोहत भाणा-सूं वुरो मानियो ।

तितरै किणी-अेक भाणा-नूं पूछियो—थे इतरो सूरजमल-रो जस करो सु हमार थां-नूं कासूं दियो ? तरै कह्‌यो—मो नूं लाल-नसकर घोड़ो, मेघनाद हाथी, नै लाख पसाव दियो । तरै राणा-रै वळै जोर आग लागी । भाणा-नूं कह्‌यो—थे माहरी हद-में मत रहो, थे वूंदी जावो ।

तरै भाणो पूंछ झाटक ऊठियो । पाछो वूंदी-नै हालियो । तठा पहली आ खवर सूरजमल-नूं पोहती । सूरजमल सामा आदमी भाणा-रै मेलिया । घणो आदर कर तेड़ हिरणामो गांव सासण कियो, घोडा हाथी, लाख-पसाव, घणोई द्रव्य दियो । कह्‌यो – महारो भाग । दीवाण मो-सों वडी मया करी, भाण सरीखो पात दियो ।

(4)

सु राणो सिकार खेलतो-खेलतो वूंदी दिसा आवै छै । सूरजमल कनै आदमियां ऊपर-आदमी आवै छै-सताव आवो । सूरजमल जाणै छै-जाऊं क न जाऊं ?

तरै अेक दिन माजी खेतू राठोड़-नै पूछियो-मो-नू राणा-रा आदमिया-ऊपर आदमी तेड़ा आवै छै, मो-सूं राणो वुरो छै, मो-नूं मारसी, कहो तो विग्रो कर राणा-नू हाथ दिखाऊं ? तरै मा कह्‌यो—इसड़ी वात क्यूं कीजै ? आपै इणां-रा सदा चाकर छां, इसड़ी तो आज पहली आपां सूं वुरी कोई हुई नहीं जो राणो तो-नूं मारसी तो-ही सताव राणा कनै जावो, घणी चाकरी करो । तरै सूरजमल राणा कनै गयो ।

गोकह्‌न-रै तीरथवाळो वाजणो गांव वूंदी-चीतोड़-री गडासंघ छै । तठै

2. नीचे दियोड़ा मुहावरां नैं आपणां वाक्यां में इर भांत प्रयोग करो के इणारा अरथ स्पष्ट हुई जावै—

   बांह झालणी, सौ वरस पोहचणो, काळ करणो, हाथ दिखाणो, लोह करणो ।

3. इण पाठ मे केई अरबी-फारसी सबद आया है । उणारी एक फेरिस्त बणावोजिया—ररज, सलामत, तसलीम आदि ।

4. 'सु राणो करमेती सूं घणी मया करै छै ।' इण वाक्य मे 'मया' सबद रो सही अरथ है—

   (क) प्रेम (ख) खुसामद
   (ग) मोह (घ) विनती
   (ङ) विसवास ( )

विषय-वस्तु सम्बन्धी :

5 हूं क्यूं जाट-पटेल थो नही, सु चारण दिया था, सु हमै पाछा मॉगिया दूं ।' सूरजमल रै इण कथन सूं उण रै चरित री कांई विशेषता प्रगट हुवै ?

   (क) स्वाभिमान (ख) निडरता
   (ग) उच्छृंखलता (ध) लापरवाही
   (ङ) गुस्सेलपणो । ( )

6. 'भाण नूं वडो इचरज आयो ।' चारण भाणा नैं ओ इचरज किण बात पर आयो ?

   (क) रीछां रै विकराळ डील-डोल पर ।
   (ख) सूरजमल रै अणूंतै सूरपणा पर ।
   (ग) रतनखी री नाराजगी पर ।
   (घ) सूरजमल रै दानपणा पर ।
   (ङ) खुद रै गुणे-गीतां पर । ( )

7. 'सु अैक दिन दीवाण सूं करमेती अरज कीवी।' करमेती राणा सांगा नै कांई अरज करी। 50 सवदां में लिखो।

8. राणै सांगो सूरजमल नै टीकै में कांई दियो ? 20 सवदां में उत्तर दो।

9. 'राणो रतनसी सूरजमल नूं मारण रा दाव-घाव करै छै। अै दाव-घाव किसा हा ? आखर में इणां से कांई नतीजो रह्यो ? 70 सवदा में लिखो।

10. राणै रतनसी चारण भाणा नै आपरै राज री हद सूं बूंदी जाणै रो हुकम क्यूं दियो ?

11 'काळ रा खाधा हमी पाणी पी सकै नही।' सूरजमल री इण उक्ति रा भाव स्पष्ट करो।

12 सूरजमल अर रतनसी रै आपसी जुद्ध रो वरणन 80 सबदां में करो।

रचना, समालोचना अर अनुभव-विस्तार सम्बन्धी :

13. सूरजमल री सूरवीरता अर दानवीरता रो एक-एक उदाहरण दो।

14. सूरजमल अर रतनसी रै स्वाभाव री तुलना करो।

15 'ओ सूअर म्हे दीठो, उण रो नाव थे मत ल्यो।' जे राणो रतनसी पंवार राणी री आ वात मान लेतो तो कांई स्थिति हुवती ? आपणी कल्पना स 100 सबदां मे लिखो।

16. इण वात मे चारण भाणा रै प्रसग सू राजस्थानी सस्कृति री जै विशेपतावा प्रगट हुवै उणां नै 60 सवदां मे लिखो।

17. 'मुंहता नैणसी री ख्यात' में वीर री अैडी घणकरी वातां दियोड़ी है। जै आपनै रुचिकर लागै तो उणानै पढ़ो।

इतरा माहे बोलियो रातो कुंवर, दूणगो मधुकर। (औ नो कहै —) जळावोन रिण-संमद माहे असि-जिहाज धरां, किं वां गंगा मारि पारि करां, मरां तो अपधरा वरां, नहीं तो जीवित सिंग हुय ऊबरां।

(3)

बारहठ कहै—बाप हो बाप। बाप-रै जोड़ै अतुलीबळ, भलो चाड़ियों बाळ घमळ। महाराज विमाह-रै आगम मगळ-धवल थंभाड़ची कीजै। पिण औ सहाभारथ-रो आगम। अेक वार सूरा पूरा-रा अवसाण-सिद्ध खत्रिया-रा, वड़ा राग माहे वडा दूहा गवाड़ो, ज्यूं सूरा पूरा-रा नालरां-रा केस नणणाइ-नै ऊभा हुवै, पोरिस चढ़ै, सीस ब्रह्म ड अडै कायरां-रा धड़। पड़ै, जिहांणै म्रत-लोक-ते स्रग-लोक जायस्या; सूरा-पूरा खित्रिया-री वात सुणो आपणी-ही केई-अेक सुणसी।

वाह-वाह वारहठजी। भली कही, मन-री नहीं। हुकम किया, जांगडियै वडा राग माहे दूहा दिया।

अभ्यास रा प्रश्न

भाषा सम्बन्धी :

1. इणा रा दो-दो पर्यायवाची सबद लिखो।
   तरवार, सेना, मस्तक, वीर, जुद्ध।
2. 'मनोरथ' सबद रो सही सन्धि-विच्छेद किसो है?
   (क) मन+रथ। (ख) मनु+रथ।
   (ग) मनः+अरथ। (घ) मनो+रथ।
   (ङ) मनस्+रथ। (   )
3. 'अणीपाणी' सबद रो सही अरथ है—
   (क) नोक। (ख) भालो।
   (ग) पराक्रम। (घ) आब।
   (ङ) सेना। (   )

4. इणा रो आशय स्पष्ट करो—
   (i) काल्ही रा कळस ।
   (ii) सती रा नाळेर ।

विषय-वस्तु सम्बन्धी :

5. 'वेद-सासत्र बताया सु अवसाण आया ।' ओ अवसाण किसो है ?
   (क) तीरथ में स्नान करणो ।
   (ख) जुद्ध री तय्यारी करणी ।
   (ग) होम अर जाप कराणो ।
   (घ) जाचकां नै दान देणो ।
   (ङ) जुद्ध में धणी रै काम आणो । ( )

6. 'अखियात ऊबरै ।' आ अखियात किसी है ?
   (क) पातिसाहां रै छत्र पर घाव करणो ।
   (ख) तलवारां रो वार झेलणो ।
   (ग) हाथ्यां री सेना नै ठेलणो ।
   (घ) स्वामिधरम खातर कट मरणो ।
   (ङ) अपछरां रो वरण करणो । ( )

7. 'वारहठ कहै वाप हो वाप ।' कुंवर रायसिंह री वात सुण'र वारहठ जसराज रै इस कथन सूं उण रै मन रो किसो भाव प्रगट हुवै ।
   (क) भय (ख) क्रोध ।
   (ग) घिृणा । (घ) व्यंग्य ।
   (ङ) सावासी । ( )

8. 'जांगडियै वड़ा राग माहै दूहा दिया ।' वडै राग में दूहा किण मौके पर दिया जावै ?
   (क) विवाह । (ख) जनम ।
   (ग) मृत्यु । (घ) जुद्ध ।
   (ङ) ज्योनार । ( )

व्युत्पत्ति री द्रिस्टि सूं ई रो अरथ है—एक दूसरे सूं बातचीत अर सवाल जवाब करणो । 'हिन्दी-शब्द-सागर' रै विद्वान सम्पादकां रै मतानुसार मुहावरो लक्षणा या व्यंजनाशक्ति सूं सिद्ध वो प्रयोग है जो किणी भाषा में प्रचलित हुवै अर जिको अरथ प्रत्यक्ष अभिधेय अर्थ सूं न्यारो हुवै । उदाहरण रे रूप मे 'लाठी खाणो' मुहावरो है । अठै 'खाणो' शबद साधारण अरथ में नीं आ'र लाक्षणिक अरथ मे आयो है, जिको अरथ है लाठी रो वार सैणो ।

कहावतां अर मुहावरां रै बारे में आ बात ध्यान मे राखणी चाहिये कै दोन्यूं एक चीज नी है । दोन्यां मे फरक है । कहावत एक पूरो वाक्य हुवै अर इण रो प्रयोग ज्यूं रो त्यूं हुवै पण मुहावरो पूरो वाक्य नीं हुय'र वाक्यांश हुवै । प्रयोग करती वगत लिंग, वचन अर कारक रै मुजब इण रो रूप बदलीजै ।

राजस्थानी लोकजीवण अर उण रै साहित्य मे कहावतां अर मुहावरां रो घणो प्रयोग हुवै । गांव रा लोग-लुगाई भी आपसी व्योहार अर बातचीत में धडल्ले सूं इणां रो प्रयोग करे । इणा मे राजस्थानी लोक संस्कृति अर लोकजीवन रे व्यापक अनुभवां री गैरी छाप मिलै । अठै खास-खास कहावतां अर मुहावरा री एक फेरिस्त दी है । आप उणा रा अरथ समझ'र आपणै जीवण-व्योहार अर लेखण में इणां रो प्रयोग करो ।

(क) कहावतां

1. अकल उधारी ना मिलै, हेत न हाट विकाय—अकल उधारी कोनी मिलै अर प्रेम बजार स्यू कोनी खरीद्यो जा सकै. अकल तो आपरी ही काम देवै अर प्रेम मतैई हुवै, पइसै सूं कोनी खरीदीजै ।
2. अकूरडी पर किसो आवो को हुवै नी—माडी ठौड भी चोखी चीज निपज ज्यावै नीचै कुळ मे भी मोटा मिनख जनम ले लैवे ।
3. अणभणिया घोडे चढ भणिया मांगै भीख—अणपढ मौज करै अर भणियोडा फोड़ा भुगतै, ओ भाग रो खेल है ।
4. आयी ही छाछ नै बण वैठी घर री धिराणी—आखर जात अणहूंती चेस्टा करणी, मौका रो वेजा फायदो उठाणो ।

५. आभो रातो मेह मातो—आभो रातो (लाल) हुवै तो मोकळो मेह आवे ।

६. आल-मूका भेळा ही बळै—सगळा साथै एक जिसो बरताव ।

७. आवै न-जावै हूं लाडै री भूवा—(जाणै न बूझै हूं लाडै री भूवा)—घिगाणे पंच बणणो, जको काम नी जाणे वीं रै माय भी टांग अड़ावणी ।

८. अहारे व्योवहारे लज्जा न कारे—खावण अर कामकाज री बगत लाज नी करणी चाहिजै ।

९. इली पीस्यां पाणी निकळै—गरीब नै सतायां की हाथ को आवै नी ।

१०. उतर भीखा म्हारी बारी—दुनियां में एक दूसरां सूं काम पड़तो ही रैवै ।

११. उतावळा सो बावळा—घणी उतावळ चोखी कोनी । घणी उतावळ करणियो गैलो हुवै ।

१२. ऊगतां ही कोनी तप्यो जको आथमतां कांई तपसी ? जको बालपणे ही कीं कोनी कर्‌यो वो बिरधापण मे कांई करसी ? जको सुरू सूं ही चोखो कोनी वो पछै कांई हुसी ?

१३. ऊपर माळा मांय कुदाळा—(मुंह मे राम बगल में छुरी) ऊपर सूं सज्जन अर दिल रो दुष्ट ।

१४. ऊभां खेजड़ा बेझ थोड़ै ही हुवै—जल्दी में कोई काम कोनी हुवै ।

१५. ऊंघतो नै बिछावणो लाधग्यो—मन चायो काम हुय ज्याणो काम नी करणो चावै बी नै कोई सवाळ सर बहानो मिल जयाणो ।

१६. ऊंट खुड़ावै गधो डांभीजै—खोटो काम कोई करै अर डंड कोई भुगते ।

१७. ऊंट तो अरडांवतां ही लादीजै—जद कोई आदमी मतै ई काम कोनी करै, जणै वीं सूं जोरामरदी काम लेयीजै ।

१८. औसर चूकी डूमणी गावै ताळ बेताळ—मौको चूकयां बाद काम मन लगा'र कोनी कर्‌यो जा सकै ।

१९. कदै घी घणा कदे मुट्ठी चिणा—संसार मे सगळा दिन एक सरीसा कोनी गुजरै ।

२० कोठे री बात होठै आयी रवै—मन री बात मुंडा में आ ही ज्यावै । कपट छिपायां कोनी छिपै ।

२१. खरची खूटी यारी टूटी—जद ताई कनै पइसो हुवै, तद ताई लोग भायला रवै । पइसो खूट्यो अर देस्ती टूटी ।

२२. खावण नै खोखा पैरण नूं चोखा—घर मे रोटी खावण वास्ते कोनी पण छैलाई करै जद कहीजै ।

२३. गाडी देख'र लाडी रा पग सूजै सुविधा भोगी कुण कोनी होवै ।

२४. गाळ्या सूं किसा गूमड़ा हुवै—गालयां चुपचाप सुण लेवै तो कै आंट ? किणी रै बुरै कैवणे सूं बुरो कोनी हुवै ।

२५. घड़े सरीखी ठीकरी मां सरीखी दीकरी—टाबर माईतां जिसा ही हुवै ।

२६. घण जायां कुल हाण. घण वूठा कण हाण ।—घणा टाबर कुल रो नास करै अर घणी बिरखा खेती रो नास करै ।

२७. चतर री च्यार घड़ी मूरख रो जमारो-चतर मिनख थोड़ी ताळ मे जितो काम कर लेवै मूरख उमर भर पच'र बित्तो कोनी कर सकै ।

२८. चरग्या सूर कूटीज्या पाड़ा- दोप कोई करै अर दण्ड कोई भुगतै ।

२९ छदाम रो छाजलो टक्को गंठाई रो—थोड़ै दाम री चीज माथै घणो खरच । मि० पइसै री डोकरी टको सिर मुंडाई ।

३०. जाय लाख रह साख—साख सैं सुं मोटो धन है ।

३१. जीवणो जितै सीवणो—जिंदगी भर काम लाग्यो ही रैवै।

३२. झिम्वत विद्या खिसत खेती मैनत कर्‌यां सूं विद्या आवै, अर बरोबर खेचळ कर्‌यां सूं खेती फळावै ।

३३. डूंगर बलती दीसै, पगां बळती कोनी दीसै—मिनख दूजां री बुराई अर औगुण फटाफट देखै पण उणनै खुद रा औगुण नजर कोनी आवै ।

३४. नकटा देव नै सुरड़ा पूजारी जिसै नै तिसौ ।

३५ नगद नाणा, बीद परणीजै काणां—पईसां सूं सै काम हुय जावै ।

३६ नहिं भामे सूं काणो मामो चोखो–नहीं सूं की चोखो।

३७ पराई थाळी मे घी घणो दीखै–दूजा रो माल मत्तो अर जिनस घणी ही निजर आवै।

३८ पाणी पीजै छाण'र, सगपण कीजै जाण'र–पाणी छाण'र पीणो चाहिजै अर सगपण चोखी तरियां खोज पड़ताल रै बाद मे करणो चाहियै।

३९ पाव चून चौबारै रसोई—सामान थोड़ो दिखावो घणो।

४०. पैरण घाघरो ही कोनी, नांव मिणगारी नाम सूं उलटा लखण।

४१. भूख कं लगांवण कोनी नींद कं विछावण कोनी–भूख मे लूखी सूखी रोटी भी चोखी लागै अर नींद आवती हुवै जणै विस्तरां ताई कोनी उडीकीजै।

४२ भू, वछेरा, डीकरा नीमटियां परवाण–वहू घोड़ा रा वछेरा अर टावरा-रै भलं बुरै रो प्रमाण तो मोटा हुयां ही मिलै।

४३ मौत, मानगो, मामलो, मदी, मांगण हार।
पाचू मम्मा एकसा पत राखै करतार।
मौत, रोग, मुकदमो, गरीबी अर कर्जदार अै पांचू चं जां बोत माडी, भगवान ही आं सूं बचावै।

४४. राख न छाणा अर उदैपर जाणा—बिगर पइसै कोई मोटो काम नीं हुई सकै।

४५ रावडी भी कैवै मनै दांत सूं खावै–छोटो मिनख नखरा करै जद कहीजै।

४६ रूप रुडो गुण वायरो रोहिडै रो फूल—फूटरै फरै पण गुणहीन मिनख वास्तै कहीजै।

४७. रोया रावडी कुण घालै-खाली रोया धौया कं हुवै ? मैनत करयां सूं ही काम सरै।

४८. सलाम ताई मियां नै क्यू विराजी करणो—थोडी सी बात ताई किणी सूं सम्बन्ध क्यूं खराब करणा।

४९, हान्ती थोड़ी हाको घणो—सामान या काम थोड़ो दिखावो अर रोळो घणो।

५०. हाथी आक री डाली कोनी वंधै—मोटो आदमी छोटे पद माथै कोनी सोभै।

(ख) मुहावरा

१. आख जोड़णी—प्यार करणो।
२. आख ठरणी—किणी रै दरसण सूं जी मोरो होवणो।
३. आख्या मे रड़कणो—बुरो मालम होणो, ईर्ष्या रो कारण होणो।
४ आँत री किरची—गरवीलो, ठाडी शान राखणियो।
५. आकड़ मीचणो—फालतू खेचळ करणो। फालतू ठाँड या वेमतलब पइसो खरच करणो।
६ आग मे पूळो नाखणो—किणी रै किरोध मे ओरूं भटकाणो, किण नै ओरूं कष्ट देवणो।
७. आटा मे लूण—बोत थोड़ो सो'क।
८. आटो वाडो लागणौ—ठीक ढंग सूं काम नी करणो।
९. आटो वादी करणी—खोटी वुद्धि उपजणी, बुरी वात वळणी।
१०. आडो होवणो—सोवणो, नीद लेवणी।
११. एक रो इक्कीस करणौ—वढ़ा-चढा'र वात करणी।
१२. एडी देणी—घोड़ै नै ठोक'र मार'र चलावणो, वाधा देणी, काम मे विघन डालणों।
१३. एडी घिसणी—फोड़ा --गतणा भागा-दौड़ी करणी।
१४. संठवाड़ो चाटणो—खुशामद करणो।
१५. कंठी देणी—चेलो मूंडणो।
१६. कण वायरौ होणौ—सारहीन होणौ, तंत बायरो होणौ।
१७. कपाळ खुलणौ—सिर फूटज्याणौ, भाग खुलज्याणौ।
१८. कसर काढ़णी—बदळा लेणौ ?
१९. काटे में तुलणो—वणो मंहगो होणौ।
२०. कांणी कोड़ी नी होवणी—एक दम कंगाल होणौ।
२१. कांध देणी—शवयात्रा मे भेळो होणो, मरियोड़ै री अरथी उडाणे मे सारो देणौ।

२२. कान खावणा–बार-बार कैवणो, रोळा करणा।

२३. कानां रो काचो होणो–सुणी बात या शिकायत माथै झट पतियारो करणो।

२४. काकड़ियो काडणो–फायदो कर लेवणो।

२५. कागला उडाणा—फालतू रो काम करणो।

२६. कार खीचणो–मर्यादा बांधणो।

२७. किताबी कीड़ो– हरटेम पोथी वांचणियो, खाली लिख्योड़ी बात्या जाणण आलै।

२८, कीड़िया लागणो–जी उकताणो, कुचमाद करणो, कुचमादी करण री मन मे आणी, जलदी करणो।

२९. कुचमादियां रो कोथळो घणो अचपळो, मोटो धूरत।

३०. कुत्ता री कुपाळी होणो–सदां बकबक करतो रैवणियो।

३१. केसरिया करणा–जुद्ध में मरण वास्तै त्यार होणो।

३२. कोठो साफ होणो–मन मे की बुरो विचार नी होणो, पेट साफ होणो।

३३. कोडी रा तीन होणा–घोत सस्तो होणो। की कदरनीं होवणी।

३४. खत फाड़णो–करजो चुका देणो।

३५. खबर लेणी–सुध लेणी, अत्तो पत्तो मालूम करणो, मारणो; दंड देणो।

३६. गंगा उठाणी–गंगा को कसम खाणी, सांचो साबित होणो।

३७. गठरी करणो–हाथ-पग बांध'र बेकाम कर देणो, ढेर कर देणो।

३८. गठरी मारणो–चालाकी सूं किणी रो ही माल-मत्तो साफ कर देणो।

३९. गधा माथै झूल न्याखणी–कुरूप नै कीमती अर फुटरा गाभा पैराणा।

४०, गोटो ऊठणा–पागलपण सवार होणो, उन्माद मे होणो।

४१. गोडा गाळणा–मैनत करणी, मैनत कर'र आडखो बिताणो।

४२. गोळ गूंथणो–जाळ फैलाणो।

४३. घट्टी पीसणी–करड़ो मेनत करणी।

४४. घी घालणो–खूब मौज मजा करवणा, जी खुस राखणो।
४५. घोड़ा वेचर सोणो–गाढी नीद सोणो, नचीतो हो'र सोणो।
४६. घोचो घालणो–काम मे विघन डालणो। काम मे अड़ास लगाणो।
४७. चावळ चडाणा—मान वढ़ाणो, रूतवो वढाणो।
४८. चूड़ो पैरणो—नातै जाणो।
४९. चोर माथै मोर पडणो–धूरत रै साथै धूरताई करणो।
५०. छाती रां छोडा लेणा–दुःख दे दे र सताणो।
५१. जव न हारणी–व दे मूं हट ज्याणो, वा । खिलाफी करणो।
५२. जीभ आणी–घणो वाचाळ होणो।
५३. जीव सोरो होणो–आराम आणो, रोग आदि री पीड़ दूर होणो।
५४. झख मारणो–फाळतू री वकवास करणो, फालतू वखत वरवाद करणो।
५५. झिझक भांगणी–डर दूर करणो, संकोच दूर करणो।
५६. टक टाळणो – जिसी-तिसी रोटी खा'र वगत गुजारणो।
५७. टके पांवडा भगणा–घणो लोभी होणो।
५८. टकै री जबान–बात रो की पतियारो नी हुवणो।
५९. टांग ऊपर राखणी–आपरी वात ऊपर राखणी।
६०. टिप्पा खाणा–वेकारहोवणो। आवारा घूमणो।
६१. टीको काडणो (लगाणो)–घणो खरचो करवाणो। धोखो दे'र खरच करवाणो।
६२. टुकडा तोडणा–जिया-तिया कर'र जिनगाणी रा दिन पूरा करणा।
६३ ठंडी माटी रो–शान्त सुभावरो, धीरो, ढीलो।
६४. ठिकाणां री बात–समझदारीरी बात।
६५. ठोला देणा–ताना देणा- मोसा मारणा।
६६. ठोला खावणा–मातहत रैणो, ताना सहणा।
६७. डोडो बोलणो–तानो मारणो, सोधै ढंग सू वात नी करणो।
६८. तग कसणो–तैयार होणो।

६९. तंत निकाळणी—रहस्य या भेद मालम करणी ।

७० तळवो चो'र पीणी—घणी सेवा-चाकरी करणी ।

७१. तवो बांधणी—जुद्ध वास्तै तैयार होणी, आफत मोल लैणी ।

७२. ताळवै लगाम लगाणी—बोलती बन्द कर देणी ।

७३. तीयो करणी—किणी रो बुरो चिन्तणी ।

७४. थूक उछाळणी—फालतू री बकवास करणी ।

७५. थूंकबिलोवणी—फालतू री बात करणी ।

७६. थूंक सूं सांधा देवणा—सवाळ सर काम नी करणी, कंजूसी । सूं पइसो भेळो करणी ।

७७. थोबणो सुजाणी—रूसणी मूंडो फुलाणो ।

७८. दांत आणा—बातचीत में चतुर होणी ।

७९, दांतां चढणी—दुनियां री निगाहा में ल्याणी. चरचा रो विषय बणाणो ।

८०. दिन धोळै दीवाळी करणी—अणहोणी बात करणी ।

८१. दिनां रो दादो—घणो बुढो, घणो पुराणी ।

८२. धूड़ धाणी नै राख छाणी—बरबाद होणी ।

८३. धोळा नै धोक देणी—बूढै आदमी नै नमस्कार करणो । उण री इज्जत करणी ।

८४. धोळा में धूड पड़णी—बुढापै में बदनामी होणी ।

८५. नसे गोसै होणी—गुपचुप बात करणी, छांनै-छांनै सलाह मशविरो करणो ।

८६. नाम काडणी—बदनाम होणी कलंक लगवाणी ।

८७. नाड नीची करणी—शर्मिंदो होणी ।

८८. पग आंगणो करणी—घणो आणो-जाणी ।

८९. फांफां मारणी—सुवारथसिद्धि रै खातर अठीनै-उठीनै पूरी जोर लगाणी ।

आपाढ । लोडा— जंगम । मूळा—जड़ां । पगालां—ढळाव । झाअरकै—सुवह, परभात । जेळी— एक लम्बे लट्ठे रै आगे दो नुकीला डंडा लगा'र वणायोड़ो कटीली झाडिया नै हटावा रो उपकरण । गंडासी—चौपाया रै खावण सारू नारै या घास रा टुकड़ा-टुकड़ा करणे रो ओजार । खूंचे—कांधे । गैलो—रास्तो । टीचणी—छोटो टोलो । मोठिया—मोठ । चिरमी—चिरमिटी, घुंघची, गुंजाफळ । माते ताई—दुपहरै रो भोजन । गांयत—शांत, तृप्त । सागै—साथ मे । विगाणै—जबरदस्ती ।

४. धरती रा फूल, गिगन रा तारा

लिछमी—झांसी री राणी लक्ष्मी बाई । कमीणपणो—नीचपणो । अेळो—वेकार, फिजूल । भाखपाटै—उषाकाल, परभात, आंझरकै ।

५. बिरमाजी खनै डेपुटेसन

बिरमाजी ब्रह्माजी । खनै—पास में । डेपुटेसन—शिष्ट मण्डल । टावरपणै मे—बचपण मे । दरीखाने—राजा महाराजा या सरदारा रै बैठवा री जग्यां जठै घणा सारा दरवाजा हुवै । लटवा—लटका । डाग—लकड़ी, लाठी । आऊखो—आयुष्य, ऊमर । गाफळ - वेखवर, सावधान ।

६. रुघघौ खल्ला गाँठणियौ

खल्ला—फाटा, पुराणा जूता । ववा—भुजावा । दूणियौ—मिट्टी रो वडो वडो, मूंण । बोटी री—पेड़ री जड़ । करड़-कावरी— सफेद अर काळी । दाडकली—दाढ़ी । उणियारौ—चेहरो । अवधूत—साधू, जोगी । बोदी—खराब । माण-काण—इज्जत, प्रतिष्ठा । खसम—पति । लायण—वेचारी । ठा—खबर । ऊनी—गरम । वैरो—उणरो । माईतां—मां-बाप । कारू-कमीणां—उण जातियां रो लोग जै विवाह जन5, मरण जेड़ा संस्कारां पर नेग रा अधिकारी हुवै अर नेग रै बदळै आपणी सेवा अरपण करै । नेग—विवाह आदि शुभ अवसरां पर सम्बन्धी. नौकर-चाकर, नाई, बारी आदि काम करणियां लोगां नै उणां री प्रसन्नता खातर दियो जावण आळो धन या वस्तु, वंध्योड़ो इनाम या वखसीस । गिस्ती— गृहस्थी । सलासूत—सलाह, मसविरा । चौवटै स्थान जिकै चारूं मेर दुकानां (हाट) हुवे, वजार । फोड़ा—तकलीफ ।

अड़ी—जिद्, हठ। दुपारौ—दोपहर रो नास्तो। उतारु-पुराणा, उतरियोड़ा। मेळ—मिलाप, मिलन।

७. मुरळीधर री ईमानदारी

कानी—ओर। वड़-कर—घुस नै। चरका—दाझ, बळत। फोळा—फफोळा। दाखल हुवौ—माई नै वड़्यो, भीतर नै पोंच्या। परभारा—परबारै, सीधै। अबार—अभी, अणी समै मगा सोई—सगा सम्बन्धी। अणचीत्यो—अप्रत्याशित, विना सोच्योड़ो। दुगध्या—दुविधा। थमी—थोक गयाड़ा, श्रान्त। निभाव-गुजारो करवा री गुंजाइस। किरकोल-फुटकर, सब तरै रो। ऊपर को ऊपर—अठी नै खरीद अर तुरंत वठीनै वेच देणो। पायो—नींव, आधार। मेरु—सुमरु पर्वत। परसग—अवसर, मौको। तोडी—तक। सोभा—वड़ाई प्रशंसा। चिट्ठियां मार दीनी—लेवल लगाय दीना। फरदी—सूची। वार-सू—गज सूं। नमूद—जाहिर। साबत—पूरा। संपादन—प्राप्त, पाई। नरमाई—नम्रता। शेवट ले जावै—आखिर तांई ले जावै, पूरो करै। फैरिस्त—फहरिस्त, सूची। तिका परवाणे—अके बताया मुजब। गुमास्ता—मोटा वैपारी री तरफ सूं खरीददारी अर वेचण रो काम करण आळो मिनख, मुनीम। नोंध्योडो—लिखयोडो नोट कर्‌यो हुयो। सूधा—समेत, सहित। वट्टो—कलंक हरकत—हरज, नुकसान। श्री जी—भगवान। वडेरां का—वड़ा रै, वेडेरों के। ममोई—वम्बई सइस-घोड़ा री खबरदारी करण आळा नौकर। पिछाण-ओळखाण। खातरी-भरोसो। सरी-निकळी। खिताव-खिताव, उपाधि, पदवी। वाल-वाल-पुरी पुरी रोम-रोम में।

८. म्हारी जापान-यात्रा

चिपियोड़ो—मिल्या हुया, सट्या हुया। झांकी—देख्यो। पूगता-ई—पोहचता ई—मांड—वणाय नै। मूंडागै—मुंह रै आगै। लारै-ई—साथ में, सागै। वड़िया—मांयनै गया, भीतर नै पोंच्या। उडीकता—इन्तजारी करता। ओळखै—पेहचाणै। गहगे—वनी। आंजस-अभिमान, गर्व। सारू-ईज—लिए ही। वाय दिया—वो दिया। लाबी वाढ़-रा—लाम्बे उदरा। वगत—वक्त, समै। फलाणो—अमुक। घणी विरियां—अनेक वार। खलल—बाधा,

रुकावट। मायली–भीतर री। तबाही–विनास। नटाटूट–घणा वेग सूं। कादो–कीचड़। कयामत–प्रलय। वरळाय र्या–हाको पाड़र्या हा। लब्ज–लफ्ज, सबद। गारत–बरबाद। अंतस में–दिल रै भीतर। हिवडा–हिरदय। हबुका–हूक। देवळी–समाधि। गय जाऊं–खो जाऊं।

९. लगन

ठोड़–जगां, स्थान। नाकामल–बिगर काम रा। अेळा–व्यर्थ, बेकार। मौको–स्थिति। पाखा–दोन्यूं ओर अड़ोस-पड़ोस। अळगो–दूर। नेडी–पास, निकट। गजधर–अमीन, जमीन नापणियो। जेवड़ी–रस्सी। हिमतालू–हिम्मत आळा। छापा–अखबार, समाचार-पत्र। कोजो–बुरो। अक्कल-बायो–बुद्धिहीन, अक्कलहीण, मूरख। ठाठा–तगारी, परात। पगोथियां–सीढिया। खे–धूल, मिट्टी। बेली–साथी। अध्यवसाय–लगातार उद्योग, सतत उद्यम।

१०. देस भगत भामासा

माड़रा–पहाड़। पाखती–आस-पास। बूंसा–माता। ठा–खबर। सोदू–खोजूं। मूंडो लटकांया–उदास होय'र। बिखो–दुख, विपत्ति। जक–चेन, आराम। सीव–सीमा, हद। कांठे–किनारे। ओकात–हिम्मत, सामर्थ्य। माडाणी–जबरन। सा'रो–सहारो। छेल्ला–अंतिम, आखरी। कोथळी–थैली। नाक–इज्जत, प्रतिष्ठा। पगताळियां–चाट चाट नै, गुलामी कर-कर नै। अंगै जो–अंगीकार करो। वा'ला–प्रिय। दीवाण–प्रधानमंत्री। सैंठी कर नै राखै–मजबूती सूं पकड़ राखै, खरच नी करै। सरतन–उपाय, प्रयत्न। उभापगां–पगां पर खडा है मौजूद है।

११. तत्वां री कथा

वेसी–अधिक। लूण–नमक। जगण-आळी–जलण आळी। वास्ती–आग। न्यारा-न्यारा–अळग-अलग। पासी–तरफ। कृत्रिम–बनावटी। ओछी–कम। जाणीता–जाणकारी में है, जाणिया हुवा। सखियो–एक प्रकार रो जहर, ओ सफेद उपधातु अर पत्थर जियां हुवै, इण री भसम औषधि रै काम आवै।

१२. हाडौती में गणेस-पूजा

आगर–खजाना, खान । गणेसजी–गण रा अधिपति । अलाका–क्षेत्र; इलाका । जग–यज्ञ । अनुष्ठान–अभीष्ट फल री सिद्धि खातर किणी देव विशेष रो आराधन, शास्त्र सम्मत कार्य । नूंतो–निमन्त्रण । सद्ध–सिद्धि, सम्पूर्ण । थरपणा–स्थापना । दूदाळा–तूंद है जिण रै अर्थात्–गणेसजी । गोरी नन्द–पारवती रा बेटा । विधान–नियम, कायदो । वटका–टुकड़ा, नाश । ख्याल–लोक नाटकां रो एक प्रकार । भूमक्या–भूमिका । उगारै–गावण री सरूआत करै । अर्गजा–अरगजा, केसर, चन्दन, कपूर आदि सुगंधित पदार्थां रै मेळ सूं बण्योड़ो सुरभीलो पदार्थ । जकर–जिक्र । लम्बोदर–लाम्बो है जिण रो पेट अर्थात् गणेसजी । खाता-पीता–सम्पन्न । झलावै–देवै । खोटक्ये–विघन, बाधा । साईमैनो–भली भांत, संपूरण । लारै–माथै । थानक–स्थानक । चूंतरो–चबूतरो । ऊंदरो–चूहो । कामी–सिंदूर । कोका–बुलावा, निमन्त्रण । ऊजळा पाख–शुक्ल पक्ष । एकदन्त–एक दांत आळा, गणेसजी । मूमे–चूहा, मेषक ।

१३. पीपळ रो गट्टो

गट्टो–पेड़ रै चारुं ओर बण्यो चबूतरो जिणपर लोग-बाग आय'र बैठे अर विसराम करे । अश्वत्थ–सरक्षक, पीपळ री रक्षा करण आळो । जूना–पुराना । रोही-जंगल । लाय–आग, ज्वाला । तावड़ै–धूप । पसेवा–पसीनो । पैंड–कदम, डग । टोकी–चोटी । पो–प्याऊ । खापावळ–जल्दी, बहुत जल्दी । बीड–जंगल । जोहड़–तालाब, पोखर । पायतळ–तालाब रे आसपास री खुली जमीन । अर्म–आसमान, आकाश । तिग–कमर, कटि ।

१४. उडीक

उडीक–इन्तजार । अबकाळै–अणीबार । आंझो–खारो, खराब । हूंस–उमंग । वेम–भ्रम, वहम । आळाणो–रद्द, स्थगित । गोट–भतुलिया, आंधी रो बवण्डर । लारै–पाछो । ढूकड़ो–नेड़ो, नजदीक । वैरो–कुओ । अरणा–एक प्रकार रो पेड़ जिणरा पानां ऊंट घणै चाव सूं खावै । जेज–

देर, समय। वीरो—भाई। छाजला—सूपड़ा। नीर—नींद। घटा—ऊंची जगां। माणू—भाणजा। कमेड़ा-एक प्रकार रो पक्षी। वरत रस्सी, लाव। गांठी—बीमार। छानो—चुप। रमकड़ा-खिलौना, राम नया। धावस—धीरज। ऐठवाड़ा- जूठा। बासण-बरतन, ठामड़ा। हको—जोर री आवाज। माळो—घोंसलो। वीरो—विवाह रै अवसर गाया जावण आळो भाई सूं सम्बन्धित गीत। कोड—चाव, उत्साह। बाई बहन। आमण—मां। लवारियो-बछड़ा। परसेवा-पसीनो, पसेवो। गोळा-गोद। लटिया—केस री लट। तारा—धी रा तरवरा। ऊबका-उल्टी। घाटकी—गर्दन, नाड। टोगड़ी—गाय री बच्ची। टगू-मगू—थोड़ासो'क, छन्यो सो'क। वाल्हो—प्यारो।

१५. राजस्थान री लोककळावां

नामी प्रसिद्ध, नामआळो। जोधो—सूरमो। ठा कोनी-पतो कोनी। रूडो—सुन्दर। रिदसिद्ध रो रंगरेज—विविध भात री लोककळावां रो खजानो। टपरा-घरोंदा—गावरा रा लेयवा सारू पगा गाळ बणायोड़ा माटी रा घर। मानमनौती—मानता। जबरी—जोरसोर आळी। बणघट बणावट। देवल—देवी देवता। वजर कंवाड़—वजर माफक काठा किवाड़। मेडया—दुमजिल रो मकान। गोखड़ा—झरोखा। टेरा-गायन री ऊंची सुर। तुर्राकलगी ३०० वरस पैला तुकनगीर अर शाह अली द्वारा सरू करयोड़ा ख्याल, अै शिव अर शक्ति रा प्रतीक हुवै। राजस्थान मे चित्तौड़ अर घोसुण्डा मे इणा रा प्रसिद्ध अखाडा है। तोरण दुवार—दुरवाजो जठै तोरण बांदया जावै। थापड़्या थोर वगर पाना रा काटा आळा थोर, अकाळ रा दिना मे इणा थोर रा काटा बाळ नै जिनावरा नै खवाया जावं, खेता री वाड करण नै पण अै थोर घणा काम आवै, थापड़्या थोर रै अलावा आगल्या अर भूगल्या थोर भी हुवं। केवला—टेसू, खांकरा रा रातापीला फूल, इणा रो रंग बणार हेळी खेलीजै, इणा नै केसला भी कैवे। डाडम—अनार। छोतरा—छिलका। काला गोरा—काळाजी अर गोरा जी, भैरू रा नाम। ताखाजी—सरपराज तेजाजी। लाला फूला—लाला अर फूला नाम री बैना, देवियां। रेबारी देव—ऊंटा रा रखालू

देव। खावळ–सरपराज। खेतरपाल खेतां रा रखाळ–देवता। हिंगाणां–माटी री मूरतियां, देवळ। नावां–सोना अर चांदी पर जै देवी देवता खुदाय गळा मे धारण करिया जावै वै नावां कहीजै, केई लोग फूल अर चौकी भी कैवे। देवलपूजणी–देवता री पूजा करणआळी आंगली, अनामिका। गोर–गणगोर। वेसर–नाक रो गेणो, नथ। मांडासादी–व्यावसादी। पेलीपार– पेलीवार, पैलपैल। आजूबाजू-ओर कोर, अेरेमेरे। केवत–कैणावत। कजर–काजळ। हरद–हळद। हिन्दूर–सिन्दूर। ऐपण–हळद मिल्यो चांवळां रो आटो। करवाचौथ–आ कातीवदी चौथ नै मनाई जावै, इण दिन लुगायां करवाचौथ रो थापो मांड'र वरत पूरै। चूरमा चौथ–भादवा सुदी चौथ, इनै केडा चौथ अर भाटा चौथ भी कैवै। इण दिन चूरमो बाटी कर चौथमाता रो वरत पूर्‌यो जावै। नागपांचम–सावणसुदी पांचम, गोवर अर ऐपण रा नाग वणाय औरतां पूजै, इण दिन सोनारूपा रा नाग दान कर्‌या जावै। सीतला सातम–होली रे सात दिना पाछै आवावाळो तैवार, इण दिन लोग ठंडो खाणो खावै। होई आठम–कातीवदी आठम। दीयाड़ी-नाम–चैतसुदी नम' दीयाड़ी माता री पूजा कर नो नेवज री धूप दी जावै। गणगोर-चैतसुदी तीज नै मनायो जावण आळो तैवार। दसामाता-चेतवदी दसम नै दसामाता री पूजा करै। लुगायां दसा री केण्यां कंबै अर वेळ गळा मे धारण करै। सराद–पितरपूजा रो आसोज मीनां रो दूजो पखवाड़ो। छोर्‌यां–लड़कियां। नतहमेस–हमेशा, सदैव। छोरयांगल–आवळ नाम रा रूंकड़ा रा पीळा फूल। पावूजी–प्रसिद्ध लोक देवता जै विवाह री चवरी सूं उठ'र गायां री रक्षा करतां पाण जुद्ध मे आपणो वळिदान कर प्रण निभायो। नेकी–भलो काम। चितराम–चित्र। जगेरो–जागरण। माँद-भोत–हाजमांद, बीमारी। पछवायां–पिछवायां। चिन्न–निसांण, चिह्न। अवसर–खासतौरऊं, अवश्य। घराणा–कुळ वंश, खानदान। हाजस–हांसळी री तरै रो गळा रो गैणो। चरतो भरतो खेल–टाबरां रो खेल, चरमर,। सकरपारा–गुड मिल्या आटारा तल्या थका चक्का। गीगला–टावर। लाँगुर्‌या–केळादेवी रो उपासक- लांगुरदेव। वड़ल्या-गोवर रा गोळगोळ वडकुल्ला ज्यां रे विचै छेद हुवै। सकरांत–पो सुदी दसम नै मनायो-

जावण आळो धरम पुन्य रो तैवार । गा-गाय । छारी—बकरी । पूज्यापनायां पूजापाठ । संगाढाल—मेघवाळां रो मिरत्यु करम । सै परवार—आखो परवार, सगलो परवार ।

१६. लेग्या दोय नै लांऊ चयार

मोतविर—इज्जत आळो । आसामी—कास्तकार, रुपया पइसा उधार देवण आळो धनवान व्यक्ति । लाठी—छड़ी । छाग—समूह, झुण्ड । गवाड—चौक, वाडो, अहातो । छोटियां—युवा भैंस्या । दूझती—दूध देव आळी । वित्त—धन, गायां भैंस्यां । अडिये-वडिये—जूरत रे मर्म । चौगळा-चारू-मेर रा पड़ोसी, गावां रो समूह । चौताळा—आसपास रै गांवा रो समूह । घूंसो—नगारो, नगाडो मुलका-देश । चावी—चावण-आली । पाटो—गोबर । सता-जोग—संयोगवश । नागोरी बळद—नागोर रा बळद, नागोरा बलद उत्तम जाति रा मान्या जावै । थेपड़ी—छाणा, कण्डा । जोयो—देख्यो । सागे ठौड—वणीज जगा । धकी—भली । पडूतर—जवाब । धौळा री वार-बलदां नै ढूंढवा । वासदी—आग । कोपरिया—कांकरिया । ढिगली—ढेरी । थाटा माथै-गाड़ी री छत, गाडी रो आलो हिस्सो, जी पर गाडीवान बैठ र गाडी हाकै । उलल—उलर, बोझ सूं गाड़ी रो पाछली कानी झूक जाणो । खडियो—चलायो । घाटिया-पहाडां रै बीच रो रास्तो, कठिन सांकड़ो रास्तो आपति, कठिनाई । पून—पवन । गुडी—बो स्थान जठै पैलां तो मिनख रक्षा रै खतर रैवै, धीरे धीरै पछै वो गाव रे रूप मे बस जावै; बस्ती । वकारतो—ललकारतो । ओळखांजू—जाण्यो जाऊं । माजना सूं—इज्जत सू । मूंड—बुराई, निन्दा । भोगनो—खोपड़ो । ढाणियां—गांव सूं अलगी खेता मे वसियोड़ी कच्चा घरां री वस्ती । चारा रा पचावा—लंबो, ऊंचो चारा रो जमायोडो ढेर । भीडकी गाय—छोटी गाय । कांठळ—बादली । ठाडी पडगी—बुझगी । कुमत—खराब वुद्धि, उलटी मति । तरस—दया । डड—सजा । टाळका—चुन्योडा । बळती वगत—लौटती बखत । वही-रह्यो—विदा हुयो ।

१७. साहित्य रो प्रयोजन

प्रयोजन—हेतु, उद्देश्य । देखै-दृश्य—काव्य रै रूप में साहित्य रो

अभिनय देखै। वांचै—पढ़ै। खातर—लिअै, वासते। तुलसीदास–हिन्दी रा महाकवि जे 'रामचरितमानस' री रचना करी। वांचक– वाचण आळो; पाठक। न्यारो अनोखो। मम्मट—संस्कृत रा आचार्य जे 'काव्यप्रकाश' ग्रंथ लिख्यो। ब्रह्मानंद सहोदर ब्रह्म या परमातमा रै अनुभव सूं उत्पन्न हर्ष माफक आणंद, रस। पिछलग्गू—दास, पीछै चलण आळो। वैद्य—अनुभव। नौटंकी– एक प्रकार रो लोक नाटक जिणमे नगाया री प्रधानता हुवै। प्रभु—स्वामी, मालक। सुहृत—मित्र। कान्ता– स्त्री, प्रियतमा। वाध्यता—विवशता, दबाव। छेकड़ा—आखिर में अंत में। मरजी—इच्छा। जवरो—जबरदस्त। महावीर प्रसाद द्विवेदी– आप खड़ी बोली हिन्दी गद्य री एकरूपता खातर भागीरथ प्रयत्न कियो अर बरसां तांई 'सरस्वती' पत्र रा सम्पादक रहया। आधुनिक हिन्दी साहित्य में आपरै नाम सूं 'द्विवेदी-युग' प्रसिद्ध है। पैलीपोत—सबसूं पैलां। लारली—पाछली। अद्वैत—भेळ।

१८. गळगचिया

गळगचिया—छोटा-छोटा पत्थर रा टुकड़ा। आंतरो दूर, अलगो। मैणावती—मोमवती। बादळवाई—बादळछायोडो। तूंतड़ा- तूत। छायलो—छाजळो। वगा—फैंक दिया। सागो—साथ, संग। दाणो—कण। काळजिये री कोर—प्रिय, घणो वालो। डोफां—मूरख, गिंवार। लुक्यो—छिप्यो। ओले—ओट मे। अडोळो—बदसूरत। सुन्याड—सूनोपन। आपो–अपणापो। न्यावडे— नांद। ओमर—आग। नावडै—पहुंचे। अगूणै—पूरब दिसा। पळसै–द्वार। आथूंणे–पच्छिम दिसा।

१९. मुंसीजी रो सुपनो

सुपनो—स्वप्न। स्याळै—सरदी, शीत ऋतु। खेचळ—परिश्रम, मैनत। आडा होग्या—सो गया, लेट ग्या। काजी—धरम-करम, रीति-नीति अर न्याव री व्यवस्था करण आळो। पल्लो—कपडे रो छोर, दामन। मोट्यार-जुवान। धकापेल—धक्कम धक्को। लाटे—खलिहान। लोथ— मुरदो, मृत शरीर। दकाछूंट—निशंका, निर्भय। हांगो—ताकत, शक्ति दरियाव- समुद्र। पांगळो— लंगडो, पांव रो लंगड़ो। लूलो – लुंजो, जिणा रो हाथ कट्योडो हुवै। आंख खुलगी— जागग्या, नींद खुलगी। वेझ–छेद। काळ–अकाळ।

२०. कवि अर कविता

माठो—कुन्द। अलेखूं—अणगिणत। बोळा—बेहरा। पांगळा लंगड़ा। कोडायो—प्यारा। गळाई-भांति, तरह प्रकार। कामणगारा—वश मे करण आळा, जादुई। रसाळां—वनस्पति। निपज—पैदावार, उपज। पयळां लग—पाताळ ताईं। अडोली—बदसूरत। भांय—भूमि, जमीन। कळायण—काळे मेघ री घटा। करसो—किसान। कमतरियो—काम, धंधा करण आळो, मजदूर। आफळै—मुकाबलो करै। बाथेड़ो करै—लड़ै, मुकाबलो करै। तोटो—अभाव, कमी। डूंडी—डुगडुगी। साप्रत—साक्षात्। कूंता—कीमत लगावां, मोल करां। परोटणा सूं—उपयोग मे आवण सूं, इस्तेमाल। मुळक—मुसकान। वरगांवेर—जबरो विरोध, मूंन सूं विरोध। दरकार—जरूरत, आवश्यकता। खोड-खोट, दोष। खांमी—कमी। अणूतो—घणो, बहुत। दूभर—मुश्किल।। सेज—सहज।

२१. देसळाई

चिनी सो—थोडो सो। देसळाई—दियासलाई। माळै—ऊपर। पोट—ढेर, समूह, गठडी। डोळै—घूमै-फिरै। दांत तळै आंगलया दाबणां—अचरज सूं भरियोड़ा। नाक री धिराणी इज्जत आळो। जौहर—स्त्रियां रे जलण खातर दुरग में बणायोडो चिता, रजपूता रै युद्ध रै समै री एक प्रथा। जजमान—यजमान, दक्षिणा आदि दे'र ब्राह्मणा सूं यज्ञ-पूजन आदि धार्मिक कृत्य कराणियो। खैवत—कहावत, केणत लेरका साथ आळा। चितां'र—जला'र। आस्तीन को स्याप—विसवासघाती। सर्योड़ो—आंजियोड़ो, घाल्योडो। अनवै—अन्वय। खीसा—जेब। हेरवा—खोजबा, देखबा। ओठो—अपूठो, वापस। कोल—प्रतिज्ञा। दारा-स्त्र, औरत। सेजी—सरळता सूं। दोरा—दुखी, पीड़ित। वैपार—व्यवहार। फबे कोने—चोखी नहीं लागै। जिन्द—प्रेत। अडवो—चिथडा अर घास-फूंस सूं बणायोड़ो पुतलो जो चिड़ियां अर बीजा पसुवा सूं फसल री रक्षा खातर खेत में ऊभो कियो जावै। लेर—पीछे। दे—सरीर, देह। नातो—सम्बन्ध। मगत—वखत, समय। औसाण—स्तब्ध, अवसर, मोको। सळा—चिता। बगलां झांकबा लाग जाय—भागणे रो उपाय करै, निरुत्तर हुवै।

२२. राजस्थान अर उणरो जीवण-दरसण

भुजबलियां—ताकतवर। पदमणियां—पदमणी स्त्रियां। रुतबो—रौब। सिखर—चोटियां। साख—मरजादा, प्रामाणिकता। भवानी—पारवती, शक्ति री देवी। सुरसत—सरस्वती। उदात्त—श्रेष्ठ, पवित्र। ख्यातां—इतिहास सम्बन्धी वातां। वातां—कहाणियां, वारतावां। सकळाई—सामर्थ्य। मुंड—मस्तक। तिवारी—तैवार रै अवसर पर सेवा करणियां नै दियो जावण आळो धन, अनाज, भोजन आदि। दीवटियो—दीपक थामणिया, दीपाधार। दिवला—दीपक, दीया। जीवट—हिम्मत, साहस। कूकर—कुत्तो। जूण—योनि। काळी भयंकर, विकट। खोड़ा—जंगल, खोह। हिडकै—पागल। ल्याळी—भेडियो। भुंइजतो—भ्रमित, भटकतो। विस—विष जहर। धोरां—टीबो, टीलो। मगरै—पहाड़ी, पहाड़। ऊकळै—गरम हुवै। ठरै—ठंडा हुवै। आथूंणी—पश्चिम दिसा। उतराध—उत्तर दिसा। कळायण—काळी वदळी। वनड़ी—दुल्हिन, बीनणी। परकत—प्रकृति। ओपे—सोभा पावै। आटी-पाटी ले'र—करवट ले'र। दुहागण—दुरभागण। वारणा—वलैयां। मांझल—मध्य। कतारिया—ऊंटा री कतार आळा। सोरठ अर निहालदे—प्रेम कथा री नायिका। खेड़ां—भेड़ बकरियां रो झुंड। टोकर—घंटियां। झांझ—कांसे रो बण्योड़ो एक प्रकार रो वाद्य। खांप—नसल, वंश। वोखा वेवणा—तेज चाल सूं चालण आळा। सूरापण—शूरवीरता। देवळया—मन्दिर। कांकड़—जंगल, सरहद। पगल्या—किणी देव-देवी विशेष री सोना, चांदी, पत्थर या कपड़े पर वणियोड़ी चरणां री आकृति जिणरी पूजा खातर थरपणा की जावै। जुझारां—योद्धा, वीर। नुगरा—कृतघ्नी। सीव—सीमा। जामण-माता। वागो—बानो। कसूमल—लाल। कँवळी—कमल जेड़ी कोमळ। मेचनण—चानणो, प्रकास। सुकर—शुक्र। गोडां ताणी—घुटना तांई। थापणा-थापण। जाया—पत्नी, विवाहित स्त्री। चनणा—प्रेम कथा री नायिका। ना'री—शेरणी। रिचाकार—रचनाकार। रतनाकर समुद्र। लाखीणा—कीमती। निनाण—अंत, नाश, निराई। साख—फसल। निपजावै—पैदा करै। असीम—ब्रह्म। अणहद—अनाहद नाद। ईसरदास—राजस्थान

रा प्रसिद्ध भक्त अर कवि। इणां री दो रचनावां घणी प्रसिद्ध है—'हाळां झाला रा कुंडलिया' अर 'हरिरस'। पिरथीराज—राजस्थान रा नामी वीर भक्त अर कवि। अै बीकानेर रै राव कल्याणमल रा बेटा अर राजा रायसिंघ रा छोटा भाई हा। इणा री 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' राजस्थानी भाषा री सर्वश्रेष्ठ रचना है। सूरजमल—सूर्यमल्ल मिश्रण राजस्थान रा नामी वीर कवि। आपरा दो ग्रंथ घणा प्रसिद्ध है—'वीर सतसई' अर 'वंश भास्कर'। किरत्या—२७ नखतरां में सूं तीसरो नखतर। इण नखतर में छह तारा हुवै। आसव—शराब, मदिरा। पुरखां—पूरवज बडेरा। रिचा—पद्यात्मक वेद-मंत्र, स्तोत।

२३. हाडै सूरजमल री वात

रायमलोत—रायमल रो बेटो। टीकायत—राजतिलक रो अधिकारी, उत्तराधिकारी। धनाई—धनबाई, राव सूजा रै बेटे वाघा री बेटी। करमेती—कर्मवती। मया—प्रेम, कृपा। दीवाण—राणा, मेवाड़ रा राणा एकलिंगजी रा दीवाण कहीजै। सलामत—जीवत। नान्हा—छोटे। साहबी रो धणी राज्य रा स्वामी। राज बैठा—आपरे रैवता थकां, आपरै जीवण काल में। सूल—प्रबन्ध, व्यवस्था। ठौड़—स्थान। बांह झलाइये—बांह पकड़ावो, संरक्षक बणावो। कबूल—स्वीकार, मंजूर। सवारे—सवेरे, सुबह। दीवाण जुड़ियो—दरबार जुड़ियो, राजसभा जुड़ी। लोहड़ा—छोटा। पग-ठौड़—पैर रखवा री जगां, आश्रय स्थान। दूठ—प्रचंड, जबरदस्त। क्यूं—कुछ। तरै—तब। तसलीम—अभिवादन, प्रणाम, मुजरो। खोळै घाता छा—गोद में राखा हा। वैसे—बैठे। तलो—मतलब, प्रयोजन, सरोकार। वळै—फिर। डावड़ा—टाबर, बाळक। निजीक—नैड़ै निकट। सौ वरस पोंहचै—उमर पूरी हुवणी, मर जाणो। अलादी—अलग, अलहदा दूसरी। अमल—अधिकार। टीको—तिलक, राजतिलक री सामग्री। काळकियो—मर गयो, सुरगवासी हुयो। तेड़ लाव—बुला'र ले आवो। तेड़ाया—बुलाया। मोनूं दे—मुझको दे म्हनै दे। कराड़ां बारै—हद बाहर सीमा बाहर। दाव-घाव—दांव पैच, उपाय। नावजाबी—नामी, विख्यात। आखरां रो करणहार—कविता करण आळो, कवि। जजमान यजमान। गुण-गीतां गावै—गुण-वर्णन री कविता अर गीत बणा'र

सुणावै । हाल्यो—चालो, चालां । सूरां—सूअर । हाकै मेलियो—हल्लो करण खातर भेजिया, सिकार खोज'र घेरो डालण खातर मोकलिया । नाया—नी आया । आजाजीत—अजेय, अचाणचूक । वाथां हुवो—लड़ण लागो । माडां—जबर्दस्ती, बलात । रिझावियो—राजी करियो, प्रसन्न करियो । लारै—पाछै । मौज—सुख, आणद । लाख—लाखपसाव/ नाम रो दान । मतो—विचार । मुजरै—अभिवादन प्रणाम । वखाण—प्रशंसा । कुमया—अकृपा, द्वेष-वुद्धि । कासूं दीठा—कांई देख्यो । लाखपसाव—लाख रुपया रो इनाम । हद—सीव, सीमा । पूंछ झाटक—एकदम, पूंछ फटकार'र । पोहती—पहुँची । सासण—शासन, ब्राह्मण, चारणां आदि नै दियो जावण आळो भूमि या गांव रो दान जिण तर कर नी लियो जावै । पात—पात्र, कवि । सताव—वेगो; जल्दी । माजी राजमाता । विखो कर—विद्रोह कर, राज छोड'र गोक्ह्म—गोकर्ण नाम रो तीरथ स्थान जो टोडारायसिंग रै कनै है । गड़ासंघ—सीमा, सीव । खोट—दगो, द्वेष । भेळी—सामळ, साथै । साकड़ी—तंग । दिसी—जमा, रास्तो । वहतो थो—चालतो हो । झोकियो—झोक दियो, ठेल दियो । हळमळै—मीठी वातां, खुसमद । मूळां-री—किणी बडे पेड़ री खोह में । दव'र सिकार री टोह में वैठण री जगां । सासतो—प्रचड । एकत—अकेलो ई अनेकां सूं मुकाबलो करण आलो, प्रचण्ड सूअर । सामर्था—समझणी । पारको—परायो, दुसरा रो । खवास—सेवक । लोह कर—तरवार सूं वार कर । झटको—तरवार रो वार ।। तीछैर—वरछो । साथळ—जाघ पाड़ियो—पटकदियो । कूकवा—पुकार, चिल्लाहट । वाग—लगाम । जेह—सिर । झालनै—पकड़'र । सूंटी—डूंठी, नाभि । काळ-रा खाधा—काळ-कवलित, काळ रा खायोड़ा । हमैं—अब । वेहू—दोन्यूं । मूचा—मरै । दाग-दाह संस्कार । पाटण—कोटा नैड़ै केसोरायपाटण ।

२४. वचनिका राठोड रतन-री

दातार—दानशील, दान देवा आळो । मूंछा कर घाति—मूंछा पर हाथ रख'र । तोले—उठावै । आगै—पैल्या । आगम शास्त्र । उजेणि खेत—उज्जेन रै क्षेत्र मे । सोर—वारुद । गजवंध्र—गजपति राजा । छत्रवध—छत्रधारी, राजा । गुड़ती—गिरेला । भिरे चढ़ी—पूरी हुई, घटित हुई ।

दुई—दोनूं । राह- धरम । भर—भट्ट, योद्धा वीर । भ रथ युद्ध । भुजे—सहारा, भुजा । धमधज राठौड़ । मुदै—प्रमाण । अवमाण—ओमर । धारा—तलवार री धार । सानधीजै-मंगाळिजे । घ ह—प्रहार । सेलां रा धमका—भाला रा आघात । खांडा—तरवार । डंडाहडि—डण्डा रो सेत, उडिया रास । घटा—सेना घटा । झंडा—छडी । ओझड़ा—झटका । पुरजा-पुरजा—टुकड़ा-टुकड़ा । बारहठ उमराव—ओ बेणीदासोत रोहिड़ो चारण हो अर रतनसिंघ राठौड़ रै राजघराणा रो पोलपात हो । ओ धरमत रा युद्ध मे खेत र्यो । अतियात-ख्याति, आख्यान । अमर—अमर रहे, शेष रहे । साचोरा—सांचोर रे वीर । मछरीक—युद्ध स्नाही । गाहिड़-रा गाडा—घणा अभिमानी । लाड़ा—प्यारै, स्वामी । काळ्ही—बावळी । नालेर—नारियल । काल्ही रा कळस, गती रा नाळेर-बावळो सिर पर घडो ले र चालै तो अवस ही फूटै, इणी भांत सती गे नारेल भी निश्चित रूप सूं कटै । इण मुहावरा रो अरथ है—अवस मरण आळो । सादूळ—सिंह । भगवान—सादूल सावतसिंघ मेहकरणोत साचोरा चोहान रो छोटो लड़को भगवान दास, ओ धरमत रै युद्ध में लडतो हुयो काम आयो । अमर—भगवानदास रो बड़ो भाई ओ भी धरमत रे युद्ध मे काम आयो । लोपि—लाघ'र । खगद्धरा—खड्ग-धारा, तलवार री धारा । वजाड़ां—बजावांगा । पाडा—गिरावांगा । खासां—खास, प्रमुख । जाडा विकट, सघन । थंडा—समूह, फोज । आडा—सामनै । खंडा—खडग । रूक—तलवार । पियाला—प्याला । चाचरि—सिर, मस्तक । विहडस्या—काटागा । विहडायस्या—कटावांगा । विखै—बीच मे वाणासि-तलवार । टल्ला—टकराव । गिरवर गांगावत—गिरधर दास किसनदासोत गागावत राठोड. ओ भी धमरत रै युद्ध मे काम आयो । रावत—राजा । हैंवर—घोडा । कुंजर—हाथी । चंद—चन्द्रमा । जसनामो—यश । चाडा—चढ़ावांगां । साहिबो कुंमाणी—साहिब खा कुंमकरण बाधोत जेतावत राठौड । ओ धरमत रै युद्ध में काम आयो । अणी-पाणी—मान मरजादा, प्रतिष्ठा । भगवानदास वाधौत—साहिब खा रै पिता कुंभकरण वाधौत रो बड़ो भाई, उदयभान जेतावत रो बाप । सामि-कामि—स्वामी रै काम में । भजियै—भंग कर देणो, नष्ट करणो । सोचित—स्वच्छ साफ । पुन्न-रेहा—पुण्य रो

रेखा। ऊंडै-गहरे। द्रहि-सरोवर। किलकिळा-मछियां आदि पर झपटो मार र हमलो करण आळो पक्षी विशेष। वगड़ी-जोधपुर राज्य रो पैली दरजा रो ठिकाणो। जोध्राण-जोधपुर। ऊजळा-उज्ज्वळ। रासो कुंवर-रायसिंघ रतनसिंघ रो दूसरो वेटो हो, महेसदास इण रो दादो हो अी वीरता मे महेसदास जिया हो। मधुकर-महेसदास, रतनसिंघ रो पिता। जळावोल-भयंकर विकट। असि जिहाज तलवार रूपी जिहाज। किलंवा घडा-यवनां री सेना। सिभे हुइ उवरां-शभु वण'र रेवांळा. अमर हुई जावांळा। अतुलीवळ-घणा वळ आळो। त्र।डियो-दहाड़ियो, गरजियो। वाळ धमळ-वालक धवळ (सफेद वेल। वीर बालक। खंमाइची-खम्भाच राग में। कीजै-गाइजै। सीग-सिर। व्रह्मांड-आकास। घड़ा-समूह। विहाणै-सवेरे। जांगड़ियै-भाट जाति री एक शाखा विशेष रो व्यक्ति, ढेली।

संदर्भ-ग्रंथ

१. राजस्थानी सबद कोष, भाग १, २, ३ : श्री सीताराम लाळस।

२. मानक हिन्दी कोस, भाग १ से ५ : श्री रामचन्द्र वर्मा।

३. उर्दू-हिन्दी कोस : श्री रामचन्द्र वर्मा।